RNI No. : UTTHIN/2019/78487

Azim Premji Foundation

शैक्षिक प्रवाह

चतुर्मासिक, वर्ष 4, अंक 9 जनवरी–अप्रैल 2022

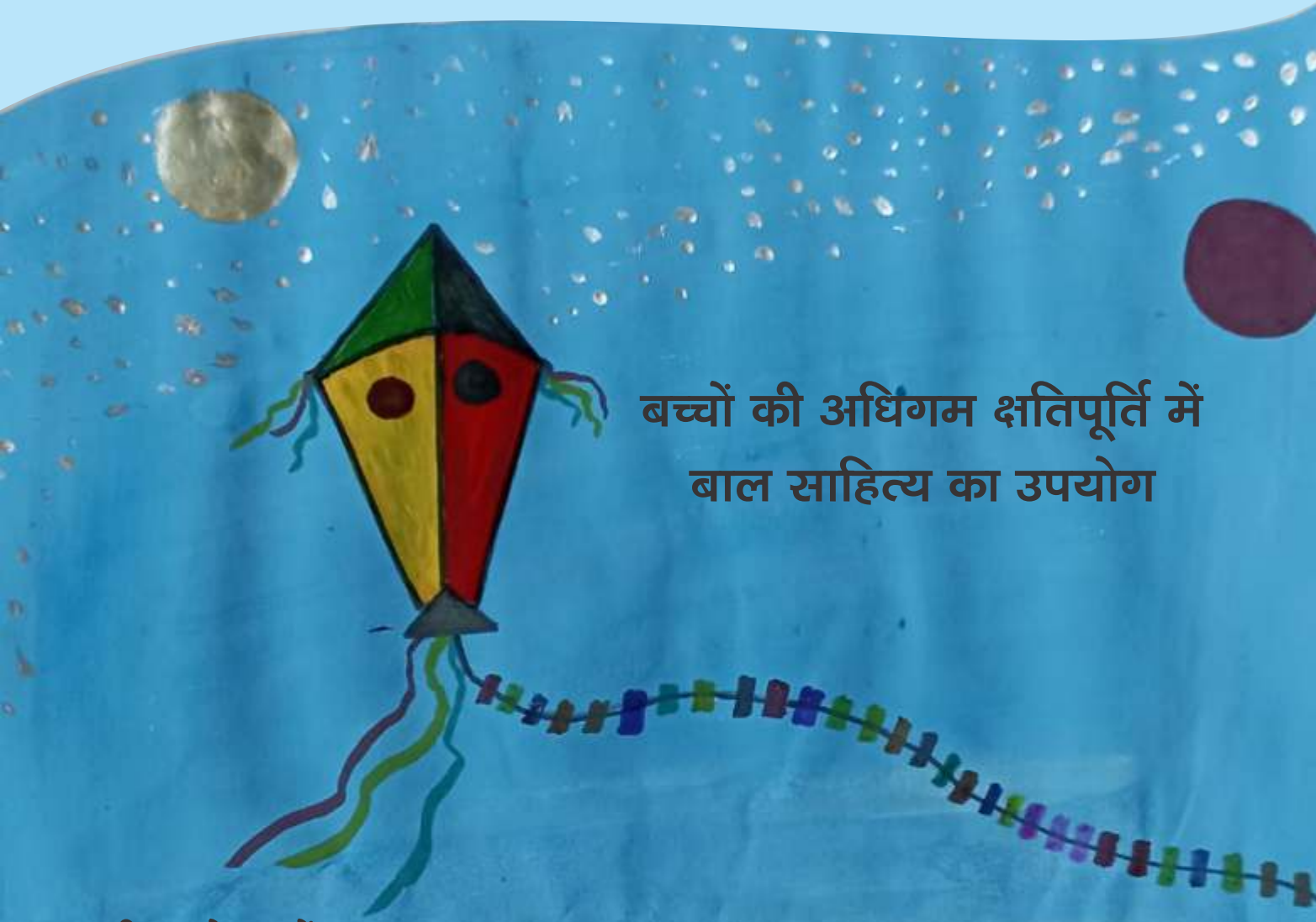

बच्चों की अधिगम क्षतिपूर्ति में बाल साहित्य का उपयोग

भीतर के पन्नों पर...

- बाल साहित्य से पढ़ना–लिखना सीखना
- कमाल करता है कहानियों का संसार
- लर्निंग लॉस को कम करने में मददगार शिक्षक सृजन

आवरण चित्र : प्रियंवद

शैक्षिक प्रवाह

Shaikshik Pravah

वर्ष 4 अंक 9, जनवरी–अप्रैल 2022

सम्पादक

कैलाश चन्द्र काण्डपाल

सह सम्पादक

प्रतिभा कटियार, उत्तराखण्ड
प्रदीप चन्द्र डिमरी, उत्तराखण्ड
अशोक कुमार मिश्र, उत्तराखण्ड

विशेष सहयोग

सिद्धार्थ जैन, मध्यप्रदेश
पुरुषोत्तम ठाकुर, छत्तीसगढ़
वीरेन्द्र शर्मा, राजस्थान

आवरण चित्र

प्रियंवद
विनोद उप्रेती

डिजाइन

बिजेन्द्र बलोनी

Azim Premji Foundation

प्रकाशक

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
134, डोडाकन्नेली, निकट विप्रो कॉरपोरेट कार्यालय,
सरजापुर रोड, बंगलौर 560035

प्रकाशन स्थल

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
खसरा नम्बर 360 (ख), तरला आमवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड
ई–मेल : pravah@azimpremjifoundation.org

मुद्रक तथा प्रकाशक प्रदीप चन्द्र डिमरी द्वारा अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट, खसरा नम्बर 360 (ख), आमवाला तरला, देहरादून–248001 उत्तराखण्ड की ओर से प्रकाशित एवं शब्द संस्कृति प्रकाशन प्रा.लि., 117 चुक्खूवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड द्वारा मुद्रित।
सम्पादक : कैलाश चन्द्र काण्डपाल

पत्रिका में छपे लेखों में व्यक्त विचार और मत लेखकों के अपने हैं। अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का शैक्षणिक और गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए उपयोग किया जा सकता है लेकिन इसके लिए लेखक एवं प्रकाशक से अनुमति लेना एवं स्रोत का उल्लेख अनिवार्य है।

विषय सूची

1.	सम्पादकीय	*कैलाश चन्द्र काण्डपाल*	4
2.	आपकी बात		5
3.	बाल साहित्य से पढ़ना-लिखना सीखना	*पारुल बत्रा*	11
4.	कमाल करता है कहानियों का संसार	*नरेश चन्द्र*	16
5.	लर्निंग लॉस को कम करने में मददगार	*अवनीश मिश्र*	19
6.	किस्सा पोटली वाला	*उषा पन्त*	23
7.	बाल साहित्य देता है बातचीत के अवसर	*साहबउद्दीन अंसारी*	24
8.	मन रम जाये किस्सों की दुनिया में	*योगेश राज*	27
9.	पुस्तकालयों की भूमिका का महत्व	*कमलेश चन्द्र जोशी*	30
10.	आओ किताबों से दोस्ती करें	*प्रतिभा सिंह*	34
11.	कहानियों द्वारा अधिगम की क्षतिपूर्ति है संभव	*वर्तुल ढ़ौंडियाल*	36
12.	जंगल का राजा शेर ही क्यों	*आलोक सिंह*	39
13.	कहानियों का संसार संभावनाएं अपार	*हेमवती चौहान*	41
14.	लगन	*मनोहर चमोली 'मनु'*	43
15.	खिल उठते हैं बच्चे	*धर्मपाल गंगवार*	45
16.	कहानियां जो बच्चे के जीवन से जुड़ें	*रेनू उपाध्याय*	48
17.	मन को संभालता है बाल साहित्य	*खजान सिंह*	49
18.	वीर राजा जो गणित से हार गया	*मंजरी शुक्ला*	52
19.	ऑनलाइन शिक्षण- कैसे लगे मन	*डॉ. संगीता बिल्लौरे*	55
20.	ताकि कल्पना को पंख मिलें	*मीनाक्षी चौहान*	57
21.	किस्से कहानियों का संग	*अनुपमा तिवाड़ी*	60
22.	टुनटुनी चिड़िया	*प्रियंवद*	62
23.	हिन्दी हैं हम	*स्वाती कश्यप*	64
24.	आजाद चिड़िया	*वंदना टमटा*	67
25.	लिखी जा रही है 'मम्मी जब बच्ची थीं'	*डॉ. रुचि श्री*	68
26.	लर्निंग गैप को भरने के रचनात्मक प्रयास	*बिपिन जोशी*	70

अधिगम क्षतिपूर्ति में बाल साहित्य की भूमिका

साथियो, सादर अभिवादन!

'शैक्षिक प्रवाह' के इस संस्करण में स्कूली शिक्षा में बाल साहित्य की भूमिका पर विमर्श है। दरअसल, औपचारिक शिक्षा में बाल साहित्य की महत्ता पर किसी प्रकार का प्रश्न नहीं उठता है लेकिन वर्तमान सन्दर्भ में इसके बारे में चिंतन व इसकी ओर विशेष प्रयास और अधिक महत्वपूर्ण हैं। हमने पिछले अंकों में भी कोरोना महामारी के कारण हुई अधिगम की क्षति पर बात की है। यह एक गम्भीर विषय है इसलिये इसमें चिंतन व बहस अनिवार्य है। विद्यालयी शिक्षा सत्र 2019–20 से 2021–22 तक समय–समय पर बाधित रही है। हमने इस बात को भी रेखांकित किया है कि इस बाधा में कुछ प्रयास ऑनलाईन माध्यम से किये गये लेकिन सरकारी स्कूली व्यवस्था में यह अपर्याप्त रही क्योंकि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के पास ऑनलाईन शिक्षा के लिये आवश्यक बुनियादी उपकरणों का अभाव था। यह बात भी दीगर है कि किसी भी प्रकार ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था स्कूली शिक्षा व्यवस्था का पर्याय नहीं हो सकती।

यदि शिक्षा में आयी इस बाधा को साधारण रूप में समझने का प्रयास करें तो यह इस प्रकार का रहेगा कि सत्र 2019–20 में जो बच्चा कक्षा 3 में था वह सत्र 2022–23 में कक्षा 6 में आ जायेगा। आज की स्थिति यह है कि वह बच्चा कक्षा 3 का भूल चुका है कक्षा 4 उसने ठीक से पढ़ी नहीं और कक्षा 5 आंशिक रूप से पढ़ी। यदि हमने उसके लिये कुछ सोचा नहीं तो सत्र 2022–23 उसके लिये भयावह साबित होगी। इस बात के कई उदाहरण हैं कि जब औपचारिक शिक्षा बोझिल होती है तो बच्चे उसे छोड़ देते हैं और यह बात सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के परिप्रेक्ष्य में ज्यादा देखने को मिलती है क्योंकि इन बच्चों की आर्थिक स्थिति के कारण यह बात उनके लिये अधिक संवेदनशील है।

बात सिर्फ इतनी नहीं है। इसके अलावा औपचारिक शिक्षा में सीखने का एक प्रवाह होता है जो कि कक्षा दर कक्षा आगे बढ़ता है। उदाहरण के लिये कोई बच्चा गणित विषय में जोड़ना सीख रहा होता है तो प्राथमिक स्तर में शुरुआत से उसे इसके कई स्तरों से गुजरना होता है। आज के परिप्रेक्ष्य में अधिगम में हुई क्षति को ध्यान में रखने की जरूरत है। इस बात की स्पष्टता होनी जरूरी है कि सत्र 2022–23 को हम एक पारंपरिक सत्र की तरह मानकर न चलें। इस सत्र के स्पष्ट रूप से दो उद्देश्य हमें लेने पड़ेंगे। पहला हमें बच्चे के पिछले सत्रों के अधिगम की क्षति की भरपाई और सत्र 2022–23 वाली कक्षा का अधिगम देना। यह तभी हो पायेगा जब हम सत्र 2022–23 में इन सभी कक्षाओं के अनिवार्य सीखने के प्रतिफलों के आधार पर बच्चे के साथ काम करें।

औपचारिक स्कूली शिक्षा में आधारभूत साक्षरता का एक महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः यह एक प्रक्रिया है जो कि औपचारिक शिक्षा को आगे बढ़ाती है क्योंकि भाषा सभी विषयों में समझ विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। बच्चों में आधारभूत साक्षरता उन्हें औपचारिक शिक्षा में सफल बनाती है क्योंकि भाषा न मात्र विभिन्न विषयों के ज्ञान के लिये आवश्यक है बल्कि बच्चे में विभिन्न कौशल यानी समझ और विचारों के विश्लेषण और संश्लेषण में मदद करती है। इसमें बाल साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

'शैक्षिक प्रवाह' के इस अंक में हमने बाल साहित्य की भूमिका पर बात की है। आज की परिस्थिति में जबकि बच्चे औपचारिक शिक्षा से बाहर रहे और उनके पास पढ़ने व लिखने के अपर्याप्त अवसर रहे, ऐसे में हमें बच्चों को ऐसे मौके देने होंगे कि वे उनके लिये सुलभ और सुरुचिपूर्ण हों और हमें इस बात को स्वीकार कर लेना चाहिये कि पाठ्य पुस्तकें इन मानकों पर खरी नहीं उतरती हैं इसलिये बेहतर बाल साहित्य ही एक विकल्प है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में आधारभूत साक्षरता पर समयबद्ध कार्यक्रम की अवधारणा तथा अन्य कार्यक्रम यथा 100 दिन का रीडिंग कैम्पेन आदि कार्यक्रम भी तभी सफल हो पायेंगे जब बाल साहित्य का इसमें सोचा समझा समावेश हो क्योंकि भाषा पर पकड़ बनाने के लिये बच्चे को ऐसा साहित्य देना पड़ेगा जो कि उसके लिये रुचिपूर्ण हो और यह तभी सम्भव है जब हम उसे बाल साहित्य की दुनिया में ले जायेंगे। हमें इस बात की स्पष्टता होनी होगी कि सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों के व्यक्तिगत जीवन में इस तरह के मौके अक्सर नहीं होते। 'शैक्षिक प्रवाह' का फलक अब बढ़ चला है। अब यह एक या दो राज्यों तक सीमित नहीं रही। हमें प्रसन्नता होती है जब हमारे पास विभिन्न राज्यों से पत्रिका के बारे में प्रतिक्रियायें आती है। दरअसल, किसी भी पत्रिका का संबल उसके पाठक होते हैं। हमेशा की तरह आपसे अपेक्षा रहेगी कि आप अपने अमूल्य सुझाव हमें देते रहेंगे ताकि हम बेहतर इस पत्रिका के माध्यम से आपको बेहतर लेख उपलब्ध कराते रहें।

आपका साथी

कैलाश चन्द्र काण्डपाल

आपकी बात...

इस बार विशिष्ट लगी

मैंने 'शैक्षिक प्रवाह' पत्रिका का संयुक्तांक पढ़ा। वैसे तो पहले भी एक दो बार ऑनलाइन के माध्यम से मैं इसको पढ़ चुकी हूं। हर बार कुछ करने की प्रेरणा देती यह पत्रिका इस बार सबसे विशिष्ट लगी। क्योंकि कोरोना काल में जहां सभी लोग ये नहीं समझ पा रहे थे कि अपने–अपने काम को किस प्रकार से आगे बढ़ायें, वहीं हमारे लिये यानि शिक्षकों के लिए भी यह सबसे बड़ी चुनौती थी। क्योंकि हमें बच्चों के साथ मिलकर काम करना था, राह आसान नहीं थी। 'शैक्षिक प्रवाह' में जिस तरह के विषय जैसे– मोहल्ला कक्षाओं का पहला अनुभव, कठिन समय में रास्ते की तलाश, नया सा अनुभव था ऑनलाइन क्लास, ये सभी विषय हम सबके अपने से लगे। यही सब हमने अनुभव किया। इसके अलावा अनुभवों से जोड़कर भाषा शिक्षण, 'चित्रों के माध्यम से पढ़ना–लिखना'', 'भाषा समृद्ध वातावरण' 'सीखने– सिखाने की कुंजी' आदि विषय भी बहुत अच्छे लगे। इसके अलावा गणित के विषय भी अच्छे थे, जहां आसानी से स्थानीय मान, भिन्न गणितीकरण आदि बतायेंगे। आपकी पूरी टीम को बधाई व शुभकामनाएं, आने वाले समय में भी इसी प्रकार हमें आगे इस पत्रिका के अंक पढ़ने को मिलते रहेंगे। ऐसी आशा करती हूं।

– अरुण गौतम

राजकीय प्राथमिक विद्यालय गाडोवाली, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

शिक्षकों के प्रयासों का रेखांकन

'शैक्षिक प्रवाह' का यह अंक शिक्षक के प्रयासों का रेखांकन करता है। इसमें पहले भाग में कोविड–19 के दौरान मोहल्ला कक्षाओं के लिए शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयासों की जानकारी है। किस तरह से कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं में भाषा, गणित जैसे बुनियादी विषय की अवधारणाओं की योजनाबद्ध तरीके से तैयारी की जा सकती है। कठिन परिस्थितियों में भी किस तरह से रास्ते तलाशे जा सकते हैं।

आशा का यह संचरण ही हमें कुछ नया करने को प्रेरित करता है। यह अंक मुझे तो लगता है शिक्षक और शिक्षण की चुनौतियों का समेकन करते हुए, बच्चों की पढ़ाई–लिखाई को जारी रखने की जद्दोजहद को कैसे सुगम और सरल बनाया जा सकता है इसे समझने में मदद करता है। यह बात मोहल्ला कक्षाएं स्तंभ में 'पढ़ने की बात भर से खुश होते हैं बच्चे' से भी पुष्ट होती है। इन बातों को मैंने अपने कक्षा शिक्षण के दौरान बहुत करीब से देखा है। मोहल्ला कक्षाओं में भी बच्चों को यह इंतजार होता है कि मैम आप कब आओगी? यह बेसब्री कहीं न कहीं उनकी पढ़ने की दृढ़ इच्छाशक्ति और आनंद को दर्शाती है।

द्वितीय भाग में शिक्षक सेमिनार के बारे में लिखा गया है जिसमें गणित और भाषा शिक्षण हेतु अनेक अनुभवों को विभिन्न गतिविधियों के साथ संजोया गया है जो विभिन्न अवधारणाओं को समझने–समझाने में उपयोगी हैं। इसमें पढ़ना–लिखना सीखने के लिए कविता का उपयोग तुकबंदी के रूप में करने से शिक्षण अधिक रोचक और प्रभावी हो जाता है। इस गतिविधि को एक नवीन गतिविधि के रूप में मैं जान पाई कि किस तरह से तुकबंदी में बात के द्वारा भी सृजन हो सकता है। 'उम्मीद जगाते शिक्षक' स्तंभ के द्वारा एक शिक्षक के छोटे–छोटे प्रयास से किस तरह एक बदलाव हो सकता है यह देखने को मिलता है। इसे पढ़कर तो ऐसा लगा जैसे मैं यहां स्वयं खड़ी हूं। कुल मिलाकर 'शैक्षिक प्रवाह' का यह अंक शिक्षा के प्रवाह को जारी रखने में सफल तो है ही, साथ ही आनंददायी एवं सुगम शिक्षण हेतु शिक्षकों के लिए एक बेहतर सहायक सामग्री की तरह भी है।

– डॉ. संगीता गुप्ता

राजकीय प्राथमिक विद्यालय पंडरी, सितारगंज, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

उपयोगी अंक

शैक्षिक प्रवाह का संयुक्तांक दिसंबर 2021 शैक्षिक अनुसंधान की दिशा में मील का पत्थर परिलक्षित हुआ है। यद्यपि कोरोना काल में सभी मानवीय गतिविधियों, कार्य–व्यापारों को क्षति हुई है परंतु शिक्षा के क्षेत्र में होने वाली यह कृति समाज को ऐसे स्थान पर लाती है जिसकी पूर्ति पूरी तरह से कर पाना अभिभावकों व शिक्षकों में से किसी के लिए भी संभव नहीं होता। परंतु पत्रिका में विभिन्न लेखों के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में की

जा सकने वाले नवाचारों को प्रदर्शित किया गया है पत्रिका ने जहां एक ओर लॉकडाउन व सोशल डिस्टेंसिंग जैसे समय में शिक्षा के नवीन आयामों यथा ऑनलाइन शिक्षा, मोहल्ला शिक्षा से परिचय करवाया है वहीं बच्चों के अनुभवों को भी भली–भांति सहेजा है। पत्रिका में विषयों को पढ़ाने, गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को मुख्यधारा में लाने का प्रयास अत्यंत सराहनीय है जिसके लिए सभी रचनाकार व संपादक महोदय हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

– रेनू शर्मा

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय केशवदासपुरा, सांगानेर, जयपुर

तस्वीर बदलेगी

शिक्षक का कार्य देश निर्माण या सभ्य नागरिक बनाने जैसा महत्वपूर्ण है। परन्तु कई बार मैंने ऐसा महसूस किया है कि शिक्षक के पास जितना ज्ञान है वो उस ज्ञान को अपने विद्यार्थियों में तक पहुंचा नहीं पाते हैं। कुछ दिनों पूर्व मुझे एक विद्यालय जाने का मौका मिला वहां जाकर मैंने देखा कि अंग्रेजी पाठों का शिक्षक ही वाचन कर रहे हैं चूंकि उस विद्यालय में कुछ बच्चे ऐसे थे कि यदि उनको प्रोत्साहन मिलता तो वे स्वयं भी पाठ का वाचन करते और उनको देखकर कुछ बच्चों में उत्साह का संचार होता। साथ ही अध्यापक कार्य भी सरल और बाल केन्द्रित शिक्षा होती। परन्तु उन अध्यापक को देखकर महसूस हुआ कि उन्होंने अपना ज्ञान का प्रदर्शन किया न कि स्वयं के ज्ञान को बच्चों में प्रत्यारोपित किया। शायद हमारे सरकारी विभाग, सिर्फ इतनी बातों को समझाने के लिए करोड़ों रुपयों का धन व्यय कर रही है। हजारों योजनायें चला रही हैं परन्तु मुझे पता नहीं ऐसा लग रहा है कि इन योजनाओं को जमीनी स्तर पर उतारना उसमें सफलता पाने के लिए सिर्फ शिक्षकों को ज्ञान को प्रत्यारोपित करने हेतु जोर दिया जाए। शायद हम भटक रहे हैं क्योंकि कई शिक्षकों से जब मेरी बात होती है तो वे बस कागजी कार्यवाही पर यकीन करते दिखते हैं। इसका कारण भी शायद यह हो सकता है कि कई अधिकारी सिर्फ रजिस्टरों का मुआयना करते हैं पर यह तो तस्वीर भी बदलेगी मेरा ऐसा विश्वास है।

– अंजू

झोटवाड़ा, जयपुर, राजस्थान

पत्रिका ने मुझे सिखाया

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन में कार्यरत साथियों द्वारा समय–समय पर शीतकालीन व ग्रीष्मकालीन शैक्षणिक कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। वहां पर 'शैक्षिक प्रवाह' नामक पत्रिका शिक्षक साथियों को पढ़ने को दी जाती है। मेरे द्वारा जब इस पत्रिका को पढ़ा गया तो मुझे शिक्षा जगत में कार्यरत विभिन्न शिक्षक साथियों के शिक्षण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण अनुभवों की जानकारी प्राप्त हुई। इन महत्वपूर्ण अनुभवों से मुझे बच्चों के साथ मधुर व्यवहार करना, सबका सम्मान करना, बच्चों से कुछ सीखने तथा बच्चों के साथ अधिक तल्लीनता से कार्य करने में मदद मिली। अतः यह पत्रिका शिक्षकों को शिक्षण कार्य में सहयोग करने में कारगर हो सकती है।

– मुन्नी राणा

राजकीय प्राथमिक विद्यालय खर्ककार्की, चम्पावत, उत्तराखण्ड

महत्वपूर्ण पत्रिका

'शैक्षिक प्रवाह' पत्रिका का मैं अक्सर अध्ययन करता रहता हूं। जिसमें कई अच्छे व ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने को मिलते हैं। जिसमें हमें अपने अध्ययन कार्य में भी काफी मदद मिलती है। यह पत्रिका शिक्षा से जुड़े लोगों के लिए बहुत उपयोगी है। सभी अध्ययन से जुड़े लोगों को यह पत्रिका हमेशा पढ़नी चाहिए, जिसमें हमें अनेकों का अनुभव प्राप्त होता है और अधिक सीखने का अवसर प्राप्त होता है। जो हम अपने विद्यालय में प्रयोग कर सकते हैं। अंत में मैं यही कहूंगा कि प्रवाह पत्रिका का उपयोग हमारे अध्ययन से जुड़े साथियों के लिए महत्वपूर्ण है। मैं इस पत्रिका की सफलता की कामना करता हूं।

– मदन सिंह

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, तरकुली चम्पावत, उत्तराखण्ड

कक्षा कक्ष के अनुभव हैं लेखों में

'शैक्षिक प्रवाह' के संयुक्तांक के दो लेख पढ़े। मैंने देखा कि प्रवाह का पहला हिस्सा लॉकडाउन से जुड़े अनुभव जो कि मोहल्ला क्लास को लेकर हैं और दूसरे हिस्से में गणित और भाषा से जुड़ी गतिविधियों के द्वारा लिखने–पढ़ने की प्रक्रिया को साझा किया गया है।

पहला आर्टिकल जो मैंने पढ़ा वह है स्नेहल तानपुरे द्वारा लिखा लेख 'यह दौर भी खत्म हो जायेगा'। इस लेख में बच्चों के परिवेश को लेकर बात हुई जहां जाति आधारित भेदभाव को लेकर बात हुई और कैसे यह सारे चीजें आज भी समाज में दिखती हैं। कक्षा–कक्ष में पढ़ने–लिखने के साथ बच्चे किस परिवेश से आते हैं और उनकी क्या चुनौतियां हैं उन पर एक शिक्षक की समझ होना कितना महत्वपूर्ण है उनके बारे में लिखा गया है। इस लेख में

लॉकडाउन में मोहल्ला क्लास को लेकर भी बात हुई है। उनमें से एक था प्रिंट रिच एनवायरमेंट के ऊपर और उनके प्रति बच्चों का व्यवहार। कक्षा में एक तरफ वे बच्चे थे जो अपने बनाये हुए चित्रों को दीवार पर लगाने के लिए उत्सुक और खुश थे, दूसरी तरफ एक बच्चा था जिसने उन सारे चित्रों को फाड़ दिया था। लेखिका ने फिर बताया कि उस बच्चे से बात करके पता चला कि उनके घर का माहौल ऐसा था जो बच्चे के व्यवहार में दिख रहा था। उस बच्चे के साथ बातचीत जब हुई, तब बच्चे ने कभी भी ऐसा काम और नहीं किया। इसमें एक बात उभरकर आई कि'बच्चों के साथ बातचीत' करना एक शिक्षक के लिया कितना महत्वपूर्ण होता है। जब हम बच्चों को समझते हैं और उनको मौका देते हैं बात करने के लिये तब हम बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक स्वस्थ को समझ पाते हैं।

दूसरा लेख जो मैंने पढ़ा वो था – 'स्थानीय मान, मेरी कक्षा और मेरा सफ़र' सुमन सोनी एवं शिवा दीप भट्ट द्वारा लिखा गया जो कि गणित शिक्षण से जुड़ा है। इस लेख में मुझे बच्चों के सीखने–सिखाने को लेकर स्थानीय मान को कैसे सिखाना है उसकी पूरी प्रक्रिया दी गयी है। यहां पर बच्चों के सीखने की जरूरत को समझने से लेकर उनके किस तरह उन जरूरतों पर काम किया जा सकता है को लेकर जाये तक पूरा ब्योरा मिलता है। शिक्षक ने यह भी साझा किया कि यह पूरी प्रक्रिया स्थानीय मान को लेकर कक्षा में काम करती है कि नहीं करती। लेख में अंतिम में एक बच्चे ने खुद से बनाये प्रश्न का भी उदाहरण साझा किया, जो मुझे बहुत अच्छा लगा कि बच्चे खुद से प्रश्न बना पा रहे थे जो कि एक तरह से सीखने के उच्च कौशलों की तरफ बढ़ने का मौका देता है।

– रिहा हजारिका
अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन विकासनगर, देहरादून, उत्तराखंड

अंधेरे में रोशनी की किरण सा प्रवाह का अंक

कोरोना महामारी के कारण पिछले दो सत्र सीखने–सिखाने की दृष्टि से बहुत ही चुनौतीपूर्ण रहे। जिसने हमें कई साल पीछे धकेल दिया। प्रवाह के माध्यम से अलग–अलग स्थानों पर इस महामारी के दौर में किये गए प्रयासों को जानने का अवसर मिला। ये प्रयास विपरीत परिस्थितियों में भी अपने काम को करने की निरंतरता हेतु प्रेरित करते हैं। विद्यालय की चारदीवारी के बाहर सीखने और सिखाने के प्रयास उम्मीद जगाते हैं। 'कठिन समय में रास्तों की तलाश' और 'यह दौर भी खत्म हो जायेगा' जैसे लेख सकारात्मकता की राह दिखाते हैं। साथ ही इन कठिन परिस्थितियों में सीमित संसाधनों में गणित और भाषा में शिक्षकों द्वारा किये गये अनुप्रयोग कक्षा कक्ष में भी प्रयोग किये जाने योग्य हैं। निश्चित ही शैक्षिक प्रवाह का यह अंक शिक्षकों और बच्चों को नई राह दिखाता है।

– कुलदीप शर्मा
अज़ीम प्रेमजी स्कूल टोंक, राजस्थान

सीखने की प्रयोगशाला

मैंने 'शैक्षिक प्रवाह' पत्रिका का 'सिल्वर जुबली' अंक जब पढ़ा तो लगा कि सीखने की प्रक्रिया को कितनी विविध दृष्टियों से समझा जा सकता है। समझना आरंभ यहां से होता है कि 'हर बच्चे को देना समझ का चस्का' इस लेख ने एक समझ तो दी साथ ही प्रोफ़ेसर यशपाल से जुड़ी कुछ यादें भी ताज़ा हो गयीं जिनसे मिलने का मौका मुझे अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में मिला।

इस अंक दूसरा लेख 'पहाड़ से थार तक का सफ़र'। इस लेख को पढ़ने की उत्सुकता ज्यादा थी कि पहाड़ और थार का क्या संबंध होगा। हमारे देश में इतनी विविधता है परंतु थार और पहाड़ के बच्चे दोनों ही इससे अनभिज्ञ हैं। यह लेख हमें दोनों अलग–अलग भौगोलिक अंतर रखने वाले क्षेत्र से जोड़ता है। इसके द्वारा बाड़मेर के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। वहां की संस्कृति, परिस्थितियां, शिक्षण व्यवस्था, शिक्षा के प्रति रुझान तथा स्कूल की दूरी आदि बहुत कुछ जानने और वहां की परिस्थितियों को समझने का मौका इस लेख के माध्यम से मिला।

यदि 'शैक्षिक प्रवाह' के सभी लेखों की बात की जाए तो सभी लेख यथार्थपरक हैं, जिसमें सभी के ज़मीनी अनुभवों को स्थान दिया गया है। 'शैक्षिक प्रवाह' किसी प्रकार की सीमाओं से बंधी दिखाई नहीं देती इसीलिए पत्रिका और भी रोचक और सोचने पर मजबूर करने वाली है। मैं यदि अन्य लेखों की बात करूं तब उनमें से 'सीखना यह है कि क्या नहीं सीखना है' 'सीखने में शामिल होता है रोटी और सम्मान', सीख रहीं हूं हर दिन किसी से' आदि ऐसे लेख हैं जिनको पढ़कर यह समझ आता है कि लेख अपने आस–पास के वातावरण से कितने जुड़े हुए हैं। यह सभी लेख अध्ययन और सीखने के व्यवहार की पूर्णता को दर्शाते हैं। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह कि सैद्धांतिकता से दूर व्यवहारिकता की

दृष्टि का अनुप्रयोग दिखाई पड़ता है। यह सभी लेख शैक्षणिक परिसर में सीखने की प्रयोगशाला के रूप में उपस्थित नज़र आते हैं।

– प्रतिभा भारद्वाज

अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, ऋषिकेश, उत्तराखंड

प्रशंसनीय, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादाई

मैंने अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित शैक्षिक प्रवाह पत्रिका का संयुक्तांक अप्रैल से दिसम्बर 2021 पढ़ा। इसमें लिखे गए अधिकतर आलेख। मुझे बहुत अच्छे मजेदार, रोचक व ज्ञानवर्धक लगे। वास्तव में प्रवाह पत्रिका में कोरोना काल में शिक्षकों के अनुभवों, उनके द्वारा किए गए कठिन और सफल प्रयासों, मोहल्ला कक्षाएं लगाकर बच्चों से जुड़कर उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान का प्रवाह मिलता है।

लॉकडाउन के कारण शिक्षकों द्वारा चलाए गए मोहल्ला कक्षाओं के सभी लेख मैंने पढ़े। सभी आलेखों में शिक्षकों द्वारा बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखना और बच्चों के साथ पढ़ाई की बनी श्रृंखला को बनाए रखने के लिए किए गए प्रयास बहुत ही प्रशंसनीय सराहनीय और अत्यन्त प्रेरणादायी लगे। बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में सीखने–सिखाने व बच्चे की शैक्षिक प्रगति के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के किए गए अनवरत प्रयास वाले लेख पढ़कर लगा कि फाउंडेशन ने भी बच्चों को इस विकट परिस्थिति में पढ़ने–लिखने से जोड़े रखने के लिए लगातार प्रयास किए।

कोरोना महामारी के कारण स्कूलों के लम्बे समय तक बंद होने के कारण हम सबको, बच्चों की पढ़ाई से जोड़े रखने की बहुत अधिक चिन्ता होने लगी थी। स्कूल के सभी बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा से न जोड़े पाने के कारण काफी चिन्तित थे। चिन्ता उन बच्चों की थी जिनके पास ऑनलाइन शिक्षा के कोई साधन नहीं थे। अतः इन बच्चों के लिए शिक्षकों द्वारा मोहल्ले–मोहल्ले में जाकर चलाई गई मोहल्ला कक्षाएं एक बहुत अच्छा बेहतर विकल्प साबित हुई। फैज़ का लिखा आलेख 'मोहल्ला कक्षाओं ने सहेजी सीखने की ललक' पल्लवी जैन का लेख 'पढ़ने की बात से खुश होते थे बच्चे' पढ़कर लगा कि शिक्षकों और फाउंडेशन के सदस्यों/शिक्षकों ने बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने व बच्चों से जुड़ाव के लिए नये–नये साधनों और उपायों पर शानदार कार्य किया।

पत्रिका में शिक्षक सेमिनार गणित तथा शिक्षक सेमिनार भाषा के सन्दर्भ में दिए। लिखे गए लेखों में बहुत अच्छी ज्ञानवर्धक जानकारी है जो बच्चों के लिए बहुत अधिक उपयोगी है। डॉ. ममगाईं का लेख 'नया सा अनुभव था ऑनलाइन शिक्षण' ओर सरोज गुप्ता का लेख मोहल्ला कक्षाओं का पहला अनुभव पढ़ा। शिक्षकों के इस चुनौतीपूर्ण कार्य ने दिखाया 'जहां चाह वहां राह है'। भाषा सेमिनार में भाषा के सम्बन्ध में अनुपमा भट्ट के लिखे लेख 'कविताओं के रंग में रंगी भाषा कक्षा'' पढ़ा जो अत्यन्त रोचक व ज्ञानवर्धक था।

राजेन्द्र कापड़ी का 'कठिन नहीं लगती, गणित' पर दी गई विस्तृत बेहतर ज्ञानवर्धक जानकारी, गणित से जुड़ी विविध गतिविधियां बच्चों के लिए बहुत ही रोचक है। वास्तव में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका बच्चों व शिक्षकों के लिए बहुत उपयोगी है। फाउंडेशन द्वारा बच्चों को सीखने–सिखाने के लिए किए जा रहे प्रयास अत्यन्त सराहनीय है।

– विनोद प्रसाद नौटियाल

राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय, ढालवाला, टिहरी गढ़वाल

कक्षा–शिक्षण की ओर बढ़ता 'शैक्षिक प्रवाह'

'शैक्षिक प्रवाह' का संयुक्तांक पढ़कर कक्षा–शिक्षण की अनेक बातों से खुद को समृद्ध होते हुए पाया। यह पत्रिका लम्बी यात्रा और आवश्यक बदलावों के साथ अब नए पड़ाव पर पहुंच चुकी है। अब इसमें शिक्षकों की बातें, शिक्षकों की लेखनी में बड़े फलक तक पहुंच रही हैं जबकि एक समय इसमें वैचारिक व सैद्धांतिक आलेख बहुतायत में होते थे यद्यपि उनका भी अपना महत्व था। अब इसमें प्रत्यक्ष कक्षा–शिक्षण के अनुभव व सफल प्रयोग, शिक्षकों के ही शब्दों में पढ़ने को मिल रहे हैं। एक तरह से अवधारणाएं व सिद्धांत, टीचिंग प्रैक्टिस और शिक्षणशास्त्रीय बातों का समावेश देखा जा सकता है।

इस अंक को जो कि कोविड–19 में शिक्षकों के प्रयासों पर केन्द्रित है, मुख्यतः दो भागों में बांटा गया है। पहले भाग में कोराना काल में शिक्षकों द्वारा बच्चों के शिक्षण हेतु किए गए प्रयासों को संजोया गया है तथा दूसरे भाग में विभिन्न सेमिनारों से कक्षा–शिक्षण हेतु तैयार की गयी अधिगम सामग्री देखी जा सकती है। इससे यह समझा जा सकता है कि शिक्षक साथियों ने न केवल बच्चों के साथ शिक्षण प्रक्रियाओं को जारी रखा बल्कि खुद के क्षमता संवर्द्धन के लिए सेमिनार जैसे विभिन्न ऑनलाईन मंचों का भी लाभ उठाया। भाषा, गणित से जुड़े सेमिनारों में जुड़कर ऐसी अनेकों वर्कशीट्स बनायी जो शिक्षण में न

केवल उस दौरान उपयोग में लायी जा सकीं बल्कि आज भी प्रभावी हैं। ऑनलाईन शिक्षण, जिसे डिजिटल कहना अधिक उचित होगा, ने शिक्षण के अभाव को एक सीमा तक दूर किया है लेकिन इसे प्रत्यक्ष शिक्षण का विकल्प नहीं कहा जा सकता है। हजारों शिक्षकों ने अपने–अपने स्तर से डिजिटली अधिगम सामग्री का निर्माण व संकलन तथा अधिगम प्रक्रियाओं को जारी रखा है। बच्चों को पढ़ने–लिखने से जोड़े रखने और माहामारी से उपजी नीरसता को कम करने के लिए हर संभव कोशिश की। यह तमाम प्रयास सीखने–सिखाने से अधिक जीने का साहस देने जुटाने के लिए भी थे।

आवश्यकता हमें बदलने के लिए बाध्य करती है। शिक्षण में आई.सी.टी. जिसे अब ऑनलाईन टीचिंग व डिजिटल लर्निंग कहा जा रहा है के प्रयोग की तैयारी दो दशकों से करते आ रहे हैं लेकिन वास्तव में इसका उपयोग बहुत कम देखने को मिलता था। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत आईसीटी को बढ़ावा देने के लिए हर वर्ष विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाये जाते रहे हैं। इस महामारी ने अचानक इसके प्रयोग को शिक्षण का पहला और अंतिम विकल्प बना दिया। कुल मिलाकर शैक्षिक प्रवाह का यह अंक को कोराना काल में किए गए प्रयासों के एक संकलन के रूप में हमेशा एक संदर्भ सामग्री के रूप में भी काम आता रहेगा।

– संजीव बिजल्वाण

अज़ीम प्रेमी फाउंडेशन, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

मासिक होनी चाहिए पत्रिका

'शैक्षिक प्रवाह' का संयुक्तांक अपने आप में बहुत सारी खूबियों को समेटे हुए है। बेहद सुंदर व आकर्षक कवर पेज है जिसमें कोरोना काल में शिक्षकों के प्रयास अर्थात हमारे अपने प्रयास जिन्हें अज़ीम प्रेमजी फाउन्डेशन ने न सिर्फ समझा अपितु प्रोत्साहित भी किया। 'आसान नहीं होगी त्रासदी की भरपाई' सम्पादकीय में कही गयी सारी बातें सत्य प्रतीत हो रही हैं क्योंकि अब बच्चे विद्यालय आने लगे हैं और उनमें हुआ लर्निंग लॉस भी हमें स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है।

'शैक्षिक प्रवाह' के सभी लेख सारगर्भित हैं। मोहल्ला कक्षाओं में 'अरे यह तो खेल है', तथा 'यह दौर भी खत्म हो जायेगा' ने प्रभावित किया। शिक्षक सेमिनार में गणित, भाषा शिक्षण को रोचक तरीकों यथा कविता, कहानी खेल आदि के माध्यम से शिक्षण की जानकारी मिली जिससे हम अपनी कक्षाओं में न सिर्फ प्रभावी शिक्षण कर सकते हैं, अपितु सीखने के प्रतिफलों को भी पूरा कर सकते हैं। संगीता चमोली जी के छोटे प्रयासों से ही आती है, आत्मविश्वास की लहर ने आत्मविश्वास जगाया कि बच्चों की रुचियों को समझते हुए उनके कौशलों को सरलता से विकसित किया जा सकता है– संगीता जी के प्रयास अत्यंत सराहनीय एवं उत्साहवर्धन करने वाले हैं।

'शैक्षिक प्रवाह' जैसी पत्रिका का प्रकाशन चतुर्मासिक के स्थान पर मासिक होनी चाहिए जिससे हमें शैक्षिणिक गतिविधियों व शिक्षा में हो रहे नवाचारों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त हो सके।

– अनीता थवानी

राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय सेक्टर 3 प्रतापनगर सांगानेर, जयपुर, राजस्थान

एक रास्ता यह भी

मैं संयुक्तांक 'शैक्षिक प्रवाह' अप्रैल–दिसम्बर को थोड़ा पढ़ पाई। खासतौर पर सुमन सोनी जी और शिवा दीप जी का लिखा एक लेख–जिसमें स्थानीय मान का सफ़र सोनी जी की कक्षा में कैसा दिखता है पढ़ा। बहुत ही सरल शब्दों में अपने इस सफ़र के दौरान हुए कुछ रिफ्लेक्शन को साझा किया गया हैं। जैसे कि हम कक्षा में लर्निंग लॉस को पाटने के प्रयास में लगे हैं, यह लेख मदद करता हुआ दिखता हैं। यह लेख बच्चों में लर्निंग लॉस और उनकी चुनौतियों को लेकर चरणवार काम करने में मदद करता हैं। जैसे कि फाउंडेशनल न्यूमरेसी भी संख्या समझ और संक्रियाओं पर केन्द्रित हैं जिसका जुड़ाव संख्या का बनना और उसकी संक्रियाओं से है।

इस लेख में शिक्षिका ने संख्याओं के बनने को लेकर बच्चों के साथ काम किया है और उसके अनुरूप वो कुछ प्रतिफलों को पा सकीं। आमतौर पर कक्षा में दिखने वाले तरीकों से यह तरीके बिलकुल अलग दिखते हैं। यह लेख एक रिसोर्स की तरह काम करता हुआ दिखता है। इसे एक केस स्टडी के रूप में सत्र में इस्तेमाल किया जा सकता हैं। इसलिए स्थानीय मान पर इस सफ़र को मैंने शिक्षक साथियों से भी साझा किया है। शिक्षकों ने हार्डकॉपी की डिमांड भी की है। ठीक इसी तरह राजेंद्र कापड़ी जी ने एक लेख– कठिन नहीं लगती गणित में, एक से दस तक की गिनती का सफ़र अपने लेख में साझा किया हैं। जिसमें चरणवार गतिविधियां देने का प्रयास किया गया हैं। जैसे संख्याओं का पढ़ना और साथ ही लिखने के लिए भी गतिविधियां साझा की गयी हैं। ये

सारे प्रयास हमें प्रोत्साहित करते हैं शिक्षक साथियों के साथ और मिलकर काम करने के लिए। बहुत जरूरी हैं, इस तरह के लेखों को शिक्षक साथियों तक पहुंचाना और अलग–अलग माध्यम से आधारभूत समझ को लेकर बातचीत करना।

–विशाखा तिवारी

अज़ीम प्रेमजी फाउन्डेशन, देहरादून, उत्तराखण्ड

नवाचार की वाहक 'शैक्षिक प्रवाह'

शैक्षिक प्रवाह निःसंदेह शिक्षा में नवाचार की सशक्त वाहक है कोरोना काल, लॉकडाउन काल में शिक्षण, शिक्षक व शिक्षार्थियों के लिए चुनौती तो थी ही अब विद्यालय खुलने के बाद विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले निर्धन परिवारों के वे बच्चे जो ऑनलाइन पढाई से वंचित रहे थे। उनके भारी शैक्षिक ह्रास की पूर्ति हेतु भी नए तौर तरीके से सुझा रही हैं पत्रिका में छपे लेख, जिसमें बच्चों की। शैक्षिक भरपाई व शिक्षण से जोड़े रखने हेतु विद्यालयों ने जो प्रयास किये व समय–समय पर ऑनलाइन वेबिनारों के माध्यम से शिक्षा विशेषज्ञों की राय व विचार से अवगत होकर नयी दिशा प्राप्त हो रही है ।

'मोहल्ला कक्षाओं ने सहेजी सीखने की ललक' व 'पढ़ने की बात भर से खुश होते थे बच्चे', 'कक्षा में भिन्न के जोड़ का प्रयोग', 'कठिन नहीं लगती गणित' आदि आलेख काफी प्रभावित करते हैं। कोरोना लॉकडाउन काल में हमारे द्वारा भी अपने सेवित में लगाई गई मोहल्ला कक्षाओं की स्मृति तरोताजा हो गई। जो बच्चे मोबाइल फ़ोन न होने से ऑनलाइन पढ़ाई से छूट जाते थे हमारे द्वारा उन्हें उनके घर पर ही शिक्षण सीट पर सलाह देने का प्रयास किया गया था। लगभग दो वर्ष से निरंतर शिक्षण से छोटे बच्चों की शिक्षण भरपाई हेतु 'प्रवाह' दिशा प्रदान करती है। शैक्षिक प्रवाह की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक विद्यालय तक इसका अंक उपलब्ध हो ऐसा प्रयोग प्रयास किया जाना चाहिए।

– दीवान सिंह कठायत

राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय उडियारी, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड

हमारी 'शैक्षिक प्रवाह'

'शैक्षिक प्रवाह' के संयुक्तांक के कवर पेज पर बनी पेंटिंग से मेरी नजरें नहीं हट रही थीं यह इतना खूबसूरत है। 'कोरोना काल में शिक्षकों का प्रयास' सच में एक उम्मीद जगाता हुआ टाइटल लगा। कोरोना महामारी ने हम सभी के जीवन में गहरा असर डाला है और हमारे विद्यालयों एवं बच्चों पर तो बहुत ही नकारात्मक असर डाला है। ऐसे में हमारे शिक्षक साथियों के प्रेरणादायक प्रयास अनिश्चितता में भी एक निश्चितता की उम्मीद जगाते हैं। कुछ पन्ने पलटे तो बहुत से लेखों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। आधे घंटे में मैं 5 लेख पढ़ चुकी थी।

सबसे पहले मेरी नजर अली असद के द्वारा लिखे हुए आर्टिकल 'और ये बन गयी पढ़ने की मेज' पर अटकी। टाइटल देख कर लगा कि किसी शिक्षक के द्वारा लिखा गया है लेकिन जब पढ़ना शुरू किया तो समझी कि यह तो हमारे फील्ड के साथी हैं जिन्होंने अपना वैक्सिनेशन के दौरान का अनुभव साझा किया हैं। यह देख मैं सोच में पड़ गयी कि हमारी प्रवाह कितनी समग्र है। लेख में जिस खूबसूरती के साथ एक बच्चे का कम संसाधन होने के बावजूद पढ़ाई के लिए समर्पण दिखाया गया है वो सच में एक साधारण से अनुभव को असाधारण बना देता है।

जब शिक्षक सेमिनार भाषा तक पहुंची तो हमारे शिक्षकों के द्वारा लिखे गए लेखों से बहुत प्रभावित हुई जैसे सुनीता पालीवाल द्वारा लिखा हुआ चित्र बनाते हैं पढ़ने–लिखने को आसान'। हम सभी जानते हैं कि इस महामारी के दौर में बच्चों का सामाजिक, भावनात्मक एवं शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित हुआ है ऐसे में हमें अपने विद्यालय में हर संभव प्रयास करना होगा जिससे बच्चे सहज महसूस करें। लेखिका के द्वारा दी गयी गतिविधियां अत्यंत आवश्यक हैं जिनका उपयोग करके हम बच्चों की कक्षा–कक्ष में रुचि बढ़ा सकते हैं और उन्हें संवाद के मौके दे सकते हैं। रंग–बिरंगे चित्र न केवल बच्चों की रुचि बढ़ाते हैं इसके साथ ही उन्हें खुद को और उनकी कल्पना को व्यक्त करने के मौके भी देते हैं। पठन पाठन क्रिया में चित्र एक सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं। जब प्रवाह बंद की तो लास्ट पेज की कविता 'चौराहा और पुस्तकालय' देखी। कितनी सहजता के साथ इस कविता में पढने एवं पुस्तकालय का महत्व बताया गया हैं चौराहे से तुलना करते हुए। यह मुझे पढ़ने की महत्वता बताती है और प्रेरित भी करती हैं।

– भावना पालीवाल

अज़ीम प्रेमजी फाउन्डेशन देहरादून उत्तराखण्ड

लर्निंग लॉस के दौरान

बाल साहित्य से पढ़ना–सीखना

जब स्कूल खुले और स्कूलों में जाकर बच्चों से मिलना हुआ तो यह समझ में आया कि लर्निंग लॉस तो हुआ है लेकिन बाल साहित्य के उपयोग से कुछ हद तक लर्निंग लॉस को कम किया जा सकता है।

फोटो– पुरुषोत्तम

– पारुल बत्रा

पूरे दो साल के लंबे अंतराल के बाद स्कूल खुले थे। दिल में शंका थी कि कैसे स्कूल जाऊंगी? क्या करूंगी? बच्चों से कैसे मिलूंगी? दो साल से ये बच्चे पढ़ने–लिखने की दुनिया से दूर हैं। न जाने उनको अब स्कूल आने में कैसा लगेगा? वह स्कूल का पहला ही दिन था। दिल में ढेर सारी शंकाएं और उत्साह लिए मैं तीसरी कक्षा में गई। ये वही बच्चे थे जिनको मैं पहली में पढ़ाती थी और तब वर्ष 2019 में उनका शाला में यह पहला ही साल था। इसके बाद कोविड की परिस्थितियों के मद्देनजर इन बच्चों ने दो साल तक लगभग घर पर ही पढ़ाई की थी।

शिक्षा विभाग के आदेशानुसार इन बच्चों को डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्रदान की गई थी। चूंकि मैं स्वयं भी इस प्रक्रिया का हिस्सा थी इसलिए यह जानती थी कि इनमें से कई बच्चों की परिस्थितियां ही ऐसी नहीं थी कि वे इस माध्यम से शिक्षा ले पाते। ज्यादातर बच्चे वंचित वर्ग से थे और उनके अभिभावक रोजाना मजदूरी करने या इस तरह के अन्य कार्यों से जुड़े थे। डिजिटल माध्यम से शिक्षा के तहत इन बच्चों को स्मार्टफोन से व्हाट्सएप्प समूह के द्वारा प्रतिदिन होमवर्क और कक्षा कार्य के ऑडियो और वीडियो भेजे जाते थे जिसे देखकर बच्चों को पाठ्यपुस्तक में कार्य करना होता था और अपने कार्य के फोटो या वीडियो शिक्षिका को भेजने होते थे। शिक्षिका भी बच्चों से फोन पर ही संपर्क करती थीं। इन सबमें समस्याएं कई थीं। ज्यादातर बच्चों के अभिभावकों के पास स्मार्टफोन के बजाय बेसिक फोन था जिस पर व्हाट्सएप्प जैसे एप्प नहीं चल सकते थे। अधिकांश बच्चों के अभिभावक सुबह काम पर जाते थे और फोन भी साथ ले जाते थे। जिनके पास फोन होता था उनके पास कई बार इंटरनेट रीचार्ज के लिए पैसे नहीं होते थे। कई बच्चों ने अपने पड़ोसियों के घर या जिनके पास स्मार्टफोन और इंटरनेट था उनके घर समूह बनाकर कक्षा में शामिल

हुए। लेकिन अगर एक ही घर में अलग–अलग कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चे हुए तो समस्या और बढ़ जाती थी क्योंकि फोन तो मुश्किल से एक ही होता था। कई घरों में कक्षा अटेंड करने के लिए लड़कों को लड़कियों से ज्यादा वरीयता दी गई और लड़कियों को घर के काम करने को कहा गया, ऐसे अनुभव भी रहे। बहरहाल, मुझे अब अपना कार्य इस संदर्भ को ध्यान में रखकर करना था।

उस दिन कक्षा में दस बच्चे ही आए थे। मैंने सोचा पहले एक बार यह देख लेते हैं कि इन बच्चों के पढ़ने का स्तर क्या है ? मैंने एक चित्र लिया और और उसके साथ एक वाक्य लिख दिया–

'लड़की झूला झूल रही है'

इस वाक्य को सभी बच्चों को अलग–अलग बुलाकर पढ़वाया–

दस में से पांच बच्चों ने वाक्य को कुछ इस प्रकार पढ़ा–

ल लट्टू का, ड डमरू का उसमें नीचे बिंदी, क कमल का उसमें बड़ी ई की मात्रा झ झंडे का उसमें बड़े ऊ की मात्रा ल लट्टू का उसमें बड़े आ की मात्रा झ झंडे का उसमें बड़े ऊ की मात्रा ल लट्टू का र रस्सी का ह हल का उसमें बड़ी ई की मात्रा ह हल का उसमें अई की मात्रा

इन पांच बच्चों से पूछने पर कि क्या पढ़ा वे कुछ नहीं बता पाए।

बाकी के तीन बच्चों ने वाक्य को कुछ इस तरह पढ़ा–

ल ड़ की झू ला झू ल र ही है

पूछने पर कि वाक्य किसके बारे में है वे भी नहीं बता पाए। बाकी एक बच्ची ने चित्र के नीचे लिखे वाक्य "लड़की झूला झूल रही है" को 'लड़की झूले पर बैठी है ' पढ़ा वहीं एक अन्य बच्ची ने चित्र देखकर 'छोरी झूले ते बैठी है' बोला।

मुझे हैरानी हुई कि मेरी कक्षा के दसों बच्चे पढ़ना नहीं जानते थे। शुरू के पाँच बच्चों को वर्णों और मात्राओं का ज्ञान तो था लेकिन वे वाक्य का अर्थ नहीं बता पा रहे थे और हिज्जे करने पर ही अटके हुए थे बाकी के तीन बच्चे हिज्जे तो नहीं कर रहे थे लेकिन एक–एक वर्ण अलग–अलग पढ़ने के कारण वाक्य का अर्थ वे भी नहीं बता पा रहे थे। यानी वे वर्णों का उच्चारण भर कर रहे थे। बाकी एक ने तो चित्र देखकर अंदाजा भर लगाया था और एक ने अपनी भाषा में चित्र देखकर जो समझा वह बताया था। यानी तीसरी कक्षा के यह सभी बच्चे पढ़कर समझने के कौशल को अभी हासिल नहीं कर पाए थे जबकि कक्षा तीन में आते–आते बच्चों को उनके स्तर का टेक्स्ट धाराप्रवाह पढ़ना आ जाना चाहिए। जब मैंने इसी तरह बच्चों के लेखन स्तर को देखा तो पाया कि बच्चे इस वाक्य को बोर्ड से देखकर नकल तो उतार लेते हैं लेकिन क्या लिखा पढ़कर सुनाने को कहने पर सुना नहीं पाते, इसी तरह मन से कुछ शब्द या वाक्य भी नहीं लिख पा रहे हैं। इसका मुख्य कारण कक्षा एक में सिर्फ वर्णों और मात्राओं पर ही काम होना और उसके बाद नियमित रूप से शाला न आ पाना रहा। चूंकि इस समय मेरे पास पाठय पुस्तक से पढ़ाने की बाध्यता नहीं थी इसलिए मैंने तय किया कि मैं शाला पुस्तकालय का इस्तेमाल करूंगी और बाल साहित्य के द्वारा इनके पढ़ने–लिखने की दक्षताओं पर काम करूंगी। चूंकि ये बच्चे उम्र में तो बड़े हो चुके थे और इनमें से सभी की उम्र आठ से नौ साल के करीब थी इसलिए इनके उम्र और अनुभव को ध्यान में रखते हुए मैंने चार कविताओं और दो कहानियों का चयन किया। इनमें दो कविताएं एकलव्य संस्था के कविता पोस्टर में से थीं जिनमें से एक थी– 'लालाजी लड्डू दो' और दूसरी थी 'बंदर मामा पहन पजामा,' तीसरी 'वह देखो वह आता चूहा' और चौथी 'तोती' थी। कहानियों में प्रथम से प्रकाशित बिग बुक 'मोटा राजा दुबला कुत्ता' और रूम टू रीड से प्रकाशित बिग बुक 'चुहिया और चिड़िया' थी।

पहले दिन मैंने बंदर मामा कविता के साथ काम करना तय किया। कविता के पोस्टर को सामने रखकर कविता दो–तीन बार पढ़ी और फिर बच्चों के साथ मिलकर कविता को गाया। जहां इतराए शब्द आता था वहां बच्चे अकड़ कर चलने का अभिनय करते थे। कविता थोड़ी बड़ी थी इसलिए वे बार–बार कुछ लाइन भूल रहे थे इसलिए शुरुआत की चार लाइनों को बोर्ड पर लिखकर चार–पांच बार पढ़ा। मुझे लगा वर्णों और अक्षरों पर ध्यान दिलाने के लिए शुरुआती चार पंक्तियों पर काम करना ठीक रहेगा।

बंदर मामा पहन पजामा
दावत खाने आए
पीली टोपी कुरता जूता
पहन बहुत इतराए

पंक्तियों का मोटा अंदाजा बच्चे लगा पा रहे थे। फिर बंदर शब्द को बोर्ड पर लिखकर पढ़ा और बच्चों को बंदर का चित्र बनाकर साथ में बंदर लिखने को कहा जो बोर्ड पर लिखा हुआ था। बच्चों को चित्र में बंदर के साथ अपना नाम भी हिंदी में लिखने को कहा। जो अपना नाम नहीं

लिख पा रहे थे उनका नाम मैंने लिख दिया और देखकर लिखने को कहा।

इस तरह सभी बच्चों ने बंदर का चित्र बनाकर अपना नाम लिखा।

इसके बाद बच्चों से ब से शुरू होने वाले शब्द बताने को कहा। कुछ बच्चे बीच में शेर, भालू और हाथी जैसे शब्द या जो भी मन में आए बोल रहे थे। बोर्ड पर 'ब' से शुरू होने वाले शब्दों का एक शब्द जाल बनाया। बच्चों को सारे शब्द उंगली रखकर पढ़वाए। कौन–सा शब्द किसने बताया यह भी पूछा सारे बच्चों ने लगभग सही ही बताया। बच्चों को ब से शुरू होने वाले ये शब्द कई बार पढ़वाए, कौन–सा शब्द किसका है? यानी किस बच्चे ने बताया है पूछा। फिर अपना शब्द सबने आकर बताया। ये सभी शब्द उन्हें लिखने को दिए।

दूसरे दिन फिर बंदर मामा कविता को दोहराने से बात शुरू हुई अब बच्चों को ये चार लाइन अच्छे से याद हो गई थीं। आज बच्चे यह भी बता पाए कि कौन–सी लाइन कहां लिखी है। फिर मैंने कुछ शब्दों की तरफ इशारा करते हुए पूछना शुरू किया कि यह कौन–सा शब्द है? कविता की पंक्तियों के कुछ शब्द जैसे– बंदर मामा पहन पजामा, इसमें पहन कहां है, पजामा कहां है भी अंदाज से बता पाए।

इसके साथ ही मैंने 'ब' से शुरू होने वाले शब्द जो बच्चों ने परसों बताये थे और उनका शब्द जाल बनाया था, पर भी बात की और पूछा कि आप लोगों ने कौन–कौन से शब्द बताये तो मुझे बड़ी हैरानी हुई कि सभी शब्द बच्चों ने वापिस बता दिए। मुख्य रूप से अपना–अपना शब्द सभी को याद था। जब मैंने मोबाइल से खींची फोटो से मिलाया तो सभी शब्द वापिस बोर्ड पर आ चुके थे। आज उन शब्दों को फिर से पढ़वाया और कुछ बच्चों को बुलाकर कौन–सा शब्द कहां लिखा है पूछा तो कुछ बच्चे सही तो कुछ गलत बता रहे थे।

इसके बाद कविता में आए 'ब' और 'प' अक्षर से शुरू होने वाले शब्दों को पहचानने को कहा तो बच्चों ने बता दिया कि पहन दो बार, पजामा और पीला में भी 'प' आया है।

बंदर मामा पहन पजामा
दावत खाने आए
पीली टोपी कुरता जूता
पहन बहुत इतराए

फिर बच्चों से कहा कि 'प' से शुरू होने वाले शब्द बताओ, शुरू में तो कुछ 'प' से और कुछ दूसरे वर्णों से

शुरू होने वाले शब्द भी बच्चे बताते रहे जैसे मम्मी के साथ पापा भी बोल रहे थे। लेकिन कुछ देर बाद सिर्फ 'प' से शुरू होने वाले शब्द ही आने लगे। 'प' का शब्द जाल बनवाने के बाद और उन सभी शब्दों को दो–तीन बार पढ़वाने के बाद, बच्चों के बताए शब्दों में से ही 'प' और पा (।) की मात्रा के शब्दों को छांटकर दो टेबल में बांट दिया गया, और उनके बोलने में फर्क करवाते हुए पढ़ा गया। बच्चों ने जल्दी ही इस बात को पकड़ लिया और फिर जब एक–एक बच्चे को बुलाकर कोई शब्द पूछा जा रहा था तो अधिकांश बच्चे बता पा रहे थे कि पंजा किस तरफ लिखा है और पास्ता किस तरफ है। फिर ये शब्द उन्हें लिखने को दिए गए और 'प' और पा वाले शब्दों पर गोला लगाने को कहा गया। आज दूसरे दिन के अंत तक 'ब' और 'प' वर्ण की पहचान, कुछ शब्दों पर काम और 'आ' की मात्रा पर शुरुआती काम हो चुका था।

इसके बाद वाले हफ्ते में मैंने बंदर मामा कविता के एक–एक वाक्य को पट्टियों में लिखकर काट लिया यानी उसकी वाक्य पट्टियां बना लीं। ऐसे तीन सेट मेरे पास थे, मैंने सोचा कि आज समूह में बच्चों से कविता का चार्ट देखकर कविता की वाक्य पट्टियां जमवाने का कार्य करूंगी। मैंने बच्चों के चार समूह बना दिए और हर समूह

को वाक्य पट्टियों का एक–एक सेट दे दिया। बच्चे चार्ट पर लगी कविता देखकर उन्हें जमा रहे थे साथ ही पढ़ भी रहे थे, समूह में जो बच्चे थोड़ा पढ़ पा रहे थे वे अनुमान लगाने में अपने अन्य साथियों की मदद भी कर रहे थे। समूह कार्य के बाद मैंने कविता की पट्टियों को आपस में मिलाकर उन्हें पूरी कक्षा में बांट दिया और बच्चों से कहा कि मैं कविता को गाना शुरू कर रही हूं और मैं जो पंक्ति गाऊं उसके अनुसार वे अपनी वाक्य पट्टियों को लेकर आते जाएँ। इस तरह हमने कविता के क्रम और समझ पर काम किया इसे मैंने दो–तीन दिन तक जारी रखा जब तक सभी बच्चे वाक्यों से परिचित नहीं हो गए।

अगले तीन दिनों में मैंने सभी बच्चों से कविता के शब्द कार्डों को जोड़कर कविता के वाक्यों को पूरा करवाया। यह कार्य हर बच्चे के साथ व्यक्तिगत तौर पर किया गया ताकि हर बच्चा शब्दों को पढ़ते हुए पूरा वाक्य बना पाए, कुछ बच्चे खुद कविता का चार्ट देखकर शब्द मिला पाते थे और कई की मैं सहायता करती थी। इस बीच पूरी कविता को गाना और साथ में पढ़ना यह भी चलता रहा। इसी बीच हम कविता में आए अन्य कई वर्णों जैसे बंदर का 'ब', मामा का 'म', पजामे का 'प' आदि पर शब्द जाल बनाने के माध्यम से काम कर चुके थे और इन सभी वर्णों से बने शब्द जाल को कक्षा की दीवारों पर भी लगा चुके थे। तकरीबन 10 दिन बाद अब बच्चे बंदर मामा पहन पजामा कविता को अंदाज से पढ़ पा रहे थे और उसमें से कुछ वर्ण और शब्दों को भी पहचान पा रहे थे।

कविता के बाद मैंने प्रथम से प्रकाशित बिग बुक 'मोटा राजा दुबला कुत्ता' की कहानी पर काम करना तय किया। यह एक बड़ी सी किताब है और इसके हर पेज पर केवल एक–एक लाइन ही लिखी हुई है। पहले बच्चों को कहानी सुनाई और कहानी पर चर्चा की। इसके मुख्य कवर को लेकर मजेदार बातें हुई जैसे कहानी का नाम है मोटा राजा लेकिन यहां राजा दिख रहा है पतला। कहानी सुनाने के बाद मैंने बच्चों को मोटा राजा दुबले कुत्ते का चित्र बनाने को कहा, शुरू में तो बच्चे हिचकिचाते रहे और पाठयपुस्तक में ढूंढने लगे कि कहीं से देखकर राजा और कुत्ते का चित्र बना सकें। फिर मैंने उन्हें अपने मन से चित्र बनाने को कहा। सभी बच्चों को चित्र में बोर्ड पर से देखकर 'मोटा राजा और दुबला कुत्ता' की लेबलिंग करने को कहा साथ अपना नाम, कक्षा और स्कूल का नाम लिखने को कहा। इसका एक फॉर्मेट मैंने बोर्ड पर भी बना दिया। जो बच्चे नहीं लिख पा रहे थे उनको कॉपी में

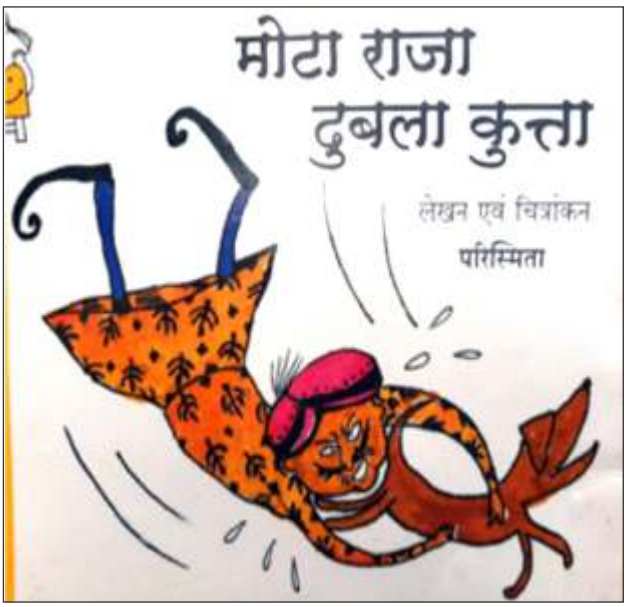

लिखकर दिया और देखकर लिखने को कहा।

अगले दो दिनों में हमने इसी कहानी को चार्ट पर से देखकर पढ़ा और बोर्ड पर लिखा और हर बच्चे को बुला कर बार–बार उंगली रखकर पूरी कहानी पढ़वाई गई। साथ ही मोटा का 'म', राजा का 'र', दुबला का 'द' और कुत्ता का क इन पर बातचीत करते हुए इन सभी वर्णों के शब्द जाल बनाए, बच्चों के साथ बार–बार कहानी पढ़ते समय बच्चों से मोटा, कुत्ता, राजा, चिड़िया आदि कहां–कहां लिखा है पूछा गया। इस तरह इस कहानी के साथ बच्चों ने कुछ नए वर्णों और शब्दों को पहचानना सीखा। चूंकि इस कहानी में टेक्स्ट बेहद कम था और हर पृष्ठ पर केवल एक–एक लाइन ही दी गई थी इसलिए मैंने इस कहानी के साथ भी शब्द कार्ड और वाक्य पट्टी बनाकर उन्हें जमवाने का कार्य व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर किया।

इसी तरह मैंने बाकी की दो कविताओं लालाजी लड्डू दो, वह देखो वह आता चूहा और कहानी चुहिया और चिड़िया पर भी काम किया। सभी पर काम करने की प्रक्रिया लगभग यही रही। कविताओं पर शब्द और वाक्य पट्टी के माध्यम से कार्य किया गया और कहानियों और कविताओं दोनों के चार्ट कक्षा में लगाए गए। साथ ही यह भी कोशिश रही कि जिन वर्णों पर काम हो रहा है उन सबके शब्द जाल कक्षा में लगा दिए जाएं साथ ही नए शब्दों को कक्षा के कोने में बनी शब्द दीवार पर जगह मिलती जाए। हर रोज कक्षा की शुरुआत करने से पहले हम कविताओं को दोहराते या फिर प्रार्थना के बाद उन्हें गाते और एक

बार सारे शब्द जाल पढ़ लेते। उसके बाद ही हम अपनी कक्षा की नियमित शुरुआत करते। हमने कविता कहानियों से जुड़े चित्र भी बनाए और सभी पात्रों के नाम लिखे। तीन महीने के अंदर मैंने कक्षा में काफी बदलाव देखे जैसे–

- कक्षा में कम उपस्थित रहने वाले बच्चे अब नियमित आने लगे थे, उनकी कक्षा में सहभागिता भी बढ़ी थी।
- शब्द जाल के माध्यम से बिलकुल न पढ़ पाने वाले बच्चों ने कुछ शब्दों की पहचान और कुछ वर्णों को पहचानना सीख लिया था। हर कविता–कहानी में वे कुछ शब्द और कुछ वर्ण पहचान पा रहे थे।
- कक्षा में लगातार पूरे शब्द को पढ़ने और मेरे द्वारा हिज्जे न करवाने से बच्चे अब शब्द को पढ़ने का प्रयास करते थे।
- जो बच्चे शब्द पढ़ पा रहे थे उनके पढ़ने का प्रवाह भी कुछ बेहतर हुआ था और वे नए शब्द पढ़ना और अनुमान लगाकर पूरी कविता पढ़ने की ओर अग्रसर हो रहे थे।
- कहानी और कविताओं पर बात करने से बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति भी बेहतर हुई थी। उदाहरण के लिए मोटा राजा दुबला कुत्ता कहानी को पढ़ने के बाद काफी चर्चा हुई कि हम मोटे से दुबले या दुबले से मोटे कैसे हो जाते हैं और इसके लिए क्या–क्या करना या नहीं करना होता है।
- चित्र बनाने से वे अब कविता–कहानी से हटकर क्या बनाया जा सकता है भी सोचने लगे थे और देखकर चित्र बनाने या नकल करने की आदत कुछ कम हुई थी।
- कक्षा की दीवारों पर कुछ न कुछ लगा रहने से जब भी उनका मन करता था वे खुद से पढ़ते थे और अपने साथियों को बताते थे कि देखो इस चार्ट में मेरा बताया हुआ शब्द यहां लिखा है।

इस पूरी प्रक्रिया के बाद मेरी यह समझ बनी कि इस दौरान पाठ्यपुस्तक से पढ़ाने की बाध्यता न होने पर मैं ज्यादा बेहतर तरीके से बच्चों के साथ बाल साहित्य को लेकर काम कर पाई और उनके लर्निंग लॉस की स्थिति को देखते हुए उन्हें बेहतर तरीके से एंगेज कर पाई।

(लेखिका अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन भोपाल मध्य प्रदेश से जुड़ी हैं)

शिक्षक सृजन

चींटी

दिखाई देती तिल सी छोटी,
पर मोल है इसकी बेहद मोटी।
हमेशा कतार में ही चलकर
अनुशासन हमें सिखाती।
लघु पद से मीलों चलकर
मेहनत करने की सीख देती।
हमेशा समूह में रहकर
एकता में बल यह शिक्षा देती।
नन्ही सी जान शत्रु से लड़कर
आत्मरक्षा करना सिखाती।
बिना रुके, बिना थके आगे बढ़कर
कभी न माने हार यह सीख देती।
बिन टाले अथक-कार्य कर
सतत प्रयास करें यह शिक्षा देती।

काला बादल

मैं तो हूँ काला
जिसे देख हर कोई हो जाता मतवाला।
किसान के होठों पर देकर मुस्कान
कर देता हूं उनके पूरे अरमान।
धरती माता की प्यास बुझाने
आ जाते हो रिमझिम बरसा।
मोर भी बैठे रहते पंख फैलाकर
झूम उठते काले बादल देखकर।
बच्चों के आनंद का क्या कहना
कागज की नाव बन जाती गहना।
ओ काले बादल जल्दी आ जाना
सारे जग को हरा-भरा बना देना।

– पदमिनी साहू
गवर्नमेंट इंग्लिश मीडियम स्कूल बलोदा बाजार, रायपुर, छत्तीसगढ़

कमाल करता है कहानियों का संसार

बाल साहित्य के उपयोग से यह देखने को मिला कि बच्चों में पढ़ने के कौशल जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि में गुणात्मक वृद्धि हुई, जिसमें उनके पढ़ने की गति बढ़ी और उनके लेखन में भी शब्द भंडार बढ़ने लगा। बच्चे एक–दूसरे की पढ़ने–पढ़ाने में सहायता भी करने लगे।

– नरेश चन्द्र

हम सब जानते हैं कि बच्चे नई–नई किताबे पढ़ने में रुचि रखते हैं। उनकी इसी रुचि के कारण से हम उनमें भाषा के कौशलों का विकास सरलता से कर सकते हैं और किताबें पढ़ने–पढ़ाने के दौरान उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। निरन्तर अभ्यास के बाद बच्चे कल्पनाशीलता के आधार पर अपनी कहानी गढ़ने लगते हैं।

वर्तमान में, मेरे विद्यालय राजकीय प्राथमिक विद्यालय अंबेडकर नगर, रुद्रपुर एक छोटी सी बस्ती में स्थित है, जिसमें 2 शिक्षक और 33 बच्चे हैं। बाल साहित्य का उपयोग सीखने सिखाने में रूम–टू–रीड द्वारा किये जा रहे कार्य और विद्यालयों को उनके द्वारा प्रदान की गई किताबों के अच्छे प्रभाव मुझे अन्य शिक्षक साथियों से देखने और सुनने को मिल रहे थे, परंतु रूम–टू–रीड के मानदंडों के अनुसार हमारे विद्यालय को इसका लाभ नहीं मिल सका था। हमारे अथक प्रयास के बावजूद कुछ बच्चे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में पिछड़ रहे थे। अपने स्कूल के सभी बच्चों को मैं स्वतंत्र पाठक के रूप के देखना चाहता था। उनमें किताबें पढ़ने–पढ़ाने को लेकर रुचि उत्पन्न हो सके, इसके लिए मैंने विभागीय मदद से बच्चों के लिए कुछ किताबें 2018–19 में खरीदीं और इस तरह हमारे स्कूल में बाल साहित्य की शुरुआत हुई। सभी किताबें बच्चों की पहुंच में रहें, इसके लिए बच्चों की मदद से किताबों को सुविधानुसार डोरी पर इस प्रकार टांग दिया गया कि बच्चे आसानी से लेकर पढ़ सकें।

इन पुस्तकों को देखकर बच्चे खुशी से झूम उठे। उनकी आखों में चमक आ गई। इन पुस्तकों से सम्बंधित हमने बातचीत की, जिसमें उनके रख–रखाव, रजिस्टर में अंकित करना, उनका आदान–प्रदान आदि पर बात हुई। कक्षा 4 की बालिका अनीषा ने इस कार्य के लिए अपना नाम दिया। इस कार्य के बाद बच्चों से कहा कि जो भी पुस्तकें आप लें, उसे रजिस्टर में जरूर दर्ज कर लें।

दिव्यांशु, कक्षा–3, ननूरखेड़ा, रायपुर, देहरादून

बच्चों के बीच इन पुस्तकों को पढ़ने की होड़ सी लग गई। बच्चों को विद्यालय में किसी भी समय इन पुस्तकों को पढ़ने की छूट थी। वे लंच समय व अन्य खाली समय में तथा कक्षा में दिया गया कार्य जल्दी से खत्म करके पुस्तकें पढ़ने लगे। कुछ बच्चे तो एक दिन में 2–3 पुस्तकें पढ़ने लगे और फिर आपस में किताबों पर चर्चा होने लगी कि किसने कौन–कौन सी कहानी पढ़ी। इस प्रक्रिया के प्रभाव के लिए तीन महीने 18 बच्चों के साथ बातचीत को साझा किया गया। जिसमें 1 से 5 के वे बच्चे थे। जिनमें भाषा के कौशलों को बढ़ाने की अधिक आवश्यकता थी।

बच्चों का पुस्तकों से यह लगाव उन्हें पढ़ने की ओर ले

गया। बच्चे अपनी क्षमतानुसार किताबें पढ़ते गए। इन पुस्तकों में उन्हें क्या अच्छा लगा? चित्र कैसे लगे? उनके पात्र कैसे लगे इस पर वे बातचीत साझा करने लगे। कक्षा में उनकी कहानियों, पढ़ी गई पुस्तक पर बातचीत बढ़ने लगी। एक–दूसरे को अपनी कहानी सुनाने लगे। प्रार्थना सभा में कहानियों को सुनाने के लिए कई नाम आने लगे। साथ ही अपनी कहानी सुनाने के लिए पहले से अपने नाम लिखवाने लगे।

अवलोकन 1

एक दिन मैंने 'लुढ़कता पहिया' किताब बच्चों के बीच पढ़ी और उस पर बातचीत की। जिससे अपनी कल्पना से जोड़कर अपने परिवेश की बच्चे जानकारी बड़े उत्साह से दे रहे थे। रंजीत बच्चा जो कम बोलता था, वह भी अपने पहिया चलाने के अनुभव बिना हिचक के सुना रहा था। पहले की अपेक्षा उसमें बोलने का आत्मविश्वास बढ़ता हुआ दिखा। इसके साथ अमन कक्षा 2 ने दोस्ती की कहानी पढ़ी हुई सुनाई। इसी तरह अन्य बच्चे भी अपनी–अपनी कहानी सुनाने को लालायित रहते। कहानी–कविता से सम्बंधित प्रश्नोत्तर से प्रार्थना सभा में उपस्थिति भी बढ़ने लगी ।

अवलोकन 2

दो माह के उपरांत मैंने बच्चों को अपनी पढ़ी कहानी–कविता को चित्रण के रूप में बताकर कुछ प्रश्न बनाने को दिए। अधिकांश बच्चों ने बोर्ड, कॉपी, दीवार लेखन के द्वारा सुंदर व आश्चर्यचकित प्रस्तुति दी। 18 बच्चों में से 11 बच्चों में ज्यादा बदलाव देखने को मिले। बाल साहित्य के प्रयोग से यह देखने में मिला कि अन्य के साथ चयनित बच्चों में पढ़ने के कौशल जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि में गुणात्मक वृद्धि हुई, जिसमें उनके पढ़ने की गति बढ़ी और उनके लेखन में भी शब्द भंडार बढ़ने लगा। बच्चे एक–दूसरे की पढ़ने–पढ़ाने में सहायता भी करने लगे। कहानी से उनमें मूल्यों की भी समझ विकसित होती दिख रही थी। अब वे जब भी अपनी कहानी लिखते तो वाक्य विन्यास, मात्राओं की गलतियां कम होने लगीं। कुछ बच्चे कक्षा 1 व 2 के चित्र देखकर कुछ अनुमान लगाकर अपनी कहानी पढ़ने का प्रयास करने लगे। उनमें स्वतंत्र अभिव्यक्ति का विकास हुआ।

इसलिए एक शिक्षक के रूप में इस कार्यानुभव से मुझे समझ आया कि कहानी, कविताओं की किताबों पर बातचीत के अवसर के द्वारा भाषा कौशलों का विकास, परिवेश आधारित स्वतंत्र अभिव्यक्ति, नैतिक मूल्य, रुचिपूर्ण वातावरण आदि अन्य गुणों का बच्चों में विकास होता है। इसलिए ऐसा प्रयास विद्यालय में जारी रखा जाना चाहिए।

बाल साहित्य के प्रयोग से यह देखने में मिला कि अन्य के साथ चयनित बच्चों में पढ़ने के कौशल जैसे सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि में गुणात्मक वृद्धि हुई, जिसमें उनके पढ़ने की गति बढ़ी और उनके लेखन में भी शब्द भंडार बढ़ने लगा।

कोरोना के समय में बाल साहित्य का उपयोग

सीखने–सिखाने की निरंतर चलने वाली प्रक्रिया में अचानक अकल्पनीय उथल–पुथल कोरोना काल के रूप में हो जाएगी, कभी सोचा भी न था। वैसे तो सीखना कभी बंद नहीं होता। हम क्या सीख रहे हैं यह परिस्थितियों, वातावरण, परिवेश आदि पर भी निर्भर होता है। इस लेख में जीवन के कुछ ऐसे कठिन समय में भी अवसर तलाशने के अनुभव पर बातचीत की गई है कि कोरोना काल में बाल साहित्य के उपयोग से कैसे पढ़ने–पढ़ाने की संस्कृति को जीवंत बनाया जा सकता है।

मार्च 2020

इस माह में अचानक कोरोना से स्कूल बंद हो गए वो भी तब जब सत्र का सतत मूल्यांकन अंतिम चरण में था। कुछ दिनों तो बच्चों को छुट्टी से लगा कि शायद संसार की सारी खुशियां मिल गई हों। परंतु जब सब घरों में कैद होने को मजबूर हो गए तो बच्चों की छटपटाहट बढ़ने लगी। खुद मुझको भी लग रहा था शायद कुछ छिन गया है। वो बच्चों की गूंजती आवाजें, उनकी मासूमियत भरी बातें, अब सुनने को नहीं मिल रही थीं। इसके उलट सड़कों पर लम्बी कतारें, घर आने के लिए तड़पते लोगों की खबरें टेलीविजन, अखबारों की विचलित करने वाली थीं।

अप्रैल 2020 से दिसंबर 2020

मार्च का महीना बीतने के बाद बच्चों, अभिभावकों से फोन पर उनके स्वास्थ, दिनचर्या आदि पर बातचीत की जाती थी। चावल वितरण के समय वर्कशीट दी गई, पियर ग्रुप

बनाए गए, व्हाट्सअप ग्रुप बनाया गया, टेलीविजन शिक्षण हेतु जागरूक किया गया। परंतु सीमित संख्या में बच्चों से संपर्क हो सका। अब एक बड़ी चुनौती थी कि सभी बच्चों को किस प्रकार सीखने के वातावरण से जोड़े रखा जाए।

जनवरी 2021

कोरोना काल में मुझे ऑनलाइन ग्रुपों की बातचीत से, लेखों को पढ़कर, वेबिनारों को सुनकर, व अन्य प्रशिक्षणों आदि से बहुत कुछ सीखने का नया मौका मिला। जिससे प्रेरित होकर मैंने सभी बच्चों में पढ़ने–लिखने की संस्कृति को जीवंत रखने के लिए बच्चों और अभिभावकों से संपर्क कर बाल साहित्य के उपयोग से बच्चों के लिए एक योजना तैयार की।

योजना

इस योजना को बनाने में मेरे सहयोगी और अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथियों का विशेष सहयोग रहा। बच्चों के साथ बातचीत में तय किया गया कि स्कूल के बाल साहित्य में कहानी, कविता की किताबों को घर पर पढ़ने के लिए इच्छुक किसी बच्चे, अभिभावक को उपलब्ध कराया जाएगा। बड़े बच्चे छोटे बच्चों की किताबें पढ़ने में मदद करेंगे। बच्चे किताबों को पढ़कर अपने परिवार जनों को सुना सकते हैं। जो कुछ किताबें पढ़कर समझ आए उसको लिख सकते हैं और सप्ताह में एक बार हर शनिवार को पढ़ी हुई किताबों पर बातचीत की जाएगी। बच्चे अपनी पुरानी किताबों को जमा करके नई किताबें ले जा सकते हैं। शुरू में कुछ बच्चे तैयार हुए और हर शनिवार को बच्चों से बातचीत शुरू हो गई।

प्रक्रिया

धीरे–धीरे बच्चों की रुचि और संख्या किताबें पढ़ने में बढ़ने लगी। जनवरी के अंत तक 16 बच्चे समुदाय की किताबें पढ़ने लगे। स्कूल के अधिकांश बच्चे किताबें ले जाने लगे और अपनी प्रतिक्रिया मौखिक, लिखित व्यक्त करने लगे। मेरे द्वारा हर सप्ताह एक कहानी सुनाकर बच्चों को सोचने के मौके दिए जाते थे।

गतिविधि

जब बच्चों से किताबों के कवर पर बातचीत की जाती थी तो सभी बच्चे अपनी–अपनी समझ से चित्रों, शब्दों के आधार पर अनुमान, कल्पना के द्वारा कहानी बनाते थे। फिर किताब की कहानी को पढ़ा जाता जिसको बच्चे बड़े ध्यान से सुनते थे और अपनी बनाई हुई कहानी से तुलना कर रहे होते थे।

कहानी पर बातचीत के समय कुछ शब्द पहचान भी कराई जाती जिसको बच्चे बड़े उत्साह से बताते थे।

कभी–कभी बच्चों को कहानी सुनाते समय रोककर पूछा जाता कि सोचो कहानी में आगे क्या हुआ होगा? इस गतिविधि में भी बच्चे बड़े चाव से हिस्सा लेते थे। बच्चों को अभिव्यक्ति के अवसर दिए जाते जिसमें बच्चे अपनी समझ से स्वतंत्र विचार एक–दूसरे के साथ साझा करने लगे। बच्चों के लिखित विचार एक–दूसरे को पढ़ने समझने के लिए दिए जाते। उनके लेखों का विश्लेषण करके बातचीत की रूपरेखा तैयार की जाती।

सीख

इस तरह लगभग तीन महीनों के अनुभव से विचित्र परिणाम नजर आने लगे। जैसे अन्य प्रयासों से बच्चों का अपेक्षित परिणाम 30 से 40 प्रतिशत था। परंतु बाल साहित्य की किताबों के प्रयोग से यह 80 प्रतिशत तक पहुंच गया। समुदाय के बच्चे प्रति सप्ताह किताबें पढ़ने की संख्या बढ़ने लगी। अभिभावक भी बच्चों की किताबें पढ़ने लगे। विद्योतमा बताती है कि मुझे भी किताबें पढ़ना अच्छा लगने लगा। रंजीत जो स्कूल आने से कतराता था अब वह हर बार आता है और कहानी पर अपने अनुभव सुनाता था।

अब स्कूल बंद होते हुए भी गांव में पढ़ने–पढ़ाने का वातावरण बना हुआ था। कोरोना के डर का माहौल कम होने लगा।

परंतु यह प्रयोग दूसरी लहर के कारण अप्रैल से जून तक फिर से बंद हो गया। जिसे जुलाई में दोबारा नियमित स्कूल खुलने तक जारी रखा गया। जिससे लर्निंग लॉस को कम करने में मदद मिली। बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा व ब्रिज कोर्स की अवधारणा को बच्चे आसानी से पकड़ पा रहे थे।

बच्चों की रुचि को देखते हुए मैंने सितंबर माह में एक बरखा सीरीज का नया सेट और खरीदा है। अब स्कूल में बच्चों को 554 किताबें उपलब्ध है। मैं चाहता हूं कि बच्चे किताबें पढ़ने में इसी प्रकार की रुचि हमेशा बनाए रखें।

(लेखक राजकीय प्राथमिक विद्यालय, अम्बेडकरनगर, रुद्रपुर, उत्तराखण्ड में प्रभारी प्रधानाध्यापक के पद पर हैं।)

लर्निंग लॉस को कम करने में मददगार

विविध तरह के बाल साहित्य का उपयोग करते हुए बच्चों की आधारभूत दक्षताओं को मजबूत बनाया जा सकता है। कोविड के इस दौर में जब बच्चे काफी सारी दक्षताओं को भूल गये हैं उसमें बाल साहित्य की भूमिका और ज्यादा बढ़ जाती है। रोचक कहानियों व कविताओं के जरिये बच्चों को आनंददायक तरीके से भूली हुई दक्षताओं से दोबारा जोड़ना आसान होगा।

– अवनीश मिश्र

कोरोना के चलते परिस्थितियां बिलकुल बदली हुई हैं। एक ऐसी क्षति जो प्रत्यक्ष भी है और अप्रत्यक्ष भी। किसी की बातों को सुनकर आनंद की अनुभूति होती है तो किसी के जज्बात सुनकर ज़ेहन में सिहरन सी उठती है। इस अनचाही परिस्थिति ने न केवल बच्चों के सीखे हुए को प्रभावित किया बल्कि हर उस अवसर को छीन लिया जो बच्चों के हर तरह के कौशलों के विकास के लिए जरूरी था। इसे एक से लेकर आठ तक सभी कक्षाओं में महसूस किया जा सकता है। ऑनलाइन का सीमित दायरा इसकी भरपाई करने में फिसड्डी साबित हुआ।

नेटवर्क, डेटा, एंड्रायड फोन की समस्या, शिक्षा ले रहे पहली पीढ़ी के बच्चे, बच्चों को पर्याप्त पोषण न मिलना, संवेदनात्मक रूप से आहत जनमानस, लड़कियों का अधिक समय गृहस्थी के कामों में गुजरना और पेट की भूख शांत करने के लिए दैनिक दिहाड़ी का जुगाड़ करते अभिभावकों द्वारा बच्चों पर पर्याप्त ध्यान न दे पाना आदि लॉकडाउन की बड़ी त्रासदियां हैं। इन त्रासदियों की भरपाई करना सहज नहीं है। इस परिस्थिति ने कुछ हद तक सीखने और समझने के विविध तरह के अवसर भी दिए। जैसे स्कूल होने के मायनों और पढ़ने–लिखने की रोचक, सरल, सहज और असरदार प्रक्रियाओं को खोजना, बच्चों की बुनियादी दक्षताओं–समग्रता में शिक्षण एवं संज्ञानात्मक विकास के लिए साथ मिलकर सीखने–समझने का कोई विकल्प न होना आदि।

लॉकडाउन के लगभग दो साल बाद स्कूल खुलने पर संवेदनात्मक और भावनात्मक रूप से घटी घटनाओं से आहत बच्चों को स्कूल में बैठाने, किसी मुद्दे पर चर्चा करने और उन्हें पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया से जोड़ना एक टेढ़ी खीर रहा है। शिक्षक के लिए असमंजस की

स्थिति है कि इस चुनौती से कैसे निपटा जाए। एक ही कक्षा में सीखने और समझने के कई स्तर दिखाई देते हैं। कोई बच्चा कल्पना और अनुमान लगाकर शुरुआती पढ़ने की दहलीज पर है तो कोई अक्षर–मात्रा की उलझाऊ दुनिया को सुलझाने का प्रयास कर रहा है। कोई शब्दों और वाक्यों के ताने–बाने को समझने में प्रयासरत है। इसी तरह जो बच्चे पहले समझ आधारित पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया में थे, वे अब पढ़ने में कठिनाई का सामना कर रहे हैं। शब्दों व वाक्यों को अटक–अटक कर पढ़ रहे हैं। उन्हें प्रिंट में लिखी सामग्रियों को पढ़ने और उसकी समझ साझा करने में चुनौती महसूस हो रही

है। लिखने में भी शाब्दिक–मात्रिक गलतियां कर रहे हैं। अपने विचारों को वाक्यों में गूंथने में कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं। किसी भी विषय पर मौखिक व लिखित रूप से अभिव्यक्ति करने और चर्चा–परिचर्चा करने में भी कठिनाई का सामना कर रहे हैं। यह चिंताजनक स्थिति है कि कक्षा तीन से लेकर आठ तक की बुनियादी दक्षताओं (सुनना–बोलना, सोचना, समझना, अर्थ निर्माण करना, धाराप्रवाह पढ़ना, समझकर लिखना, रचनात्मक और सृजनात्मक अभिव्यक्ति) में हुई क्षति की भरपाई कैसे की जाए। बच्चों को आधारभूत कौशलों को हासिल कराने के साथ उन्हें कक्षावार आवश्यक दक्षताओं से कैसे जोड़ा जाए।

अलग–अलग स्तर के बच्चों के लिए सीखने की क्षति को पहचानने और पहचानकर उसकी भरपाई करने के लिए निरन्तरता में प्रयास कैसे किया जाये। इसके साथ ही कक्षावार बुनियादी सीखने के प्रतिफलों के आधार पर प्रत्येक बच्चे की प्रगति को सुनिश्चित कैसे किया जाए। ऐसे में बच्चों में हुई क्षति के स्तर की पहचान कर उनके समूह बनाना और उन्हें अपेक्षित सीखने के स्तर पर लाने के लिए बहुत ही व्यवस्थित योजना के साथ कार्य करने की आवश्यकता दिखाई देती है। ऐसे संसाधनों की खोज करने की जरूरत है जो सीखने की प्रक्रिया को आनंददायी बनाने में सहायक हो।

यह संसाधन पाठ्यपुस्तक में शामिल मजेदार पाठ, बच्चों की बहुरंगी दुनिया के रोचक किस्से, विविध तरह के बाल साहित्य, टीएलएम आदि हो सकते हैं। इन सामग्रियों का योजनाबद्ध तरीके से उपयोग करते हुए हर स्तर के बच्चे को सरलता और सरसता के साथ पढ़ने–लिखने की दुनिया से जोड़ा जा सकता है। विविध तरह के बाल साहित्य का उपयोग करते हुए बच्चों की आधारभूत दक्षताओं को मजबूत बनाया जा सकता है। अभी के दौर में जिस तरह के माहौल की जरूरत है, उसका एक महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य विकल्प बाल साहित्य नजर आता है। जब बाल साहित्य का नाम आता है तो मन रोमांच से भर जाता है। आंखों के सामने रंग–बिरंगे चित्रों वाली छोटी–छोटी पुस्तकें नाचने लगती हैं। इनमें साहसी बच्चे और पशु–पक्षियों की कहानियां होती हैं, जो बच्चों को एक अलग ही संसार में ले जाती हैं। जहां पर बच्चे ही नहीं बड़े भी कल्पनाओं के सागर में गोते लगाने लगते हैं और उस पल में कहानी में आये पात्रों को अपने में जीने लगते हैं। बाल साहित्य स्वतः ही बच्चों में अप्रत्यक्ष तौर पर मानवीय मूल्यों और संवेदना का विकास करता रहता है। वह तर्क करने और सोचने–समझने का अवसर पैदा करता है। बच्चों को एक स्वंतत्र कोना देता है, जिसमें बच्चे अपनी कल्पनाओं को आधार देते हैं। उनकी रचनात्मकता का विकास होता है, विभिन्न परिप्रेक्ष्य को जानने समझने का मौका मिलता है। पढ़ने–लिखने की नीरस दुनिया में हलचल पैदाकर बच्चों को आत्मविश्वासी बनाने के साथ उत्साही पाठक बनने में आधार का काम करता है। जब बच्चा कोई कहानी या कविता पढ़ता है तो उसके लिखे हुए से रू–ब–रू होता है। साथ ही वाक्य सरंचना व नये शब्दों से परिचित भी होता है।

बाल साहित्य में किताबों–कॉपियों में भाषा को कैद करने की अपेक्षा मुक्त करने, विचारों और भावों को पनपने देने की गुंजाइश अधिक दिखाई देती है। जिससे एहसास मिलता है कि भाषा हमारे चारों तरफ (टी.वी., मोबाईल, चॉकलेट–टॉफी–बिस्कुट के रैपर, अखबार, विज्ञापन, चित्रों, किताबों, बोलचाल आदि में) बिखरी हुई है। वह बच्चों के साथ बड़ों को भी स्वतंत्र रूप से अपने विभिन्न तरह के अनुभवों को मौखिक और लिखित रूप से अभिव्यक्त करते हुए सृजन की दुनिया में कदम रखने का अवसर देती है। इस तरह से आधारभूत दक्षता से जुड़े बुनियादी सीखने के प्रतिफलों (दूसरों की बातों को रुचि के साथ और ध्यान से सुनना, अपने अनुभव–संसार और कल्पना–संसार को बेझिझक और सहज ढंग से अभिव्यक्त करना, अलग–अलग संदर्भों में अपनी बात कहने की कोशिश करना जैसे बोलकर, इशारों से, 'साइन लैंग्वेज' द्वारा, चित्र बनाकर, स्तरानुसार कहानी, कविता आदि को सुनने में रुचि लेना और उन्हें मजे से सुनना और सुनाना, देखी, सुनी और पढ़ी गई बातों को अपनी भाषा में कहना, उसके बारे में विचार करना और अपनी प्रतिक्रिया या टिप्पणी मौखिक और लिखित रूप से व्यक्त करना, सुनी और पढ़ी कहानियों और कविताओं को समझकर उन्हें अपने अनुभवों से जोड़ पाना तथा उन्हें अपने शब्दों में कहना और लिखना, स्तरानुसार कहानी, कविता या अनुभव के स्तर पर किसी स्थिति का निष्कर्ष या उपाय निकालना, लिपि–चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर और समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिखने का प्रयास करना, चित्र और संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाते हुए पढ़ना आदि) को हासिल करने में बाल साहित्य की भूमिका अनिवार्य लगती है।

शोध और फील्ड के अनुभव बताते हैं कि ऐसे बाल साहित्य को बच्चे अधिक पसंद करते हैं, जो उनकी दुनिया से जुड़े हों। आनंद देने के साथ कौतूहल, संघर्ष, चुनौती, रोमांच से भरी हो। कॉमिक्स और कार्टून को पसंद किया जाना इसका एक आधार हो सकता है। विविध शिल्प में तराशे गये बाल साहित्य चित्र, कविता, कहानी के जरिये बच्चों की दुनिया से आसानी से जुड़ जाते हैं। बच्चों की प्रवृत्ति जिज्ञासु और खोजबीन वाली होती है। बच्चों को किताबें भी ऐसे ही पसंद आती हैं, जिसमें कुछ रहस्य छुपा हो। ऐसे बाल साहित्य उत्कृष्ट होते हैं जो बच्चों को सोचने–समझने–अभिव्यक्त करने पर विवश करे न कि पहले से निर्धारित निष्कर्ष पर पहुंचाता हो। ऐसा बहुत सा बाल साहित्य है जिसे बार–बार पढ़ने का मन करता है और हर बार नए तरह की सोच पैदा होती है जैसे ईदगाह, बिल्ली के बच्चे, कजरी गाय और चार दोस्त आदि।

जी ललचाये रहा ना जाए– एकलव्य, बरखा सीरीज, नेशनल बुक ट्रस्ट, प्रथम संस्था और इकतारा प्रकाशन के अनेक बाल साहित्य बच्चों को आनंद देने के साथ दुनिया को देखने–समझने के अनेक नजरिये देते हैं। ***भालू ने खेली फुटबाल, पहाड़ जिसे चिड़िया से प्यार हुआ, खिचड़ी, बिल्ली के बच्चे, एक अनोखी राजकुमारी, पहाड़ और परी का सपना, चौड़े मुंह वाली मेंढकी, घुड़सवार, बालटी के अंदर समन्दर, ऊलजलूल, आखिर भेड़िये को दुष्ट क्यों कहते हैं, कहानी केलों की, सो जा उल्लू, बिक्सू, महागिरी, चार चने होते, छुपमछुपाई, लकड़ी की काठी, बहुत जुकाम हुआ नंदू को, पैसा पास होते तो चार चने लाते, स्कूल में प्रणव का पहला दिन*** जैसी शानदार किताबें किसी का भी मन मोह लेने की क्षमता रखती हैं। इनसे जुड़ी विविध गतिविधियां बच्चों को स्कूल में मन लगाने, ठहराव के साथ बैठने, पढ़ने–लिखने की दुनिया से जोड़ने, अनुभव को जोड़ने, नये शब्दों से गुजरने, संवाद करने और आनंद के साथ सृजन करने के भरपूर मौके देते हैं।

'स्कूल में प्रणव का पहला दिन' बच्चों के स्कूल आने के एहसास को समझने में मदद देता है। ***'बिक्सू'*** झारखण्ड राज्य के एक गाँव से बोर्डिंग स्कूल में पढ़ने के लिए निकले विकास कुमार उर्फ बिक्सू की कहानी है जिसे दाखिले के बाद अपने बँधे होने का अहसास होता है। इस बँधन में गाँव की याद है और आँसुओं की धार भी है। लेकिन रोने का सिलसिला भी रुकता है और बिक्सू को आगे बढ़ने की राह भी मिलती है। वह रास्ता होता है लोगों से दोस्ती करने का। इस दोस्ती का सफर कहाँ तक जाता है इस किताब में पढ़ सकते हैं। मधुबनी शैली में बने चित्र आकर्षक हैं। खेल से जुड़ी गतिविधियों के साथ ***'भालू ने खेली फुटबॉल'*** जैसे साहित्य आनंद के साथ पढ़ने की दिशा में एक कदम रखने जैसा होगा। इसमें बच्चों द्वारा खेले जाने वाले खेलों की सूची बनवाना लिखने का काम हो सकता है। प्रत्येक खेल की प्रक्रिया लिखना और उसे बोलकर पढ़ना, लिखे हुए को दीवार पत्रिका पर चस्पा करना एक रोचक गतिविधि हो सकती है। इसी तरह बच्चों के साथ मिलकर नये–नये खेल, उसके नियम बनाना, खेल को नाम देना, उससे जुड़े चित्र बनाना जैसी सहज गतिविधियां हो सकती हैं। इसमें अभी के सन्दर्भ में प्रत्येक कक्षा में अक्षर–मात्रा की गलतियां करने के भरपूर मौका देना जायज लगता है।

बात करने से बनती है बात। अभी की परिस्थिति में सबसे अधिक जरूरत बच्चों से संवाद कायम करने की है। वे चाहते हैं कि उनके एहसास को सुना जाए। इससे मैत्री की भावना भी प्रगाढ़ होगी। बाल साहित्य बच्चों को आजादी के साथ अपनी बात, अनुभव एवं प्रतिक्रिया को मौखिक और लिखित रूप से व्यक्त करने का अवसर देता है। चर्चाओं से उनकी नए शब्दों के अर्थ बूझने की आदत को गति मिलती है। वे बेहतर अनुमान लगा पाते हैं। बातचीत में चित्र, शीर्षक, कहानी, कविता का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। इसे पढ़ने–लिखने का जरिया बनाया जा सकता है। कक्षा तीन की आरिफा अब कक्षा पांच में पहुंच चुकी है। किताबों की दुनिया से बढ़ी दूरियों को पाटने की कोशिश करती नजर आ रही है। ***'चाय', 'जलेबी', 'दूध जलेबी जग्गग्गा'*** साहित्य पर थोड़ी बातचीत करने और प्रोत्साहित करने पर खुद से अपनी पसंदीदा 'बाल मिठाई' पर कविता गढ़ने का आत्मविश्वास पा रही है। इसी तरह थोड़ी बातचीत करते हुए अशुद्धियों को अनदेखा करके बच्चों को चिट्ठी लिखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। स्कूल खुलने से पूर्व की परिस्थिति और स्कूल आने पर उन्हें कैसा महसूस हो रहा है, बातचीत का एक सन्दर्भ हो सकता है।

अक्षर–मात्रा पहचान के रोचक तरीके–

कविता–कहानी में आये आसान शब्दों से बच्चों को अक्षर मात्रा की पहचान कराने की रोचक गतिविधि हो सकती है। कविता–कहानी में आये पात्रों, वस्तुओं पर शुरुआती

कक्षाओं के बच्चे मुक्त रूप से गोदागादी और मनपसंद आकृतियां गढ़ते हैं। इससे उनके हाथ की मांसपेशियां लचीली और लिखने की प्रक्रिया रोचक बनती है। बच्चे उन आकृतियों को पहले बनाते हैं, जो उनके देखे हुए और परिवेश में उपलब्ध होते हैं।

आजादी के साथ पढ़ने–लिखने के अवसर– स्कूल में प्रतिदिन प्रदर्शित बाल साहित्य से बच्चों को स्वयं से पुस्तकों को चुनने और उससे गुजरने के लिए निरंतर प्रेरित करते रहना चाहिए। इससे किताबों के प्रति उनमें मोह पैदा होगा। मौखिक और लिखित रूप से पढ़ी सामग्री पर अपनी मौलिक राय रखने के साथ धीरे–धीरे पुस्तकों के अंदर की बहुरंगी दुनिया को जल्दी से जान लेने जिज्ञासा होगी। इससे साप्ताहिक पढ़ी गयी पुस्तकों की सूची तैयार करना, *'मेंढक का नाश्ता'* जैसी छोटी कहानी पर एकल अभिनय करना, समूह में मिलकर रोल प्ले करना, जोड़े में पढ़ना–राय बनाना, मिलकर कहानी–कविता का मौलिक लेखन करना, चित्र रूप में अभिव्यक्त करना, प्रश्नावली तैयार करना, शब्दकोश तैयार करना, पहेलियां लिखने, स्थानीय किस्सागो को स्कूल में आमंत्रित कर बच्चों से धैर्य से सुनने और साक्षात्कार रूप में प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना जैसी गतिविधियां स्कूल में आनंद के साथ सृजन करने का वातावरण बनाने में सहायक होती हैं।

शिक्षक और अभिभावक की भूमिका– लॉकडाउन से उभरी इस परिस्थिति में बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए शिक्षक और समुदाय दोनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। एक मार्गदर्शक के रूप में सीखने–सोचने–समझने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करने और मैत्रीपूर्ण व्यवहार करने जैसी भूमिका अनिवार्य है। इस सन्दर्भ में 'स्कूल में आज तुमने भला क्या पूछा' जैसे साहित्य सहायक साबित हो सकते हैं। यदि निरन्तरता में बच्चों के साथ मिलकर शिक्षक बाल साहित्य पढ़ते हैं और पढ़कर अपनी राय और अनुभव साझा करते हैं तो बच्चों में पढ़ने की रुचि बढ़ती है। इसके साथ ही बिना झिझक और भय के अपनी बातों को साझा करने में उनका आत्मविश्वास भी दोगुना होता है।

बाल साहित्य से जुड़ते हुए बच्चों के अनुभव को डायरी लेखन, लॉकडाउन के अनुभव पर लेखन, पत्र लेखन, यात्रा वृत्तान्त या समाचार लेखन के रूप में व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना भी पढ़ने और लिखने की दुनिया को सरल और सहज बना देती है। शिक्षक, बच्चे और अभिभावक मिलकर लोकगीतों और लोककथाओं का संग्रह कर सकते हैं। स्कूल में मौजूद सारे बाल साहित्य से खुद गुजर जाने और बच्चों को गुजार लेने के बाद दूसरे स्कूल के बाल साहित्य से अदला–बदली की जा सकती है। इस तरह से न तो किताबों का टोटा होगा और बच्चों के लिए किताबें कभी बासी भी नहीं होगी। बच्चों के साथ बैठकर किसी तुकांत कविता की लय–धुन तैयार कर उसे गाया जा सकता है। ऐसे ही मिलकर उत्कृष्ट कहानियों पर नाट्य भी तैयार कराया जा सकता है।

किताबें बच्चों की पहुंच में– बच्चों के सहयोग से किताबों को उनके पहुंच में व्यवस्थित करना चाहिए ताकि वे निसंकोच भाव से उसे उठाकर उलट–पलट सकें। आकर्षक सजावट और बच्चों के खुद की कलात्मकता–सृजनात्मकता–मौलिकता से सजे किताबों के कोने अनायास ही मन मोह लेते हैं। इससे उन्हें अपनापन लगता है, लगाव पैदा होता है और वे स्वयं से उसके रख–रखाव व नियमित संचालन की जिम्मेदारी ले लेते हैं। धीरे–धीरे वे किताबों को घरों में ले जाते हैं। अपने अभिभावकों और छोटे भाई–बहनों को दिखाते और सुनाते हैं। बाल लाइब्रेरी में उन किताबों अथवा सामग्री को शामिल करना अधिक ठीक होता है, जो पाठयपुस्तक में दी गई अंतर्वस्तु, थीम का विस्तार करती हो। जैसे यदि पाठयपुस्तक में मानसून पर कोई कविता है तो बारिश पर आधारित कहानियों, कविताओं और यहां तक कि मौसम का अनुमान बताने वाली किताबों को पढ़ने के कोने में शामिल करना एक सार्थक तरीका हो सकता है।

इस तरह से वैविध्यपूर्ण बाल साहित्य बच्चों के सामने भाषा का एक जीवंत संसार लाता है। उससे बच्चों में पढ़ने की आदत का विकास करने, समझ के साथ पढ़ने की क्षमता का विकास करने, भाषा शिक्षण की आधारभूत दक्षताओं को हासिल करने, सहज अभिव्यक्ति करने की क्षमता का विकसित करने, तरह–तरह के टेक्स्ट की सामग्री की समझ बढ़ाने के साथ सृजनात्मक क्षमता (चित्र बनाना, पात्र, घटना, स्थान आदि बदलकर कहानी से कविता या कविता से कहानी, कहानी को आगे बढ़ाना, कहानी का हाव भाव के साथ प्रस्तुतिकरण, चित्र से कहानी बता पाना) विकसित होती है। हर बच्चा अपनी गति से सीखता और अपनी शैली में व्यक्त करता है। जरूरत है रोचक प्रक्रियाओं और उचित संसाधनों को अपनाने की। उन पर विश्वास करने के साथ–साथ समय, अवसर और आजादी देने की।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन टिहरी, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)।

किस्सा पोटली वाला

लॉकडाउन के बाद जब स्कूल खुले तो पोटली की किताबों ने बच्चों को फिर से पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया से जोड़ने की भूमिका उठा ली है। बच्चे कहानियों के जरिये भूली हुई दक्षताओं की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।

– उषा पन्त

पोटली की पुस्तकों को बच्चों के सामने खोलने से पहले बच्चों से पोटली पर बात की। बच्चों से पूछा कि पोटली क्या है? पोटली से वे क्या समझते हैं? इस पोटली में क्या होगा? बच्चों के विचार इस तरह थे–

- इसमें खाने का सामान होगा
- कुछ बच्चे कह रहे थे कोई जादू होगा
- कुछ बच्चों ने कहा कि कपड़े होंगे

हर बच्चे का अपने–अपने हिसाब से पोटली पर खयाल था। इसको लेकर उनकी कुछ न कुछ समझ हर बच्चे की थी। इसके बाद पोटली खोली गई और उसमें कहानी की किताबें निकलीं। बच्चे कहने लगे कि हम समझ गये थे कि मैडम की पोटली है तभी तो किताबें निकलीं।

इसके बाद सभी बच्चों को बुलाया और उनके सामने सभी किताबें फैला दीं। उनसे, उनकी पसंद की किताब उठाने को कहा। बाल साहित्य तो हमारे विद्यालयों में भी होता है लेकिन पोटली की पुस्तकें काफी आकर्षक हैं। बच्चे पुस्तकों को बहुत उत्सुकता से उलट–पुलट रहे थे। बच्चे प्रत्येक पुस्तक को देखना चाह रहे थे। मैंने बच्चों से कहा कि एक बच्चा एक पुस्तक ले जा सकता है। उसको पढ़ो फिर दूसरी ले जा सकते हो।

इसके बाद सभी बच्चों ने अपनी पसंद की पुस्तक ले ली और उसको पढ़ने लगे। बच्चे बिलकुल शांत होकर पढ़ रहे थे। इसके बाद बच्चों के साथ पढ़ने की घंटी तय की। विद्यालय में दिन का एक वक्त पढ़ने के लिए निश्चित किया गया। प्रतिदिन बच्चे खुद ही अपनी पसंद की पुस्तक ले लेते और पढ़ते। बड़े बच्चे छोटे बच्चों को भी पढ़कर सुनाते। यह क्रम चलता रहा। अब बच्चे पढ़ी हुई कहानियों पर बात करने लगे थे। अपनी कहानी को सुबह की सभा में सुनाने लगे थे। खुद की जिन्दगी से भी कहानी को जोड़ पा रहे थे। जैसे यदि कोई कहानी जानवर के विषय में थी तो उसे वे अपने घर के जानवरों से जोड़कर देख पा रहे थे।

इस तरह बहुत मजेदार अनुभव रहे। पोटली की ये कहानियां हर आयु वर्ग के बच्चों के लिए हैं। छोटे बच्चों के लिए चित्र आधारित कहानियां हैं। इसके बाद एक–एक वाक्य और ज्यादा चित्र वाली। इसी क्रम में फिर लम्बी कहानियां। बच्चों की समझ के अनुसार हैं ये बाल कहानियां। पोटली में समाहित किस्से कहानियों वाली ये पुस्तकें बच्चों के लिए एक अलग ही उत्सुकता और कल्पनाशीलता का निर्माण करती हैं। बच्चों के मतलब की कई कहानियां हैं जो उनके लिए एक पूरा संसार रचती हैं। एक ओर अरब देश की कहानियां वहां की वेशभूषा और उनके कार्यों का वर्णन है तो दूसरी ओर अंडमान के बारे में ये कथाएं हमको बतलाती हैं। कुल मिलाकर बच्चों को इनको पढ़ने और सुनाने में बहुत मजा आया। दूसरी तरफ बिल्ली के बच्चे जैसी बड़ी किताबें जिनमें चित्रों की अधिकता जिसमें बच्चे खुद आकर्षित होते हैं।

कशिश तोमर, कक्षा–5, राजकीय प्राथमिक विद्यालय भोजावाला, विकासनगर देहरादून

पोटली से पहले भी बच्चे लिखते–पढ़ते थे लेकिन पोटली के दौरान उनमें पढ़ने की ललक पैदा हुई। पढ़ने को लेकर और उसकी अभिव्यक्ति को लेकर वे जागरूक हुए। बड़े बच्चों का छोटे बच्चों को कहानी सुनाना बड़ा ही रोचक था। छोटे बच्चों के साथ चित्र कहानी पर बात करने से वे भी किताबों की ओर आये। लॉकडाउन के बाद जब स्कूल खुले तो पोटली की इन किताबों ने बच्चों को फिर से पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया से जोड़ने की भूमिका उठा ली है। बच्चे कहानियों के जरिये भूली हुई दक्षताओं की ओर कदम बढ़ा रहे हैं।

लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय मौना नावली, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में शिक्षिका के पद पर है।

बाल साहित्य देता है बातचीत के अवसर

सबसे जरूरी है बच्चों को बाल साहित्य पढ़ने के मौके देना। इसके लिए पढ़ने की घंटी निर्धारित करना। मौखिक बातचीत एवं पुस्तकें पढ़ने से उनके लेखन में भी निखार देखने को मिलता है।

–साहबउद्दीन अंसारी

कोविड के कारण बच्चे पिछले काफी समय से टेक्स्ट से दूर हैं। उन्हें पढ़ने के लिए पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पाई हैं। इसकी भरपाई एकदम से नहीं की जा सकती है। बाल साहित्य को एक मजबूत विकल्प के तौर पर देख सकते हैं। पुस्तकालय में उपलब्ध बाल साहित्य को नियमित रूप से पढ़ने के लिए देना एक तरीका हो सकता है जिससे वे फिर से परिचित हो पायेंगे। इसके लिए योजनाबद्ध रूप से कार्य करना होगा। बच्चों को नियमित पढ़ने के मौके देने होंगे। अपने टाइम टेबल में पढ़ने की घंटी का निर्धारण कर बच्चों को उनके स्तर की पुस्तकें पढ़ने को दी जाएं। उन्हें विद्यालय में तो पुस्तकें दी ही जाएं इसके साथ ही घर ले जाने के लिए और उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करने कि भी आवश्यकता है। इस पर बच्चों से जरूर बात हो कि वे जो पुस्तकें ले गए थे उन्हें पढ़ा या नहीं?कहां चुनौती आई और उसमें क्या मजेदार था? इससे बच्चे इन पुस्तकों को पढ़ने को प्रेरित होंगे, और उनका रुझान बढ़ेगा।

विद्यालय भ्रमण के दौरान विद्यालय में प्लास्टिक की डोरी के सहारे दीवार पर टंगी पुस्तकें सहसा अपनी ओर ध्यान आकर्षित कर रही थीं। वही बगल में एक चार्ट टंगा था जिसमें एक तरफ बच्चों के नाम एवं ऊपर पुस्तक संख्या लिखी थी। बच्चे कौन सी पुस्तकें पढ़ चुके हैं उसकी एक झलक देखने को मिल रही थी। बच्चों ने अपने द्वारा पढ़ी गई पुस्तक के आगे तिथि दर्ज कर रखी थी।

विद्यालय में पुस्तकों को रखने के लिए अलमारी तो है और उसमें बरखा सीरीज, एकलव्य प्रकाशन, जुगनू प्रकाशन, एन.बी.टी. प्रकाशन एवं अन्य पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएं रखी हैं जिनकी संख्या 450 से अधिक है। जिन्हें समय–समय पर बदल–बदल कर बच्चों को उपलब्ध कराया जाता है। स्कूल विजिट के दौरान बाल पुस्तकालय संचालन के अनेक तरीके देखने को मिल जाते हैं। कहीं इन पुस्तकों को करीने से अलमारी में रखा जाता है, एक रजिस्टर बनाया जाता है जिसमें इन पुस्तकों के लेन–देन का ब्योरा होता है तो कहीं बिना किसी लाग–लपेट के सीधे बच्चों की पहुंच में होती हैं। इसे ऐसे ही छोड़ देने से कुछ नुकसान हो सकते हैं। लेकिन जब बच्चों को इसके लिए जिम्मेदारी दी जाती है और बात की जाती है तो नुकसान की सम्भावना कम हो जाती है। इससे इन पुस्तकों के रख–रखाव की जिम्मेदारी बच्चे खुद ही ले लेते हैं और यह सीधे उनकी पहुंच में आ जाती हैं। समय–समय पर पुस्तकों को खरीदा जाता है जिससे इनकी संख्या बढ़ रही है। जब तक पुस्तकें बच्चों की पहुंच में नहीं होंगी तब तक बच्चों में इन पुस्तकों के प्रति रुझान नहीं बन पायेगा। बच्चे पढ़ी गई पुस्तक के बारे में अपने अनुभव बताते हैं साथ ही प्रश्न भी करते हैं।

बच्चों के साथ पुस्तकों पर बातचीत जरूरी है इससे बच्चों ने कितने गहराई से पढ़ा है और क्या समझ बनी है इसका अंदाजा लग जाता है। जिन पुस्तकों को बच्चों को पढ़कर सुनाया जाता है वे उसे पढ़ने को लालायित रहते हैं। कई बार तो इन पुस्तकों को पढ़ने की इतनी होड़ होती है कि इसके लिए लॉटरी निकालनी पड़ती है। सबसे जरूरी है कि बच्चों को इसे पढ़ने के मौके देना इसके लिए पढ़ने की घंटी निर्धारित करना। विद्यालय में लंच के बाद का 30 मिनट का समय स्वतंत्र पठन के लिए निर्धारित है। बच्चे अपनी पसंद की पुस्तकें लेकर पढ़ते हैं। बच्चे जो पुस्तकें पढ़ते हैं उस पर बातचीत होती है। मौखिक बातचीत एवं पुस्तकें पढ़ने से उनके लेखन में भी निखार देखने को मिलता है।

कक्षा 1 व 2 के बच्चों ने फल से सम्बंधित पुस्तकें पढ़ी हैं। इस पर कक्षा में बातचीत शुरू की गई। उनसे पूछा गया कि तुम्हें यह कहानी क्यों पसन्द आई। इसी बीच एक बच्चे ने कहा कि हम केले की पूजा करते हैं। इस पर पूछा कि केले की पूजा करते हैं कि केले के पेड़ की? बच्चे ने बताया कि केले की पूजा करते हैं। जब हम आरती करते हैं तो केले को रखते हैं। किसकी आरती करते हैं? भगवान् की आरती करते हैं। क्या कभी आपकी भी आरती उतारी गई है? हां। तो क्या आप भगवान हो? नहीं लेकिन जब राखी बांधते हैं तब आरती उतारते हैं। कब–कब आरती उतारते हैं? जब कोई मर जाता है तब आरती उतारते हैं। नया घर बनाने पर, दुकान खुलने पर और जब बच्चा जन्म लेता है तब उनकी आरती उतारते हैं। कभी–कभी मम्मी भी आरती उतारती हैं। वह कब आरती उतारती हैं और कैसे? बच्चों ने बताया कि मम्मी डंडे से आरती उतारती हैं, जब हमसे नाराज हो जाती हैं या हम कोई गलती करते हैं तब हमारी डंडे से आरती उतारी जाती है। ज्यादातर बच्चों ने इस अनुभव को साझा किया। बच्चे डंडे से आरती उतारने वाली बात पर हंस दिए। आगे पूछा गया कि जब हम गलती करते हैं तो मम्मी डंडे से आरती उतारती हैं तो क्या भगवान भी गलती करते हैं? नहीं पर बड़े कहते हैं कि जब हम मंदिर में जाते हैं तो हमें शोर नहीं मचाना चाहिए नहीं तो भगवान नाराज हो जाते हैं। इस पर एक बच्चे ने कहा कि मम्मी हमें मार सकती हैं क्योंकि उनके अन्दर ममता होती है। इस पर बात करने पर और समझ में आया कि मम्मी प्यार भी तो करती है तो वह मार भी सकती है।

जब तक पुस्तकें बच्चों की पहुंच में नहीं होंगी तब तक बच्चों में इन पुस्तकों के प्रति रुझान नहीं बन पायेगा। बच्चे पढ़ी गई पुस्तक के बारे में अपने अनुभव बताते हैं साथ ही प्रश्न भी करते हैं। बच्चों के साथ पुस्तकों पर बातचीत जरूरी है इससे बच्चों ने कितने गहराई से पढ़ा है और क्या समझ बनी है इसका अंदाजा लग जाता है।

इस चर्चा को आगे बढ़ाया गया और पूछा कि क्या फलों से सम्बंधित कोई दूसरी कहानी पढ़ी है या सुनी है? इस पर बच्चों ने बताया कि उन्होंने "पका आम" कहानी सुनी है और पढ़ी भी है। इस कहानी पर थोड़ी बात की गई। बच्चों ने अपने अनुभव रखते हुए कहा कि उन्हें आम पसंद है। इस पर शुरू में आम का रंग और पकने पर उसका रंग क्यों बदल जाता है इस पर बात की गई। बच्चों से पूछा कि आम कैसे पकता होगा? बच्चों ने अपने–अपने अनुभव् रखते हुए कहा कि बारिश, धूप, गर्मी, पानी से आम पकता है। एक बच्चे ने कहा कि केले को कार्बेट से पकाते हैं, आम को भी पकाते हैं। आम को पकाने के लिए और क्या करते हैं? इस पर बच्चे ने बताया कि आम को भूसे में रखने से भी पक जाता है। इस पर और बात करते हुए प्रश्न पूछे जिससे बच्चे यह निकाल कर लायें कि आम को पकाने के लिए कार्बेट का उपयोग करते हैं उसमें से गैस निकलती है जो आम को पकाती है।

कहानी "छुपन छुपाई" पढ़कर सुनाई, उसके बाद एक सवाल पूछा गया कि जब आप विद्यालय से घर जाते हो और मम्मी नहीं दिखाई देती है तब वे उन्हें कहां–कहां ढूंढते हैं। उन्हें ढूंढने के लिए वे घर, पड़ोस और चाचा के घर जाते हैं। कहानी को हाव–भाव के साथ ही बीच–बीच में प्रश्न भी पूछती हैं। कहानी के अंत में उन्होंने पूछा कि कहानी में मम्मी को ढूंढने के लिए किरण ने कहां–कहां देखा? बच्चों ने कहानी के क्रम के अनुसार बताया जिसमें किचन, बेडरूम, बाथरूम, फ्रिज आदि। फिर मैडम ने कहा जिस प्रकार इस कहानी में मां ने किरण को झप्पी दी क्या आपकी मम्मी भी झप्पी देती हैं और कब? इस प्रश्न के जवाब बहुत ही रुचिकर थे और सभी बच्चों ने इसके जवाब दिए। कक्षा 4–5 के बच्चे इसके जवाब तो दे ही रहे थे परन्तु कक्षा 2–3 के बच्चों ने बहुत सुन्दर जवाब दिए। कुछ ने कहा कि जब हम उनका हाथ बंटाते हैं, मदद

करने पर, झाड़ू लगाने पर, बर्तन धोने पर झप्पी देती हैं। छोटे बच्चों ने बताया कि जब मम्मी का मूड़ (सर) दबाते हैं, पैर दबाते हैं तब मम्मी झप्पी देती हैं। जब मम्मी बीमार होती हैं और उनकी देखभाल करते हैं पानी लाकर देते हैं तब झप्पी देती हैं। जब मम्मी मामा के घर से आती है तब झप्पी देती हैं।

इस पूरी बातचीत से हम देखें तो बच्चे अपने घर की भाषा का उपयोग कर रहे थे जैसे मूड़ (सर), लौंडा (लड़का) आदि इन शब्दों को ऐसे ही स्वीकार किया। और उसके बोलने पर कोई रोक नहीं लगाईं और न ही उसे सुधारने का प्रयास किया। इसलिए बच्चे खुशी–खुशी अपनी बात को रख रहे थे। हम सार्थक सन्दर्भ की बात करते हैं और कहते हैं कि मौखिक भाषा के विकास के लिए बच्चों के अनुभवों से जुडाव होना चाहिए। बच्चों के साथ बातचीत में यह बात साफ–साफ देखने को मिलती है।

अक्सर बच्चों की आपसी बातचीत को ही बातचीत मानते हैं। इसको कक्षा में कम स्थान देते हैं। साथ ही यह भी लगता है कि छोटे बच्चों के साथ क्या बात की जाय, कितनी देर बात की जाय आदि। परन्तु शिक्षाविद कहते हैं कि बच्चों के साथ सार्थक सन्दर्भों में बात करनी चाहिए। हमें क्या बात करनी है? इसकी एक लिखित योजना हो तो बातचीत को दिशा देने में मदद होती है और भटकाव कम हो जाता है। यदि चर्चा इधर–उधर हो भी जाय तो फिर से हम मूल मुद्दे पर आ जाते हैं। कविता कहानी पर काम करते समय बहुत से प्रश्न और मुद्दे हमें मिल ही जाते हैं जिन पर बच्चों के साथ सार्थक बातचीत किया जा सकता है। हम जिन कहानियों पर काम करना चाह रहे हैं उसे पहले से पढ़ लें और उसमें क्या प्रश्न पूछे जा सकते हैं? किस तरह के प्रश्न स्वाभाविक रूप से किये जा सकते हैं वह समझ में आ जाता है। कहानी सुनाते समय कहां रुकना है, क्या प्रश्न करना है? यह हमें पता चल जाता है। बच्चों के साथ कितनी बात की जाय, कितना उन्हें कल्पना करने के मौके दिए जाय और किस स्तर पर किया जाय? यह अपने आप में प्रश्न है। परन्तु बच्चों के साथ जिनकी आयु 6–7 वर्ष है उनके साथ और किस इस तरह के प्रश्न किये जा सकते हैं? लिपि ज्ञान, सार्थक सन्दर्भ में बच्चों के साथ बातचीत एवं रीडिंग कॉर्नर, टेक्स्ट का एक्सपोजर देने की आवश्यकता है। बच्चों में पढ़ने के प्रति उत्साह जगाने के लिए उन्हें उनके स्तर के अनुसार कहानी की पुस्तकें उपलब्ध करवाने से वे अनुमान लगाकर पढ़ने की ओर अग्रसर होने लगते हैं। सभी कक्षा के बच्चों को कहानी की पुस्तकें पढ़ने को मिलें जिससे बच्चे टेक्स्ट के संपर्क में रहे और वे चित्र देखकर, कुछ शब्दों, वाक्यों को अनुमान लगाकर पढ़ सकें। पढ़ी हुई कहानी को अपने शब्दों में बता पायें और कुछ लिखित रूप में भी अभिव्यक्त कर पायें। बच्चों के साथ बातचीत का उनके लेखन में भी दिखाई देता है।

तनिशा, कक्षा–5, राजकीय प्राथमिक विद्यालय जीवनगढ़ विकासनगर, देहरादून

इस प्रक्रिया में प्लानिंग का होना महत्वपूर्ण है। हमें यह पता होता है कि कौन बच्चा किस स्तर पर है और उनके साथ क्या किये जाने की जरूरत है? जो बच्चे पढ़ने–लिखने में कमजोर होते हैं उनके साथ अलग से समय देना आवश्यक है। जब बच्चे कहानी पढ़ रहे हों उस समय ऐसे बच्चों को अपने पास बैठकर उन्हें पढ़ने के लिए कहना। इससे बच्चे को अलग से समय मिल जाता है और शिक्षक ऐसे बच्चों को मदद भी कर रहे होते हैं। इन बच्चों के लिए छोटी एवं उनके स्तर की कहानी का चयन करना होता है जिससे बच्चे उसे पढ़कर समझ सकें और उन्हें आनंद आये। एक बार उन्हें पढ़ने का चस्का लग जाए और आनंद आने लगे तो वे अन्य पुस्तकों को भी अनुमान लगा कर पढ़ने लगते हैं। यह हम सभी ने महसूस भी किया होगा कि जब बच्चे पढ़ने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं तो वे अपने साथियों से पूछते भी हैं। कुछ बच्चे दूसरे के द्वारा पढ़ी जा रही कहानी को सुनते हैं। जब उन्हें मौका मिलता है वे उस कहानी को पढ़ना चाहते हैं और पढ़ते हैं।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)

मन रम जाये किस्सों की दुनिया में

फोटो– पुरुषोत्तम

– योगेश राज

कोरोना के समय हुई स्कूलबंदी के बाद बच्चों की सीखने की दक्षताओं में जिस तरह की क्षति हुई है उसे दूर करने में शिक्षक बाल साहित्य का उपयोग कर रहे हैं और इसे बहुत उपयोगी पा रहे हैं।

स्वस्थ बाल साहित्य का काल्पनिक रंग–बिरंगा चित्रांकित संसार बच्चों को उनके वास्तविक जीवन से जुड़े विचारों और मुद्दों से अवगत कराता है जो शायद अभी तक उनके लिए अनदेखी हो, या उनकी कल्पनाओं से परे है। कक्षाकक्ष के अनुभवों में अक्सर यह देखा गया है कि बच्चे स्कूल में पाठयपुस्तकों की तुलना में बाल साहित्य की पुस्तकों को ज्यादा प्राथमिकता या तवज्जो देते हैं, यह अनुभव किया जा सकता है और शायद वर्तमान में विद्यालय कक्षाकक्ष में अनुभव किया भी जा रहा है कि बच्चे अक्सर विद्यालय के पुस्तकालय से बाल साहित्य की पुस्तकों को अपने घर ले जाने के लिए अपने शिक्षकों से बार–बार अनुरोध करते रहते हैं।

बच्चों में स्वतंत्र पाठन की अवधारणा उनकी स्कूली पाठय पुस्तकों की अपेक्षा बाल साहित्य की पुस्तकों में अधिक देखी जा सकती है। क्योंकि बच्चे जब स्कूली पुस्तकों को पढ़ते हैं तो कहीं न कहीं उनके मन मस्तिष्क के भावों में यह रहता है कि उनको इस पाठ को पढ़ने के बाद इस पाठ से संबंधित प्रश्नों के उत्तरों को लिखना है, हल करना है। अतः एक सीमित दायरा उस पाठ को लेकर उनके मन मस्तिष्क में बन जाता है और उनका यही नज़रिया उस पाठ में निहित अन्य शैक्षिक दक्षता सम्बंधी उद्देश्यों के व्यापक दृष्टिकोण को तिलांजलि देता है। जबकि बाल साहित्य की पुस्तकों को पढ़ते समय उनके मन मस्तिष्क में उपरोक्त सीमित दायरा नहीं बन पाने के कारण वे एक स्वतंत्र पाठक के रूप में कहानी कल्पनाओं को अपनी वास्तविक जीवन या उसकी घटनाओं को अपने परिवेश से जोड़ पाते हैं शायद यही आनंद उनकी जिज्ञासा का कारण भी बन जाता है।

हालांकि वर्तमान की स्कूली पाठ्यपुस्तकों में ऐसा नहीं है लेकिन एक सोच परंपरागत रूप से शिक्षण कार्य करने और कराने वाले दोनों के अंदर कहीं न कहीं बन गई है कि बच्चे वर्ण को रटकर समझ लें ताकि वह शब्दों को पढ़ना और लिखना सीख जाएं। जब वो पढ़ना–लिखना सीख जाएंगे तब आगे का शिक्षण कार्य आसान हो जाएगा क्योंकि फिर वह किसी भी पाठयपुस्तक को पढ़ लेगा और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिख देगा, क्या यह

उचित है? हमें इस विचार को आत्मसात करना ही होगा कि समझना, पढ़ने से ज्यादा व्यापक है हालांकि दोनों जरूरी है। मगर जब हम समझ के स्तर दक्षता की बात करते हैं तो हम कई अन्य भाषाओं से संबंधित शैक्षिक दक्षताओं जैसे पठन, चित्र पठन, चित्र लेखन, शब्दों से कहानी बनाना, मनचाहे विषयों पर कहानी लिखना, किसी दिए गए परिवेश या अनुभव पर लिखना, कहानी पर चित्र बनाना, अपने विचार व्यक्त कर पाना आदि दक्षताओं की पूर्ति अपने शिक्षण कार्यों के माध्यम से बच्चों को करवा पाने में सफल हो पाते हैं।

आज मैं कक्षाकक्ष में जब बाल साहित्य की ओर उन्मुख होता हूं तो मेरी स्मृतियां मुझे अक्सर बालपन की ओर ले जाती हैं क्योंकि मैंने भी बचपन में अपनी पॉकेटमनी से कई रंग–बिरंगी पुस्तकों को खरीदा है उन्हें पढ़ा है। भले ही मैं उस समय बाल साहित्य की अवधारणा से अनजान था क्योंकि वह मुझे स्कूली पाठ्यक्रम की पुस्तकों की अपेक्षा ज्यादा आकर्षित करती थीं। साथ ही एक भय भी मेरे मन में रहता था कि मैं पाठ्यक्रम की पुस्तकों को छोड़कर अन्य बाल साहित्य की कहानी की पुस्तकों में समय व्यतीत करके अधिक समय नष्ट कर रहा हूं। मैं घर के आंगन या छत के किसी कोने को टटोलता था। इन पुस्तकों को पढ़ने के लिए। मैं अपने स्कूल के बस्ते में अन्य पाठ्यक्रम की पुस्तकों के साथ इन पुस्तकों को छिपाकर ले जाता था, लेकिन जब तब मुझे मौका या समय मिलता मैं इन पुस्तकों को पढ़ता था क्योंकि वह मुझे आनंदित करती थी। क्योंकि बाल साहित्य की पुस्तकों में कहानी कविताओं का काल्पनिक संसार होता है। इनमें लोक कथाओं कहानियों के अलावा अधिकतर जंगल के जानवरों उनके रहन–सहन को एक काल्पनिक व्यवस्थित समाज के रूप में दर्शाकर चित्रों की प्राथमिकता के साथ चित्रांकित किया जाता है क्योंकि बच्चे अपने घर पर भी इस तरह की कहानियां लोककथाओं को अपने दादा, दादी, नाना, नानी, मम्मी, पापा या घर के अन्य बड़े सदस्यों से सुन चुके होते हैं तो उनके मन मस्तिष्क में भी कई काल्पनिक भाव चित्र पहले से ही बने हुए होते हैं। जिसके कारण वो अनायास ही बाल साहित्य की इस काल्पनिक दुनिया में अपने आप को जोड़ लेते हैं और उनकी जिज्ञासा इन पुस्तकों की ओर बढ़ती चली जाती है। उनके मन में कई प्रकार के सवाल जन्म लेते हैं उनके मन में उठे हुए कई सवालों के जवाबों को वह इन कहानी कविताओं की काल्पनिक दुनिया में स्वयं का विवेक का इस्तेमाल करते हुए ढूंढने की कोशिश करते हैं। जिसका सीधा सीधा अर्थ है कि उन्हें तर्क करना आ रहा है। यही तार्किकता का दूरगामी शैक्षिक विकास उनके अंदर उच्च स्तरीय चिंतन की क्षमता का विकास करने में सहायक होता है।

मसलन मेरे द्वारा कक्षा दो, तीन, और चार के तीन बच्चों को चयन किया गया। उनमें से कक्षा 2 के बच्चे से पुस्तक रैक से कहीं से एक किताब का चुनाव कराया गया। उसके द्वारा एक पुस्तक जिसका शीर्षक मुनमुन और मुन्नू था। उपरोक्त पुस्तक को तीनों बच्चों को एक साथ अवलोकन करने के लिए दिया गया। लगभग 15 से 20 मिनट तक पुस्तक का अवलोकन किया। बच्चे चित्र आधारित पुस्तक का आनंद भाव के साथ अवलोकन कर रहे थे। तदुपरांत छात्रों से कहानी में आए पाठों के संदर्भ में वार्तालाप का क्रम प्रारंभ किया गया।

शिक्षक–बच्चों पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर आप क्या देख रहे हैं?

छात्र–लड़की, कबूतर, बिल्ली।

शिक्षक– लड़कियां कितनी हैं

छात्र– दो लड़कियां हैं।

शिक्षक– उनके नाम क्या है?

अधिकतर छात्र– रमा और रानी।

शिक्षक– इनमें रानी कौन है?

छात्र– जिसने हरे रंग की फ्रॉक पहन रखी है।

अन्य छात्र– जिसके बाल खुले हुए हैं।

शिक्षक अगले पृष्ठ की ओर बढ़ते हुए, बच्चों इस पृष्ठ पर पर क्या–क्या देख रहे हो?

छात्र (मिली जुली प्रतिक्रिया)– दो कबूतर देख रहे हैं, घरों को देख रहे हैं।

शिक्षक– कबूतर किसके घर में आए हैं?

छात्र– रमा के।

शिक्षक– आपने कबूतर देखे हैं?

छात्र– हां हमने अपने घर की छत में देखे हैं।

अन्य छात्र– मैंने स्कूल की छत में देखे हैं।

शिक्षक– कबूतर को देखने कौन आया है?

छात्र– रमा देखने आई।

शिक्षक–रमा ने कबूतरों के अलावा और क्या देखा?

छात्र– घोंसला।

शिक्षक–घोंसला किन–किन चीजों से बनता है?

छात्र अपनी स्थानीय भाषा में– पुराल से

शिक्षक कथन व्याख्या– घोंसला तिनकों से बनता है अधिकतर पक्षीं चोंच में तिनका पकड़कर लाते हैं और

अपना घोंसला बनाते हैं। कबूतर भी अपना घोंसला ऐसे ही बनाते हैं।

शिक्षक–पक्षी कौन होते हैं ?

प्रथम छात्र– जिनके पंख होते हैं।

द्वितीय छात्र– जो आसमान में उड़ते हैं।

अन्य छात्र– जो अंडे देते हैं।

शिक्षक– अंडे में क्या होता है?

मिली जुली छात्र प्रतिक्रिया– अंडे से चूजे निकलते हैं, पक्षियों के बच्चे निकलते हैं।

शिक्षक– क्या पक्षी अपने बच्चों को दूध पिलाता है?

छात्र– नहीं दाना खिलाते हैं।

शिक्षक–आपने चमगादड़ देखे हैं?

सभी छात्र– हां।

शिक्षक– चमगादड़ क्या है?

सभी छात्र– पक्षी।

शिक्षक–मगर चमगादड़ तो अंडे नहीं देता। तो चमगादड़ पक्षी क्यों है?

सभी छात्र निरुत्तर!

शिक्षक कथन व्याख्या–चमगादड़ अंडे नहीं देती ये सीधा बच्चों को जन्म देती है और उन्हें दूध पिलाती हैं इस प्रकार चमगादड़ दूध पिलाने वाला एकमात्र स्तनधारी प्राणी जानवर है जिसे फ्लाइंग फॉक्स यानी उड़ने वाली लोमड़ी भी कहा जाता है।

शिक्षक अगले पृष्ठ की ओर बढ़ते हुए– रमा कहां खड़ी है?

छात्र प्रतिक्रियाएं– डिब्बे के ऊपर खड़ी है। ड्रम के ऊपर खड़ी है।

शिक्षक– रमा क्या कर रही है?

छात्रा–कबूतर के घोंसले को देख रही है।

अन्य छात्रा– रमा कबूतर के घोंसले में अंडे को देख रही है।

शिक्षक– घोंसले में अंडे देखकर कौन खुश हुआ?

छात्रा– रमा और रानी।

शिक्षक– रमा और रानी के अलावा आंगन में कौन–कौन है?

छात्र–बिल्ली।

शिक्षक– बिल्ली का क्या नाम है?

छात्र– मुनमुन

शिक्षक– बिल्ली को किसने भगा दिया?

छात्रा– रमा ने भगा दिया।

शिक्षक– मुनमुन को दूध किसने पिलाया?

छात्र– रमा ने पिलाया

शिक्षक– रमा ने मुनमुन को दूध क्यों पिलाया होगा?

छात्र– क्योंकि बिल्ली का पेट भर जाएगा और वो शायद कबूतर के अंडे को नुकसान नहीं पहुंचाए।

शिक्षक– अंडे में दरार क्यों रही होगी?

छात्र– क्योंकि अंडे से कबूतर का बच्चा बाहर निकलने वाला था।

शिक्षक– रमा और रानी ने कबूतर के बच्चे का क्या नाम रखा?

सभी छात्र– मुन्नू।

इस तरह यदि हम देखें तो कबूतर, कबूतर का घोंसला, कबूतर के अंडे, अंडे से बच्चे का निकलना, घोंसले के अंडों पर बिल्ली का भय, यह सब आसपास की प्राकृतिक परिवेशीय घटनाओं का समाकलन उपरोक्त पुस्तक कहानी पर दिया गया है। शब्दों के साथ चित्र के माध्यम से। उपरोक्त संदर्भ में शिक्षक–छात्र वार्तालाप में अंडों को बचाने के लिए बच्चों द्वारा बिल्ली को दूध पिलाने के कारण प्रभाव में बच्चों के विवेक का आकलन किया जा सकता है। बिल्ली द्वारा कबूतर के बच्चों को नुकसान पहुंचाने के भय को बच्चों में भावनाओं और संवेदनशीलता के रूप में देखा जा सकता है।

जहां तक बाल सहित्य और पाठयपुस्तक के संबंध और कक्षाकक्ष में किए गए प्रयासों के संदर्भ की बात है, तो यही कहना चाहूंगा कि बच्चों की नैसर्गिक जिज्ञासा के कारण कुछ नया नहीं करना पड़ा क्योंकि बच्चे स्वयं ही बाल पुस्तकों को लेकर आनंदित रहते हैं। बाल साहित्य की पुस्तकों का मेरी समझ से एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यहां कहानियां, कविताओं को समझने के लिए किसी तकनीकी शाब्दिक भाषा की जरूरत नहीं होती क्योंकि यहां बच्चे चित्रों के माध्यम से अवधारणाओं को समझ लेते हैं। यहां बच्चे अपने आसपास के परिदृश्य के जाने–पहचाने दृश्यों को इन पुस्तकों में देखते हैं उनको समझते हैं और बोलकर अपनी भावनाओं को व्यक्त कर लेते हैं भले ही उन्हें भाषाई शब्दों का वर्ण शब्द तकनीकी ज्ञान अभी न हुआ हो लेकिन यहां बच्चों में सजगता की समझ, उच्च स्तरीय तार्किक चिंतन की क्षमता की विकासीय गतिशीलता को उनके अंतर हृदय में देखा जा सकता है, महसूस किया जा सकता है, जो निश्चित ही आगे चलकर उनकी भाषायी तकनीकी दक्षता को समझने में उनकी राह को प्रशस्त करेगा।

लेखक राजकीय प्राथमिक विद्यालय मढ़ैया देवी काशीपुर, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापक हैं।

पुस्तकालयों की भूमिका का महत्व

प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालयों के प्रयोग, पढ़ने की घंटी आदि की बात काफी होती है। इनके महत्व को हमने सीखने-सिखाने में देखा भी है। विशेषकर कोविड के बाद विद्यालय खुलने पर बच्चों के लर्निंग लॉस के सन्दर्भ में। उच्च प्राथमिक विद्यालयों में भी पुस्तकालयों की भूमिका का महत्व उतना ही बल्कि कई मायनों में बढ़ ही जाता है।

– कमलेश चन्द्र जोशी

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के एक समूह के साथ बात हो रही थी कि हम लोग तो अपने विद्यालयों में बच्चों को किताबें पढ़ने को देते रहे हैं। कुछ बच्चे किताबें घर भी ले जाते हैं वहां उनके कुछ घर के सदस्य भी किताबें पढ़ लेते हैं पर जब ये बच्चे जूनियर विद्यालयों में जाते हैं तो उन्हें पुस्तकालय की कोई सुविधा नहीं मिल पाती। इस कारण उनका किताबों से जो रिश्ता विगत वर्षों में जो बना होता है वह छूट जाता है। उनकी यह बात ठीक लग रही थी वैसे भी पुस्तकालय की किताबें तो हर स्तर पर उपलब्ध होनी चाहिए और बच्चों की पहुंच में होनी चाहिए। इस संदर्भ में शिक्षकों से बातचीत भी करनी चाहिए।

फोटो– पुरुषोत्तम

दूसरी तरफ अगर हम जूनियर विद्यालयों की वर्तमान परिस्थिति पर गौर करें तो वहां विद्यालयों में कुछ पुस्तकें तो दिखाई पड़ती हैं पर उनमें से थोड़ी बहुत किताबों को छोड़कर वे इस स्तर के बच्चों के बहुत मतलब की नहीं कही जा सकती। इसके साथ शिक्षकों के कई व्यवस्थागत समस्याओं के चलते पुस्तकालय संचालित करना मुश्किल रहा है और उनके साथ इस विषय पर संवाद भी नहीं किया गया है। इन कारणों से स्कूलों में पुस्तकालय को सक्रिय रूप से संचालित करने का काम पीछे रह गया है।

बच्चों के लिए पुस्तकालय के महत्व की अनुशंसा विभिन्न नीतिगत दस्तावेजों– आर.टी.ई. का दस्तावेज हो, राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा– 2005 आदि में की गई। राष्ट्रीय पाठयचर्या दस्तावेज में कहा गया है– 'पुस्तकालय को अधिगम, आनंद व तन्मयता के साधन' के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए। इसमें आगे यह भी लिखा है– 'स्कूल पुस्तकालय की संकल्पना ऐसे बौद्धिक स्थल के रूप में की जानी चाहिए जहां शिक्षक, विद्यार्थी और निकटस्थ समुदाय के लोग ज्ञान के गहरे अर्थों और कल्पनशीलता की तलाश में आएं।' इसके साथ ही भाषा शिक्षण से जुड़े दस्तावेजों में भी बच्चों को पढ़ने का आनंद लेने, साहित्यिक रुझान बनाने, उत्साही पाठक बनाने के उद्देश्य को अच्छे से रेखांकित किया गया है और इस पर काम करने की आवश्यकता गहराई से महसूस होती है। शिक्षकों के बीच काम करते हुए ऐसा लगता है कि अभी जमीनी स्तर पर पुस्तकालय के महत्व को अच्छे से नहीं पहचाना गया है। प्राथमिक स्तर पर तो कहीं–कहीं

रीडिंग कॉर्नर के तहत ये प्रयास दिखाई दे जाते हैं परंतु आगे की कक्षाओं में किताबें तो दिख जाती हैं लेकिन बच्चों के साथ इनका लेन–देन, उपयोग बहुत अधिक दिखाई नहीं पड़ता।

आगे हम इस आलेख में उच्च प्राथमिक स्तर पुस्तकालय के लिए किताबों के चयन और उसके उपयोग पर कुछ चर्चा करेंगे। सर्वप्रथम इस बात पर गौर किया जाना चाहिए हमारे देश में किशोर बच्चों की आवश्यकताओं को देखकर सुरुचिपूर्ण सामग्री देखने को बहुत कम मिल पाती है। हाल के वर्षों में जरूर इस दिशा में प्रयास हुए हैं और कुछ किताबें प्रकाशित हुई हैं। इन प्रकाशनों में नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत ज्ञान विज्ञान समिति, स्कालस्टिक, एकलव्य, तूलिका व इकतारा प्रकाशन का नाम लिया जा सकता है। इन प्रकाशकों ने अच्छी किताबें प्रकाशित की हैं जिनका बच्चों के साथ उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा चकमक व साइकिल जैसी पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती हैं जिनका एक्सपोजर इन बच्चों को दिया जाना चाहिए।

शिक्षक भी किताबों को पढ़ने के प्रति अपना रुझान विकसित करें तभी उनमें किताबों पर दृष्टि बनेगी और वे बच्चों के साथ संवाद स्थापित कर पाएंगे।

बच्चों में किताबों के प्रति रुझान बनाने में शिक्षक व पुस्तकालयाध्यक्ष की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है कि वह बच्चों को किताबों के बारे में बताए, उन्हें किताबें पढ़ने के लिए दे, किताबों पर बच्चों के साथ बात करे, किताबों पर कुछ गतिविधियां आयोजित करे। इस तरह के प्रयास विद्यालय स्तर पर किए जाने चाहिए। इन्हें एक विद्यालय में किए गए कार्य के उदाहरण से हम समझ सकते हैं। इस विद्यालय में पुस्तकालय के कालांश को संचालित करने में शिक्षकों के साथ बातचीत में यह स्पष्टता लाई गई थी कि बच्चों के लिए पुस्तकालय संचालन में यह प्रयास होना चाहिए कि बच्चों को विविध तरह की सामग्री को द्वारा उन्हें पढ़ने का एक्सपोजर दिया जाए जिससे उनमें कुछ पढ़ने का रुझान विकसित हो सके। यह सामग्री केवल कविता–कहानी पढ़ने तक ही सीमित न हो। बच्चे अन्य विषयों से जुड़ी पुस्तकें पढ़ें और किताबें अपने घर भी ले जाएं। इस प्रक्रिया में उन्हें नियमित रूप से पढ़ने के मौके दिए गए और उनके साथ समय–समय पर इस

किताबों पर चर्चा के लिए अच्छे प्रश्न बनाना जरूरी

अकसर स्कूलों में भ्रमण के दौरान देखने को मिलता है कि स्कूलों में बाल पुस्तकें उपलब्ध होती हैं और बच्चों को पढ़ने के लिए भी कभी–कभार मिल जाती हैं। परंतु बच्चों को उत्साही पाठक बनाने व पुस्तकालय के दीर्घकालिक लक्ष्यों को हासिल करने की दृष्टि से पुस्तकों को पढ़ने के साथ कुछ और गतिविधियों की भी दरकार रहती है। जैसे कि बच्चों को किताबें पढ़कर सुनाना और किताबों पर चर्चा करना। ये दोनों गतिविधियां किताबों से एक अंतरंग जुड़ाव बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं इसके माध्यम से बच्चे किताबों से अपना जुड़ाव बना पाते हैं। उसमें उन्हें अपने अनुभव, विचार, सोच, कल्पना को जोड़ने का मौका मिलता है। वे अपने अनुभवों, विचारों को लिख भी सकते हैं। इससे जुड़े चित्र भी बना सकते हैं।

इस प्रकार बच्चों के सामने किताबों की आंतरिक दुनिया खुलती है। किताबों पर चर्चा के लिए अच्छे प्रश्नों का होना बहुत जरूरी है। इन्हें सोच–समझ के साथ बनाना जरूरी है। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि एक शिक्षक ने किताब को कितनी गहराई से महसूस किया है और उसका खुद का किताबों को पढ़ने का नज़रिया क्या रहा है? इसमें यह बात जोड़ना भी आवश्यक है यह नज़रिया धीरे–धीरे ही विकसित होता है। बच्चों के साथ किताबों पर चर्चा का महत्व इस मायने में है कि बच्चे किताब की विषयवस्तु से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर थोड़ा गहराई से सोच–विचार सकें। किताब के विचारों व अनुभवों को अपने व स्थानीय परिवेश से जोड़कर देख सकें। विषयवस्तु पर खुद से नई तरह से कल्पना कर सकें, एक किताब को दूसरी किताब से भी जोड़कर देख सके। इस प्रकार की बातचीत बच्चों के किताब पढ़ने को समृद्ध बना सकती है और उनमें पढ़ने का उत्साह

विकसित कर सकती है। इस नज़रिए को ध्यान में रखकर किताबों का बच्चों के साथ उपयोग करना चाहिए।

बच्चों के साथ किसी किताब पर चर्चा से पहले यह जरूरी है उस किताब की विषयवस्तु व खासियत के बारे में अच्छी तरह से पता हो। किताब से उभरने वाले नज़रिए के बारे में पता हो। हममें यह भी स्पष्टता हो उस पर हम क्या–क्या बात करेंगे? किन पहलुओं को उभारेंगे? चर्चा के लिए प्रश्न भी खुले हुए और सोचने वाले होने चाहिए। आमतौर पर हमारी बातचीत के प्रश्न भी जानकारीपरक ही होते हैं। हमारी पहले से किताब पर बातचीत की कोई तैयारी भी नहीं होती। इस कारण चर्चा भी सीमित दायरे में हो पाती है और केवल सवाल–जवाब तक बात सीमित रह जाती है। बच्चों के साथ यह चर्चा बच्चों को किताब सुनाकर या बच्चों द्वारा पढ़ी हुई किताब दोनों तरीकों से की जा सकती है।

इस आलेख में हम माइक थेलर द्वारा लिखित व तेजी ग्रोवर द्वारा अनूदित बच्चों की छोटी सी किताब 'छुटकी उल्ली' पर आधारित पुस्तक चर्चा के बारे में बात करेंगे। इस किताब को एकलव्य, भोपाल ने प्रकाशित किया है। पहली बात तो यह उभरती है इस किताब को हम चर्चा के लिए क्यों चुन रहे हैं? किताब की खासियत यह है इस किताब के मुख्य चरित्र छुटकी उल्ली और उसकी माँ है। छुटकी उल्ली प्रश्न पूछने वाली, दुनिया को समझने के लिए उत्सुक उल्ली है जो अपनी माँ से बार–बार सवाल पूछती है। इसके साथ इसमें यह भी गौर करने वाली बात है कि हमारे समाज में उल्लू को बेवकूफ पक्षी के रूप में समझ जाता है और इसका संबोधन भी आमतौर बच्चों पर टैग लगाने के भी लिए करते हैं। ऐसा ही गधे को भी समझा जाता है। इसके साथ ही आमतौर पर बच्चियों से यह अपेक्षा होती है कि वे ज्यादा प्रश्न न पूछा करें जो बताया जा रहे उसे ही मान लिया करें। लड़कियों का प्रश्न पूछना अच्छी प्रवृत्ति नहीं मानी जाती। इसके साथ किताब में यह भी गौर करने लायक है कि छुटकी उल्ली की मम्मी भी उसके किसी भी प्रश्न के सीधे उत्तर नहीं देती और उसे खुद से उत्तर तलाशने के लिए प्रोत्साहित करती रहती है। कहानी के अंत में मां और बच्ची के प्यार को दिखाया गया है जिसका कोई मूल्य नहीं है।

हालांकि किताब के चित्र सादे हैं लेकिन बच्चों को सोचने का मौका देते हैं। इस प्रकार यह किताब बच्चों के लिए एक अच्छी किताब का उदाहरण भी प्रस्तुत करती है। अब प्रश्न उठता है कि अगर इस किताब को बच्चों को सुनाकर या उन्हें पढ़ने का मौका हमें इस किताब पर बच्चों से बातचीत का मौका मिले तो उस पर हम उनसे क्या बात करेंगे ? इस पर हमें सोचना होगा और कुछ प्रश्न सोचने होंगे जो किताब को बच्चों के लिए और गहरा अर्थ दे पाएं। इस बात को समझते हुए हमने कुछ प्रश्न बनाने का प्रयास किया है जिन पर बच्चों के साथ बातचीत की जा सकती है–

- कहानी में कौन–कौन है
- कहानी आपको कैसी लगी? कहां–कहां पर अच्छी लगी?
- ऐसी कोई कहानी/किताब आपने पहले पढ़ी है? उसका नाम बताओ।
- छुटकी उल्ली क्या करती है? किस तरह की पक्षी है?
- छुटकी उल्ली और क्या सवाल पूछ सकती है?
- छुटकी की अम्मी कैसी हैं? वे क्या करती हैं?
- छुटकी की अम्मी सवालों के सीधे जवाब क्यों नहीं बता देतीं ?
- तुम में से किस–किस के मन में सवाल आते हैं ?

- तुम्हारे मन में क्या–क्या सवाल आते हैं ? बताओ।
- सवालों के उत्तर पता करने के लिए हमें क्या करना पड़ता है?
- सवाल पूछने से क्या होता है?
- कहानी के अंत में क्या हुआ?
- इस कहानी को पढ़कर हमें क्या पता चलता है?
- इस कहानी का हम कोई नया नाम रख सकते हैं? नाम बताओ।
- इस कहानी के आधार पर अपने मन से कोई चित्र बनाओ।
- छुटकी उल्ली और उसकी अम्मी को लेकर क्या तुम कोई दूसरी कहानी बना सकते हो ? बनाओ।
- छुटकी उल्ली और उसकी अम्मी की जगह किसी और पक्षी/पशु को रखकर नई कहानी बनाओ।

अगर हम उक्त प्रश्नों पर गौर करें तो इसमें कुछ प्रश्न तो सीधे किताब की विषयवस्तु से जुड़े हुए हैं, कुछ बच्चों के लिए सोचने वाले सवाल हैं जो बच्चों के परिवेश से या उनके अनुभवों से जुड़े हुए हैं। इन प्रश्नों पर बातचीत से सामाजिक जागरूकता का मूल्य उभरता है। इन प्रश्नों पर बच्चों के अलग–अलग उत्तर हो सकते हैं। इस पर उनके साथ अच्छी चर्चा हो सकती है। इसके अलावा बच्चों को चित्र बनाने व लिखने का मौका देने वाले सवाल भी रखे गए हैं। इनसे बच्चों को अभिव्यक्ति के विकास का मौका मिलता है।

इममें हमारे लिए यह भी सुविधा है कि अपने समय को देखते हुए हम कुछ सवाल चुन लें या सभी सवालों पर बात कर लें। इसके लिए हमारा उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए। इस प्रकार अगर हम बच्चों से किताबों पर चर्चा करेंगे तो हम आगे उन्हें हम उत्साही व जागरूक पाठक बना पाएंगे। इसके साथ ही अपने स्कूल के पुस्तकालय को जीवंत भी बना पाएंगे और पुस्तकालय के वृहद लक्ष्यों को हासिल कर पाएंगे।

– कमलेश जोशी

सामग्री पर चर्चा भी आयोजित की गई। बच्चों के साथ चर्चा की गई सामग्री में 'चकमक' पत्रिका में प्रकाशित कहानियां 'मुन्ना बुनाईवाले', 'साइमन और सैंडी' या 'साइकिल' पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं' घुड़सवार', 'शेर और कव्य्या' , 'गोदाम 'आदि कहानियां सुनाई गईं। कुछ किताबें जैसे– 'क्यूँ क्यूँ लड़की', 'इतवा मुंडा ने लड़ाई जीती' भी सुनाई गई। इसी तरह 'सप्पू के दोस्त', 'पूड़ियों की गठरी', 'इकतारा बोले' आदि के कुछ पाठ पढ़कर सुनाए गए। इन पर उनके साथ चर्चा भी की गई। 'घुड़सवार' कहानी बच्चों को बहुत अच्छी लगी पर उसका अंत उन्हें अच्छा नहीं लगा। इन रचनाओं की विषयवस्तु के साथ इसके प्रस्तुतिकरण व भाषा पर उनका ध्यान दिलाया गया। कविताओं से परिचित कराने के लिए विनोद कुमार शुक्ल, राजेश जोशी, नवीन सागर, सुशील शुक्ल की कविताएं पढ़कर सुनाई गईं और उन पर बात भी की गई। बच्चों के साथ उपयोग की गई उक्त सामग्री इन बच्चों के मनोभावों, सोच व कल्पनाशीलता से जुड़ी हुई थी और बच्चे इससे अच्छा जुड़ाव महसूस कर रहे थे। इस प्रक्रिया पर शिक्षकों से भी चर्चा हुई कि इस तरह के प्रयास हमें बच्चों के साथ लगातार करने होंगे तभी हम बच्चों में कुछ रुचि बनने की उम्मीद की जा सकती है। इस पर लगे रहना होगा। इसके साथ हमें यह समझना होगा कि ये प्रक्रियाएं उनकी भाषा व अन्य विषयों की समझ को भी मजबूत करेंगी। बच्चों का पुस्तकों में रुझान बनाने के लिए हमें भी किताबों में रुचि विकसित करनी होगी तभी हम बच्चों के साथ किताबों का उपयोग कर पाएंगे।

उक्त उदाहरण से यह स्पष्ट होने में भी मदद मिली होगी कि विद्यालयों में केवल किताबें आ जाने से काम नहीं चलेगा। इसके लिए शिक्षकों को अपने स्तर पर भी प्रयास करने होंगे। इस प्रयास में उनका अभिमुखीकरण किया जा सकता है। अभिमुखीकरण के अलावा उनके साथ नियमित संवाद की जरूरत पड़ेगी। इसके अंतर्गत सबसे महत्व की बात यह होगी कि शिक्षक भी किताबों को पढ़ने के प्रति अपना रुझान विकसित करें तभी उनमें किताबों पर दृष्टि बनेगी और वे बच्चों के साथ संवाद स्थापित कर पाएंगे। अगर इस तरह संवाद बनाएंगे तो वे बच्चों को उत्साही पाठक के रूप में विकसित करेंगे। इससे वे हिन्दी पट्टी में अच्छे पाठक तैयार करने में मदद करेंगे।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन रूद्रपुर, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)

आओ किताबों से दोस्ती करें

फोटो– पुरुषोत्तम

– प्रतिभा सिंह

कोविड के बाद स्कूल खुलने पर बच्चों के सीखने को लेकर काफी चुनौतियां देखने में आ रही हैं। ऐसे में कहानियों और कविताओं के जरिये उन्हें उनकी भूली हुई दक्षताओं से जोड़ने का तरीका काफी कारगर लग रहा है। बच्चे के जीवन में बाल साहित्य की काफी महत्वपूर्ण जगह है। मां की लोरियां, दादी, नानी की कहानियां बच्चे के जीवन का पहला बाल साहित्य है। स्कूल आने से पहले बच्चे कहानी किस्से सुनने व गढ़ने में माहिर होते हैं।

शुरुआती कक्षा में बच्चा जब आता है तो यह कहा जाता है कि वह अपनी कक्षा की किताब पढ़ ले। 5 साल का बच्चा जब हमारे पास आता है उसके पास चार–पांच हजार शब्दों का भंडार होता है। वह देखने, सुनने, जानने व सीखने की दिशा में आगे बढ़ता है। वह कहानियां सुनने के साथ–साथ प्रश्न भी करने लगता है। जो बाल साहित्य बच्चों में मनोरंजन के साथ–साथ पठन–पाठन का संस्कार विकसित करता है, जो उनकी रुचि के अनुकूल होता है जिससे वह अपने मन की अनुभूतियों को अभिव्यक्त कर पाते हैं जिससे बच्चों में अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न होती है, उनकी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति होती है वही बाल साहित्य है।

बाल साहित्य का चुनाव करते समय हमें बच्चे की आयु को ध्यान में रखना होगा। शुरुआती कक्षा में बच्चों के लिए छोटी–छोटी कविताएं, कहानियां शामिल की जानी चाहिए। मौखिक वाचन के रूप में अधिक कहानियां, कविताएं शामिल की जाएं, इसमें अध्यापक की सक्रिय भूमिका होनी चाहिए। शिक्षक को प्रतिदिन बच्चों को एक कहानी सुनानी चाहिए। कहानी मौखिक सुनाएं और फिर बताएं कि यह किस किताब से ली गई है। इससे बच्चे भी कहानी पढ़ने का प्रयास करते हैं। इससे बच्चे की कल्पना को विस्तार मिलता है। वे नए–नए शब्दों से परिचित होते हैं। भाषा के निकट आते हैं।

जबसे हमारे विद्यालय में बच्चों को स्वतंत्र पठन के अवसर मिले तब से उनकी पढ़ने के प्रति ललक बढ़ी ऐसा अनुभव किया। कक्षा में अनेक अवसर ऐसे आए कि बच्चा किताब पढ़ना नहीं जानता, कहानियों की किताबों के नाम जानता है। चित्र देखकर बच्चे कहते हैं कि हम खिचड़ी वाली कहानी पढ़ेंगे। कभी आम का मौसम, कभी धानी के थे तीन दोस्त, जंगल में खुशबू आदि अपनी पसंद की

कहानी सुनाने के लिए उत्सुक रहते हैं। जो बच्चे पढ़ने में रुचि नहीं रखते थे वे भी किताबों को उलट–पलट कर देखते हैं। उनमें कहानी पढ़ने और सुनाने की रुचि बढ़ी है। हम कक्षा शिक्षण के समय बच्चों को प्रतिदिन बाल साहित्य की किताबें पढ़ने का अवसर देते हैं। इससे निश्चित रूप से बच्चों में पठन कौशल का विकास हुआ है। बच्चे अक्षरों को पहचान कर पढ़ने की कोशिश करते हैं। इस समय भी बच्चे किताब पढ़ने के लिए ले जाते हैं और आकर उसे सुनाते हैं।

बाल साहित्य की कहानियां बच्चों में आनंद व उत्साह उत्पन्न करती हैं। उनके ज्ञान को विस्तार देती हैं। उनमें समझ विकसित करती हैं। पाठ्य पुस्तक के पाठों को समझने में बाल साहित्य की कहानियां बहुत मददगार साबित हुई हैं। हमारी पाठय पुस्तकों में कई कहानियां ऐसी हैं जिन्हें बाल साहित्य की पुस्तकों में बड़े ही रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है जिसे पढ़ने में बच्चे आनंद का अनुभव करते हैं। उनकी समझ विकसित होती है। अनुमान लगाने के भरपूर अवसर मिलते हैं। पेड़–पौधे, जानवर, त्योहार, मौसम, बादल, वर्षा, रिश्ते आदि से संबंधित कहानियां व कविता हमारी पाठ्य पुस्तकों में भी हैं और उन्हीं को बाल साहित्य में बड़े मनोरंजक तरीके से चित्रांकन करके प्रस्तुत किया गया है।

बाल साहित्य की कहानियां एक विषय से दूसरे विषय को जोड़ने में मदद करती हैं। झूला, आम की टोकरी, पतंग, रसोईघर, भालू ने खेली फुटबॉल, चांद वाली अम्मा, पापा जब बच्चे थे, सूरज और चांद, मन करता है, उलझन, सबसे अच्छा पेड़, पत्तियों का चिड़ियाघर ऐसे बहुत से पाठ हमारी पाठय पुस्तकों में हैं। अनोखा रिश्ता, चूहा और बिल्ली,जंगल में खुशबू, आम का मौसम, धानी के थे तीन दोस्त, खिचड़ी, दादा जी का छाता, मटका, पीला रंग, सबसे मीठा आम आदि कहानियां पाठ्य पुस्तकों के पाठों से जोड़ती हैं। उन्हें समझने में मदद करती हैं। यह सब कहानियां बच्चों के परिवेश से जुड़ी हुई हैं। इन्हें पढ़ने और सुनने में अपनापन महसूस होता है। बाल साहित्य की कहानियां संवेदनशील, सामाजिक, व्यावहारिक बनाती हैं। पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, रिश्ते, आस–पड़ोस की जानकारी देतीं, समझ विकसित करती व संवेदना जगाती हैं। मानवीय मूल्य विकसित करती हैं।

कहानी पर बच्चों से बातचीत

मैंने अपनी कक्षा में छोटे पौधे, बड़े पौधे कहानी सुनाई तो उससे संबंधित बातचीत के कुछ अंश इस प्रकार से हैं। मैंने बच्चों से पूछा कि अच्छा बताओ आप क्या खाना पसंद करते हो तो सभी बच्चों ने अपनी अपनी पसंद से उत्तर दिया। मैंने पूछा कि आपके घर में खाना कौन बनाता है तो किसी ने बताया मम्मी बनाती है, किसी ने कहा दादी। मैंने पूछा कि अच्छा बताओ तुम्हारे घर में दाल सब्जी, अनाज, फल ये सब कहां से आते हैं? तो सभी के उत्तर अलग थे किसी ने कहा कि उसके खेत से आते हैं। किसी ने कहा कि वह बाजार से खरीद कर लाते हैं। फिर मैंने पूछा अच्छा बताओ किसके घर में जानवर हैं? तो कुछ बच्चों ने जानवरों के नाम भी बताए। पूछने पर कि जानवर क्या–क्या खाते हैं तो बच्चे क्योंकि उसी परिवेश से जुड़े हुए हैं उन्होंने बताया कि बच्चे घास पत्ती चारा आदि खाते हैं। यह सब कहां से आता है तो सबने कहा कि हमें खेत से, पेड़ पौधों से मिलता है। फिर पूछा अच्छा बच्चों बढ़ने के लिए हमें किसकी जरूरत होती है? तो बच्चों ने बताया कि हमें भोजन की जरूरत होती है। फिर पूछा क्या पेड़–पौधे किसी ने बढ़ते देखे हैं तो कुछ बच्चों ने बताया कि हां, उन्होंने पेड़–पौधों को बढ़ते हुए देखा है। आम, अमरूद के पेड़ को बढ़ते देखा। मैंने बताया कि हमें बढ़ने के लिए भोजन की जरूरत पड़ती है। तो पेड़ पौधों को भी भोजन की जरूरत पड़ती है तो पेड़ पौधे क्या खाते होंगे तो कुछ बच्चों ने हवा और पानी बताया। सभी ने अनुमान लगाकर अपनी समझ से उत्तर दिए। कहानी सुनने में आनंद का अनुभव किया।

निश्चित रूप से हम कह सकते हैं कि बाल साहित्य बच्चों को स्थाई पाठक बनाने में मदद करता है। बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने में मदद करता है और बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि जागृत करता है। प्रश्न उत्तर इस तरह हों कि बच्चों की बातचीत को आगे बढ़ाएं, उन्हें अनुमान लगाने का अवसर दें और अपने अपने तरीके से अपनी बात कहने का अवसर दें। प्रश्न उत्तर के माध्यम से बातचीत को आगे बढ़ाकर बच्चों की झिझक को भी कम किया जा सकता है और उन्हें अपनी बात कहने का भरपूर अवसर दिया जा सकता है। उन्हें बढ़ावा देकर और अधिक अपने विचार रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। बाल साहित्य की पुस्तकों में इन सब की अपार संभावनाएं भरी हुई हैं। जरूरत है कि हम उन्हें अधिक से अधिक बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय महुआ खेड़ा गंज, काशीपुर, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका के पद पर हैं।)

फोटो– पुरुषोत्तम

कहानियों द्वारा अधिगम की क्षतिपूर्ति है संभव

– वर्तुल ढ़ौंडियाल

कहानियां बच्चों के जीवन का अभिन्न अंग हैं। बच्चे स्कूल जाने से पहले ही घर– समाज में रहकर किस्से कहानियां सुनते हैं। यहां तक कि टीवी में वे जिन कार्टून, नाटक, विज्ञापनों को देखकर खुश होते हैं दरअसल उन सब में भी वे कहानियां ढूंढ लेते हैं और अगर उनसे इन सब पर चर्चा की जाये तो वे आपको उसकी कहानी सुना सकते हैं। कहानियों को बहुत पुराने ज़माने से शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है जिसके सैकड़ों उदाहरण गिनाये जा सकते हैं जैसे जातक कथाएं, पंचतंत्र, ईसप की कहानियां, धर्म ग्रंथों की कहानियां, अरेबियन नाइट्स आदि।

यही वजह है कि स्कूल के पाठ्यक्रम में भी कहानियों को बखूबी शामिल किया गया है और न केवल भाषा की पुस्तकों में बल्कि अन्य विषयों में भी कहानी और कविताओं का उपयोग किया जाता है। कहानी आनंद प्राप्ति के साथ–साथ अन्य विषयों खासकर भाषाई कौशल अर्जित करने का एक बहुत ही सशक्त माध्यम है। मौखिक/लिखित कहानियाँ साक्षरता समेत भाषा की अन्य सभी दक्षताओं को सीखने–सिखाने का रोचक साधन है जिसमें भाषा सीख रहे बच्चों को पता ही नहीं चलता कि एक मजेदार कहानी सुनने, उसके घटनाक्रम के तिलिस्म और पात्रों के विविध पक्षों को महसूस करने के बीच उन्होंने कितना कुछ सीख लिया है। वे पात्रों के जीवन, उनकी चुनौतियों और आनंद को महसूस करने लगते हैं।

जब कोई शिक्षक कहानी को उनके जीवन के अनुभवों और उनके परिवेश से जोड़ता है तो अनायास ही ये कहानियां सामाजिक ताने–बाने, रीतियों–कुरीतियों, सही–गलत के बोध, विश्वास–अंधविश्वास आदि के महीन अंतर को परखने और महसूस करने के लिए विवश करती हैं। अगर ऐसे में शिक्षक बच्चों को खुलकर अपने विचार व्यक्त करने और कहानियों के साथ अपने जीवन के वास्तविक अनुभव या मानसिक परिकल्पना को जोड़ने के मौके उपलब्ध कराते हैं तो बच्चे उच्च भाषाई कौशल

जैसे प्रश्न करना, समालोचना करना, समीक्षा करना, तर्क करना आदि सहज रूप से सीख जाते हैं।

भाषा सीखने के मायने मात्र वर्ण/मात्रा की ठीक पहचान, शुद्ध वर्तनी, वाक्य लिखना, व्याकरण सीखना, पाठ के प्रश्नों के जवाब देना जैसी साक्षरता की दक्षताएं सीख लेना भर कतई नहीं है, हालांकि यह भी भाषा सीखने के महत्वपूर्ण अव्यय हैं। मगर भाषा के वृहद् उद्देश्य मात्र संकेतों–ध्वनियों के अंतर और व्याकरण के नियमों तक सीमित नहीं हैं। भाषा सोचने समझने, विचारों को व्यवस्थित करके मौखिक और लिखित रूप में साझा करने, सामाजिक ताने–बाने को समझने और उसके साथ सामंजस्य बैठाने, प्रचलित मान्यताओं को परखने और नई मान्यताएं गढ़ने, रचनात्मक और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा जानने का मतलब है कि हम उसका इन उद्देश्यों के लिए भाषा का सटीक और प्रभावशाली उपयोग कर सकें। इसके लिए यह आवश्यक है कि भाषा के शिक्षक भाषा के इन वृहद उद्देश्यों को समझें और उन पर बच्चों के साथ रोचक ढंग से शिक्षण करने के लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों का उपयोग करें।

बच्चे स्कूल आने से पूर्व ही मौखिक भाषा से न केवल परिचित होते हैं बल्कि वे इस भाषा का बहुत ही प्रभावशाली रूप से विविध उद्देश्यों के लिए प्रयोग भी कर पाते हैं। वे व्याकरण के नियमों को रटे बिना अपनी भाषा के व्याकरण का सही इस्तेमाल करते हुए वाक्य विन्यास गढ़ते हैं और उनके वाक्यों में संगतता भी होती है। वे जब कहानियों को अपने शब्दों में सुनाते हैं तो वे लिखित कहानी के वाक्य विन्यास की हू–ब–हू नक़ल नहीं करते बल्कि अपनी मौखिक भाषा के अनुरूप नए वाक्य गढ़कर पूरी कहानी को सुना पाते हैं। इस बात से हमें यह पता चलता है कि भाषा शिक्षण में यह बात बहुत ही गौण है कि बच्चे किताब में लिखी भाषा को रटकर उसकी हू–ब–हू नक़ल करें बल्कि भाषा शिक्षण में यह अति आवश्यक बात है कि बच्चे पढ़े या सुने जा रहे को समझ कर उसमें अपने विचार/भाव जोड़कर उसे अपनी भाषा में अभिव्यक्त करें।

लगभग दो वर्षों तक बच्चों का स्कूल में नियमित सीखना बाधित रहा। इसके कारण बच्चों में न केवल शैक्षिक हानि हुई बल्कि कोविड के कारण समाज में उत्पन्न भयावह स्थिति ने बच्चों के भावनात्मक, शारीरिक और मानसिक पक्ष को भी बहुत तरह से प्रभावित किया है। ऐसे में कक्षा में मजेदार कहानियों और बच्चों को कहानी से जुड़ी रोचक गतिविधियों को शिक्षण का आधार बनाना हमें इस स्थिति से उबरने में मदद कर सकता है।

कहानी पर काम करने के लिए क्या आवश्यक है ?

कहानी शिक्षण का बहुत प्रभावशाली औजार है मगर ठीक से योजना न होने के कारण यह उतना प्रभावी साबित नहीं होगी। किसी भी कहानी पर कार्य करने से पहले शिक्षकों को यह योजना कर लेनी चाहिए कि इस कहानी के माध्यम से वे बच्चों की किन–किन दक्षताओं (सीखने के प्रतिफलों) और किन नयी अवधारणाओं पर कार्य करना चाहते हैं। कहानी को कक्षा में रोचक ढंग से सुनाना, उस पर चर्चा करना और बच्चों को उस कहानी से जोड़ने के लिए तरह–तरह की स्तर अनुरूप गतिविधियां करना इस प्रक्रिया का हिस्सा होना ही चाहिए। इस प्रक्रिया में निम्न बातों का ध्यान रखना मददगार साबित होता है।

किताबों/ कहानी का चयन– सबसे पहले तो यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों की उम्र/कक्षा या उनके पढ़कर समझने के स्तर के अनुरूप कहानियों का चयन किया जाए। कभी शिक्षक विशेष उद्देश्य जैसे किसी अवधारणा विशेष को समझाने के लिए या शुरुआती पाठकों के पढ़ने–लिखने के अभ्यास को ध्यान में रखी गयी किताबें जैसे बरखा सीरीज, मीना आदि का चयन कर सकते हैं।

स्तर के अनुरूप गतिविधियां– शिक्षक बच्चों के स्तर के अनुरूप गतिविधियों का निर्धारण कर सकते हैं जिससे बच्चों को पढ़ना–लिखना सीखने, टेक्स्ट पर समझ बनाने और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने में मदद मिले। उदाहरण के लिए किसी कहानी पर कार्य करने की कुछ सरल गतिविधियां इस प्रकार हो सकती हैं।

कहानी पढ़ने/सुनाने से पूर्व चर्चा– शिक्षक कहानी सुनाने से पूर्व कहानी के शीर्षक, उसके पात्रों और चित्रों पर चर्चा करें और बच्चों के पूर्वज्ञान से जोड़ें। ऐसा करने से बच्चे कहानी में क्या होने वाला है, कहानी में कौन–कौन पात्र हैं आदि के बारे में अनुमान लगाने के लिए अपने पूर्वज्ञान का उपयोग करते हैं और सक्रिय

श्रोता या पाठक की भूमिका अपनाते हैं।

कहानी सुनाना– कहानी को रोचक ढंग से आवाज़ के उचित उतार–चढ़ाव और हाव–भाव से कहानी सुनाये जाने से बच्चे बहुत आनंदित होते हैं और वे प्रभावशाली मौखिक अभिव्यक्ति की बारीकियों को सीखते हैं। शिक्षक कहानी सुनाने के कई तरीके उपयोग कर सकते हैं जैसे मुखौटों, कठपुतलियों, अन्य वस्तुओं का उपयोग करते हुए कहानी कहना आदि।

पढ़ना सीख रहे बच्चों के साथ सस्वर वाचन– शिक्षक अंगुली रखकर पढ़े जा रहे टेक्स्ट को बच्चों को प्रदर्शित करते जाते हैं। बच्चे पढ़े जा रहे शब्दों पर उंगली चलाते हुए दोहराते हैं और लिखित शब्दों को उनकी ध्वनि से मिलान करते हैं। ऐसा करने से बच्चों में ध्वनि जागरूकता पैदा होती है और वे धीरे–धीरे शब्दों और वर्णों को न केवल पहचान पाते हैं बल्कि उनकी ध्वनियों को अलग–अलग शब्दों में चिह्नित कर पाते हैं और नए शब्द बनाने में उनका उपयोग करने लगते हैं।

शब्द/वर्ण पहचान के खेल– पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया को और सहज बनाने और वर्ण पहचान के बोझिल रटने वाले काम से बचने के लिए बहुत से शब्द खेल खेले जा सकते हैं जैसे सुने गए शब्द को पाठ में ढूंढना, किसी वर्ण को अलग–अलग शब्दों में पहचानना, शब्द अन्ताक्षरी, तुकबंदी करना आदि।

उच्च भाषाई कौशलों पर कार्य– इसी तरह शिक्षक बच्चों के साथ कहानी पर बोधगामी दक्षताओं और कहानी के विशिष्ट उद्देश्य (जिन्हें किसी कहानी विशेष द्वारा सिखाया जा सकता हैं जैसे रंगों की पहचान, परिवेश, मूल्य जैसे दोस्ती, धर्मनिरपेक्षता, तार्किक चिंतन आदि) पर कार्य कर सकते हैं और बहुत सी रोचक गतिविधियाँ कर सकते हैं जैसे कहानी के पात्र बनकर कहानी सुनाना, कहानी पर नाटक करना, कहानी को आगे बढ़ाना या अंत बदलना, कहानी के पात्रों को लेकर एक अलग कहानी बनाना, शब्द दिए जाने पर उनसे कविता/कहानी तैयार करना आदि। इन सब गतिविधियों से बच्चों के भावनात्मक पक्ष, विचार करने की क्षमता और रचनात्मकता में बढ़ोत्तरी होती है।

आकलन– कक्षा में जो भी गतिविधि की जाती है वह शिक्षक द्वारा किन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया गया सायास प्रयास है। गतिविधि करने के दौरान शिक्षक यह अवलोकन करें कि क्या बच्चों को इस गतिविधि में आनंद और रुचि मिल रही है? क्या बच्चे उन उद्देश्यों को सीख रहे हैं जिनके लिए यह गतिविधि की जा रही है? शिक्षक अवलोकन करें कि प्रत्येक बच्चे की प्रतिभागिता कैसी है। गतिविधि करने के बाद चर्चा या अन्य कार्य जैसे प्रोजेक्ट, स्वयं से लिखना, समूह में प्रस्तुति करना आदि के द्वारा भी यह जांचा जाना चाहिए कि जिन उद्देश्यों के लिए यह गतिविधि की गयी थी उन उद्देश्यों को किस हद तक प्राप्त कर पाए हैं।

आज के सन्दर्भ में कक्षा में कहानी का महत्त्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि हाल ही में कोविड महामारी के कारण लम्बे अरसे से बंद स्कूल अब खुलने लगे हैं। लगभग दो वर्ष से बच्चों का स्कूल में नियमित सीखना बाधित रहा। इसके कारण बच्चों में न केवल शैक्षिक हानि हुई बल्कि कोविड के कारण समाज में उत्पन्न भयावह स्थिति ने बच्चों के भावनात्मक, शारीरिक और मानसिक पक्ष को भी बहुत तरह से प्रभावित किया है। ऐसे में कक्षा में मज़ेदार कहानियों और बच्चों को कहानी से जुड़ी रोचक गतिविधियों को शिक्षण का आधार बनाना हमें इस स्थिति से उबरने में मदद कर सकता है। इन्हीं सब बिन्दुओं को ध्यान में रख कर भारत सरकार देश के सभी विद्यालयों में रीडिंग कैम्पेन चलाने की पैरवी कर रही है और विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता मंत्रालय के द्वारा जारी दिशा–निर्देश इस बात की पैरवी करते हैं कि विद्यालयों में बच्चों के स्तर और रुचि के अनुरूप पठन सामग्री, पढ़ने के लिए निर्धारित समय और कहानी/कविता सुनने सुनाने और उन पर व्यवस्थित कार्य करने के लिए अभियान चलाया जाए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य है कि बच्चे ढेर सारी अलग–अलग कहानियों का आनन्द लें, उनसे जुड़ी गतिविधियों में प्रतिभाग करें और न सिर्फ भूली हुई भाषाई दक्षताओं को पुनः हासिल करें बल्कि अपनी वर्तमान कक्षा के पाठ्यक्रम के लिए भी तैयार हो सकें।

इस कार्य को एक अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए जहां शिक्षक कक्षा में बहुत सी मौखिक कहानियों को सुने सुनाएं, बच्चों से घर से कहानियां सुनकर आने को कहें और इन सब सुनी–सुनाई कहानियों को भाषा शिक्षण के औजार के रूप में उपयोग करें। यह बहुत आवश्यक है कि इस दौरान शिक्षकों द्वारा किये गए अभिनव प्रयोग, अपनाई गयी शिक्षण प्रक्रिया केवल 14 सप्ताह तक सीमित न रहे बल्कि दैनिक शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बने।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन देहरादून, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)

जंगल का राजा शेर ही क्यों...

मुझे कहानी की किताबें अच्छी लगती हैं, कवितायें भी अच्छी लगती हैं। तीन पतंगों की कहानी, जंगल के शेर की कहानी। कहानियों का संसार मजेदार होता है और बुआ कहती हैं कि अगर तुम खूब कहानियां पढ़ोगे और स्कूल का काम समय पर करोगे तो सब कुछ जल्दी सीख जाओगे।

– आलोक सिंह

फोटो– पुरुषोत्तम

बच्चा कहता है, मुझे स्कूल की एक किताब पसंद है। अभी तो उस किताब का नाम नहीं पता लेकिन उस किताब में एक चित्र है जिसमें दो बच्चे बारिश में खेल रहे है। मैंने पूछा, आपको यह किताब क्यों पसंद है? बच्चा बोला, दूसरे बच्चों की तरह मुझे भी बारिश में खेलना बहुत अच्छा लगता है, लेकिन मम्मी मुझे खेलने ही नहीं देतीं। मैंने पूछा, आपने अपनी मम्मी से यह नहीं पूछा कि वह क्यों आपको बारिश में खेलने से मना करती है? बच्चे ने इधर–उधर देखते हुए, हंसते हुए कहा, पूछा था लेकिन मम्मी मारने लगीं। (बच्चा यहां कुछ समय के लिए रुकता है और तेज आवाज में बोलता है कि मुझे न और भी किताब अच्छी लगती है) दूसरी किताब के बारे में बताते हुए बच्चा बोलता है, "तीन पतंगों की कहानी" बच्चा पतंगों के बारे, उनके रंग के बारे में बात करता है। पतंग कितनी ऊपर उड़ती है उसके बारे में, इस तरह की कुछ सूचनाओं के साथ मेरे साथ संवाद करता है।

संवाद में आगे वह एक कहानी का नाम लेता है जिसका शीर्षक है "जंगल का शेर"। इस कहानी में बच्चा पात्रों के नाम से कहानी के बारे में बताता है। वह कहता है, एक शेर होता है वह कई दिनों से सोया नहीं होता है। तभी एक मक्खी आती है, वह शेर को परेशान करने लगती है और उसे सोने नहीं देती क्योंकि उसे जंगल राजा बनना होता है। मैंने पूछा, जंगल का राजा तो शेर होता है, जो बहुत खूंखार होता है तो ऐसे में मक्खी जंगल का राजा कैसे बन सकती है? बच्चा बोला, मक्खी जंगल का राजा नहीं बन सकती। राजा तो शेर ही बनेगा। वह सबसे ताकतवर होता है, वही किसी को भी मारकर खा सकता है। मैंने पूछा, मक्खी सबसे छोटी जानवर है क्या इसलिए वह नहीं बन सकती? बच्चा बोला, मैंने तो सर यही पढ़ा है कि जंगल का राजा शेर होता है और यह बात तो मेरी बुआ भी बताती हैं, जब वह कहानी सुनाती हैं तो कहती हैं कि जंगल का राजा तो शेर ही होता है।

आगे बच्चा एक कविता सुनाता है "मन करता है सूरज बनकर...."। इस कविता को बच्चे ने पूरा सुना दिया. आगे बच्चे बताता है कि वह अपने छोटे भाई को भी पढ़ाता है जो कि कक्षा 1 में है। उसने रिमझिम किताब का नाम लिया। उसमें दी गई एक कविता "रेलगाड़ी" के बारे में बताया। इस कविता में छोटे से बड़े बच्चे एक सीधी लाइन में खड़े होकर रेलगाड़ी बनते हैं और खूब तेज दौड़ते हैं, मजे करते हैं"।

इस तरह से बच्चे ने संवाद करते हुए 3 कहानी और एक कविता सुनाई। आगे मैंने पूछा कि आपको यह कहानियां, कवितायें क्यों पसंद हैं? बच्चा बोला, कहानी पढ़ना और

सुनना अच्छा लगता है इसलिए मैं कहानियां पढ़ता हूं और घर पर अपनी बुआ से कहानियां सुनता हूं। मुझे यह भी पता है कि अगर मैं सही से कहानी पढ़ूंगा और समय से अपना काम पूरा करूंगा तो मुझे नौकरी मिलेगी। मुझे पुलिस में जाना है। यह बात सुनकर मुझे थोड़ी हैरानी हुई। मैंने पूछा, यह किसने बताया? बच्चा बोला मेरी बुआ कहती हैं कि ढेरों कहानियां पढ़ने से समय से स्कूल का काम करने से आप जल्दी से नौकरी पा जाओगे।

यह बच्चा कक्षा तीन में पढ़ता है। कहानी पढ़ना और सुनना इसकी रुचि है।

पूरे संवाद से मुझे यह पता चलता है कि बच्चे को मौखिक भाषा में अपनी बात रखने का, बातचीत करने का पिछली कक्षा में भरपूर अवसर मिला है। भाषा सीखने के एक उद्देश्य से यह बात तो ठीक लग रही है। दूसरे उद्देश्य से देखें तो मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही कि बच्चे को कल्पना करने का मौका देना क्या हम यह बात समझ पाते हैं जैसे–जंगल का राजा तो शेर ही होता है, यह बात हमने भी पढ़ी और अभी की कक्षा में यह बात उसी तरह से स्थापित है जैसे कि हमने कहानियों में सुना था।

इसी कड़ी में यह भी बात समझनी है कि बच्चों को सीखने में एक सुगमकर्ता की जो भूमिका होती है (घर के सदस्य, दोस्त, पड़ोसी) उसे समझना। बच्चा अपनी बुआ से सुनता है कि जंगल का राजा तो शेर ही होता है और इस सूचना को आधार देने के लिए यह प्रमाण कि वह बहुत ताकतवर होता है, खूंखार भी होता है, जिसे चाहे वह मारकर खा सकता है। इस बच्चे की जगह अगर मैं खुद होता तो शायद इतनी ही मजबूती से यह बात समझता कि जंगल का राजा तो शेर ही होता है।

मतलब हम बच्चों को कल्पना करना सिखाना चाहते हैं मगर एक तरफ हम उन पर कुछ सूचनायें, तथ्य, जानकारी जबरन थोपते हैं।

दूसरी बात यह कि अच्छी नौकरी पाने के लिए ढेरों कहानियां पढ़ना, समय से स्कूल का काम करना, बच्चों के लिए इस तरह की सोच उनके समूचे विकास के लिए कितनी प्रासंगिक है मुझे पता नहीं। थोड़ा और आगे सोचें तो संवैधानिक मूल्यों के बड़े उद्देश्य से यह बात कैसे जुड़ती है? (भाषा सीखने का संबध नौकरी पाना या अच्छा नागरिक बनना) यह बात एक फ्रेम में नहीं समझ में आती। अगर बच्चे की बुआ का सन्दर्भ देखें तो कुछ हद तक उनकी बात ठीक है (नौकरी पाना उनकी प्राथमिकता है) लेकिन वह (या उन जैसे लोग) यह कब समझना शुरू करेंगे कि शिक्षा का यही एक मात्र उद्देश्य नहीं है कि नौकरी मिल जाये। यह बात पहले आज के बड़े समझेंगे तभी यह बात स्कूलों तक, उनके बच्चों तक पहुंचेगी।

कुल मिलकर इस संवाद से यह समझ में आता है कि भाषा सीखने की पूरी प्रकिया को समझना, इनके उद्देश्यों को समझना इस पूरे सन्दर्भ की एक झलक दिखाई देती है। साथ में यह भी समझ में आता है कि बच्चे की शिक्षा में उनके शिक्षक, अभिभावक किस तरह से अपना योगदान देते हैं।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, उधमसिंह नगर, उत्तराखड से जुड़े हैं।)

शिक्षक सृजन

बिल्ली रानी

बिल्ली रानी आती रोज,
करती है चूहों की खोज
गुड़िया बोली बिल्ली मौसी,
तुम तो दिखती शेरनी जैसी
म्याऊँ–म्याऊँ कर आती हो,
दूध मलाई खा जाती हो
खूब सताती दिखाती पोज,
बिल्ली रानी आती रोज
मेरे घर दावत में आना,
दौड़–दौड़ कर चूहे खाना
गुड़िया घर मिल गया भोज,
बिल्ली रानी आती रोज
मुझको तुम कुछ न कहना,
तेरे संग है मुझको रहना
दोनों मिलकर करें मौज,
बिल्ली रानी आती रोज ।

– सुशीला साहू

(शासकीय प्राथमिक शाला कोसमनारा, धनागर, रायगढ़, छत्तीसगढ़)

कहानियों का संसार संभावनाएं अपार

– हेमवती चौहान

प्रकृति अपने तरह के रंग दिखाती है। बदलता मौसम, कहीं बाढ़, कहीं सूखा, कभी भूस्खलन, कभी भूकम्प, कभी बीमारी, कभी महामारी। ऐसे ही न जाने कितनी तरह के वायरस हमारे वातावरण में विचरते हैं। कब, कौन सा वायरस सक्रिय हो जाए, कुछ नहीं पता। ऐसे ही कोरोना (कोविड 19) नाम का वायरस जब सक्रिय हुआ तब इस महामारी का प्रकोप सभी ने देखा। कोविड की वजह से जो क्षति हुई उसे याद करके एक सिहरन, कंपकपी सी पूरे शरीर में फैल जाती है। लेकिन परिस्थिति चाहे कैसी भी हो, यदि उसका दुखद, भयावह पहलू है तो कोई न कोई अच्छाई भी उसमें जरूर होती है। कोविड 19 की कठिन परिस्थितियों में जब सब कुछ बंद था, जिंदगियां कैद पड़ी थीं, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक क्षति सबकुछ तो झेला। मगर अच्छी बात नजर आई लोगों की दरियादिली। एक–दूसरे की मदद को तत्पर दिखाई देना। कहीं भावनात्मक रूप से तो कहीं साक्षात मानवीय संवेदनाएं हर तरफ नजर आईं।

चूंकि हम बच्चों के भविष्य से जुड़े हैं और सहायक हैं। जिनके पास संसाधनों का अभाव हैं उनके लिए ऐसी कठिन परिस्थिति में शिक्षा से उन्हें जोड़े रखना भी कठिनतम परिस्थितियों में से एक था। ऐसे में हमारी जिम्मेदारी बड़ी थी। बच्चे शिक्षा से वंचित न रहें। ऑनलाइन शिक्षा का अभियान चला, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी सफलता कम ही मिल रही थी। इसके कई कारण थे। फिर वर्कशीट बनाकर घर–घर दी गयी, जिससे बच्चे किसी तरह शिक्षा से जुड़े रहे। इसमें भी कई समस्याएं आ रही थीं। बच्चे घर पर रहकर बोरियत भी महसूस करते थे। फिर भी वर्कशीट का काम काफी हद तक सफलता से आगे बढ़ रहा था। जब मैं वर्कशीट वितरित करने क्षेत्र में जाती थी, मानवी और जिया कक्षा 3 की बच्चियां हर समय मेरे साथ रहतीं। मना करने पर थोड़ी देर के लिए जातीं, फिर वापस आ जातीं।

मैं बाल साहित्य के महत्व को जानती व समझती थीं और उसके बेहतर परिणाम मैंने कोविड 19 से पहले देखे थे। इसलिए मैंने मानवी व जिया को सबसे पहले बाल साहित्य की किताब पढ़ने को दी। दोनों ने तुरंत पढ़कर मुझे वापस कर दी और उस कहानी के बारे में मुझे बड़े चाव से बताने लगी। उनकी उत्सुकता को देखकर मुझे आशा की किरण दिखाई दी। मैंने उन्हें एक–एक किताब घर के लिए भी दी। चूंकि माहौल तो डरावना था, इसलिए ज्यादा किताबों के लेन–देन में भी डर लग रहा था। शुरुआत में मैंने 6 बच्चों को ही किताबें दीं। किताबें सैनिटाइज करके ही देती थी और ऐसे ही वापस लेती थी। बीच–बीच में किताबों पर बातचीत भी करती रहती

थी। एक दिन मैंने बच्चों से ऐसे ही पूछ लिया कि किताबें पढ़कर कैसा लग रहा है? बच्चों ने कहा, अच्छा लग रहा है। मैंने पूछा, अच्छा क्यों लगता है? मानवी ने कहा इसमें हमारे मन की बात होती है। वंश ने कहा, ऐसा लगता है जैसे हम किसी से बात करते हैं। इन दोनों की बात सुनकर मेरी आंखों में चमक आ गयी। मैं बहुत खुश और उत्साहित हो गई। मैंने तुरंत यह बात अपने स्टाफ में सभी को बताई। बात छोटी थी मगर बड़े काम की थी। छोटे–छोटे बच्चे जो कक्षा 2 से कक्षा 3 में आ गए थे, उनके मुंह से ये बातें सुनना सुखद था। इन बच्चों को पढ़ते और आपस में चर्चा करते देख और बच्चे भी आने लगे। फिर मैंने रजिस्टर बनाया और विधिवत रूप से किताबें बच्चों को इश्यू तथा जमा करने का काम करने लगी।

उस दौर में यह सब मुश्किल तो लग रहा था लेकिन आनंददायक था, सुकून देने वाला था। किताबें पढ़कर आप तुरंत चाहें कि आपको रिजल्ट क्या मिल रहा है, यह कहना या पूछना गलत होगा। इसमें दूरगामी परिणाम मिलते हैं। बच्चों में समझ विकसित होती है। कई बार तो यह सब जादुई सा लगता है। जो बच्चे कोविड के दौरान नियमित पाठक रहे हैं, उनमें किताबें–कहानियां पढ़ने की ललक तथा खुशी दिखाई देती है। कहानियों पर बातचीत के दौरान इन्हीं बच्चों की सबसे पहले तथा सटीक बात आती है, जिससे हमारी बातचीत को विस्तार मिलता है।

बाल साहित्य भाषा शिक्षण में कितना सहायक है? अगर हम इस प्रश्न की जगह यह कहें कि जब हम भाषा शिक्षण करते हैं तब बाल साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उदाहरण के लिए जो बच्चे कोविड के समय में भी नियमित बाल साहित्य के पाठक रहे वो हमेशा कहानियों, कविताओं के प्रति उत्साहित रहते हैं और उन कविताओं, कहानियों पर काम करते समय अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। पाठ्यपुस्तक की कोई सामग्री पढ़ने पर सम्बन्धित बाल साहित्य की किताब पुस्तकालय में से तुरंत निकाल लाते हैं। जैसे 'झब्बर–झब्बर बालों वाला' पाठ पढ़ाने के दौरान दिया बुक कॉर्नर में से तुरंत बादलों से सम्बंधित किताब ले आयीं, जिससे पाठ को समझना और आसान हो गया। ऐसे ही और भी कई उदाहरण है–वंश, आदर्श, दिया, तनवी, मानवी, बासु आदि बच्चे कहानी पढ़ने या सुनने के बाद मौखिक व लिखित रूप से कहानी का सार प्रस्तुत करते हैं तथा नई कहानी बनाने का प्रयास भी करते हैं।

(लेखिका हेमवती चौहान राजकीय प्राथमिक विद्यालय पार का मंझरा, काशीपुर, उत्तराखण्ड में अध्यापिका के पद पर हैं।)

शिक्षक सृजन

क्या लिखूं?

क्या लिखूं?
कुछ समझ ना आए।
मन की बातें सब
लिख दी जाएं।
सब कुछ लिख चुकी कागज पर,
लिख–लिख कर मैंने डायरी दी भर।
जो मन में आये वो लिखूं मैं,
अपनी पसंद के कार्य खुशी से करूं मैं।
अब आगे क्या लिखूं न आएं समझ,
अब कविता मैं बना सकूं बड़ी सहज।
मन की बात ना रखी मन में,
ये सुनाई मैंने जन–जन में।

तितली है आई

लहराती आई तितली,
रंगीन पंखों वाली तितली।
बारिश से डरती है,
फूलों पे मरती है।
छोटे से बगीचे में,
फूलों के रंग चुराती तितली।
फिर उन्हें अपने पंखों में,
उनको सजाती तितली।
जब भी आएं वसंत रंगीन,
तितली ही जाऐ दुख विहीन।
देखो फिर आई तितली,
बारिश से डरती है तितली।

– भावना जोशी

लगन

– मनोहर चमोली 'मनु'

कोरोना के कारण स्कूल बंद थे। आज जब स्कूल खुला तो बच्चे अपना स्कूल भी नहीं पहचान पा रहे थे। कोरोना के कारण घर में रहकर क्या–क्या परेशानियां हुईं। मोबाइल से उन्होंने क्या सीखा? घर पर रहकर क्या–क्या मस्ती की। इस पर बातें खूब बातें हुईं। पहला दिन तो अपना–अपना अनुभव सुनाने में चला गया।

दूसरे दिन अनीश ने कहा,''बच्चों। चहारदीवारी के न होने से हमारे स्कूल के पेड़–पौधों को नुकसान पहुंचता है। हम फिर से स्कूल की खाली जगह को हरा–भरा करेंगे। सर्दियां आ गई हैं। गुलाब की कलम लगाने का यह सही समय है। ध्यान रहे। झुण्ड में नहीं। दूर–दूर रहकर हम स्कूल को पहले जैसा बनाने की कोशिश करते हैं।''

साहिदा ने बायां हाथ खड़ा कर दिया। अनीश ने हाँ में सिर हिलाया तो साहिदा बोली,''गुलाब की कलमें ले आऊँगी।'' अनीश मुस्कराते हुए बोले,''तुम! गुलाब की कलम कहां से लाओगी?'' साहिदा ने जवाब दिया,''घर में अम्मी ने गुलाब लगाए हुए हैं। सुर्ख लाल, चटख पीले और गुलाबी भी हैं। चाचू सहारनपुर में रहते हैं। उनकी तो नर्सरी ही है।'' फिर सोनम, जसप्रीत और पिंकी ने भी गुलाब की कलमें लाने के लिए हाथ उठाए।

तीन दिन बाद साहिदा चहकते हुए स्कूल पहुंची। उसका चेहरा गुलाब की तरह खिला हुआ था। कक्षा में अनीश बोले,''साहिदा एक–दो नहीं, अलग–अलग गुलाब की बीस कलमें ले आई है। आज हम इंटरवल के बाद इन्हें लगाएंगे।''

इंटरवल हुआ। कई सारे बच्चों ने मिलकर गुलाब की कलमें रोप दीं। स्कूल की छुट्टी हुई तो विनायक ने पूछा,''साहिदा। आज तो बहुत इतरा रही है। तूझे क्या लगता है, कलमें बचेंगी?'' साहिदा चौंकी,''बचेंगी! मतलब क्या है तेरा? देख, यदि तेरे भेजे में कोई शरारत सूझ रही है, तो समझ ले। मुझसे बुरा कोई न होगा। कहे देती हूँ।''

विनायक ने बाएं हाथ की हथेली को थप्पड़ की शक्ल देते हुए कहा,''कह देती हूँ। क्या कर लेगी? मुझे धमकी दे रही है?'' साहिदा भला क्यों चुप रहती,''चल तू घर चल।

बलराम, कक्षा– 5, नकरौंदा, डोईवाला, देहरादून

मैं आंटी से कहूँगी।'' साहिदा को गुस्से में देख विनायक और नजदीक आते हुए बोला,''क्या कहेगी? मैंने क्या किया? जरा बताना तो।'' साहिदा ने जवाब दिया,''मैं सब समझती हूँ। बस मुझे तुझसे कोई बात नहीं करनी है। समझे।'' साहिदा ने कहा। ''हां तो मत कर न। लेकिन सुन। ये गुलाब लगाने से अच्छे मार्क्स नहीं आने वाले हैं। समझी।'' विनायक ने हंसते हुए कहा।

साहिदा ने जवाब दिया,''चल–चल हवा आने दे। बड़ा आया मुझे सलाह देने वाला।'' दोनों की नोंकझोंक खत्म होने से पहले ही उनके घर आ गए। दोनों एक दूसरे को चिढ़ाते हुए अपने–अपने घर में जा घुसे। बात आई–गई हो गई। रोज सुबह स्कूल की चहल–पहल सड़कों पर दिखाई देती। दोपहर बाद घर लौटते बच्चों के दलों से सड़कें भर जातीं।

आज सुबह की प्रातःकालीन सभा में कुछ गड़बड़ था। बच्चे बार–बार लड़कियों की ओर देख रहे थे। सुबह की सभा हो गई। बच्चे अपनी–अपनी कक्षाओं में चले गए। कक्षा में अपनी सीट पर बैठी साहिदा रो रही थी। तभी अनीश हाजिरी रजिस्टर लेकर आए। पीहू ने सारा किस्सा बताया। अनीश बोले,''कल प्रातःकालीन सभा में बात होगी।'' अगले दिन प्रातःकालीन सभा में हर कोई सिर झुकाए खड़ा था। सभा के आखिर में अनीश बोले,''अच्छे काम में हमेशा से मुश्किलें आती हैं। दीवाली की छुट्टियों में भी हमारे पेड़–पौधों को नुकसान पहुंचाया गया था।

किसी को कुछ पता है? किसी ने कुछ देखा है?'' सब चुप रहे। कोई कुछ नहीं बोला। अनीश ने कहा,''साहिदा। रोना बंद करो। अपने काम पर जुटी रहो। हर रोज़ एक गुलाब की कलम और लेकर आओ। खुद उसे लगाओ।'' साहिदा ने सिसकते हुए हां में सिर हिलाया। सभा समाप्त हुई और बच्चे अपनी–अपनी कक्षा में चले गए।

साहिदा अगले दिन गुलाब की और कलमें लेकर आई। सबने तालियों से उसका स्वागत किया। उसने पूरी लगन से उन कलमों को रोपा। लेकिन यह क्या!

अगली सुबह लगाई गई गुलाब की कलमें फिर किसी ने उखाड़ कर फेंक दी थी। सभी को बुरा लगा। लेकिन इस बार साहिदा रोई नहीं। सिसकी भी नहीं। वह हर रोज़ एक–दो कलमें लेकर आतीं। सहपाठियों की मदद से उन्हें रोपती। लेकिन सुबह वह कलमें उखड़ी हुई मिलतीं। फिर एक दिन की बात है। साहिदा को परेशान देख दीपाली ने कहा,''साहिदा। तू मास्साब को सब कुछ बता क्यों नहीं देती? अगर तू नहीं बता सकती तो मैं ही बता देती हूँ।'' दीपाली की आँखें भर आईं। वह बोली,''नहीं दीपाली। मैं विनायक का नाम नहीं ले सकती। हमने या किसी ने भी कौन सा उसे गुलाब की कलमें उखाड़ते हुए देखा है।''

दीपाली ने सिर झटकते हुए कहा,''विनायक को कौन नहीं जानता। वह कई बार गुलाब की कलम वाली बात बार–बार क्यों दोहराता है। क्या तुझे पता नहीं है?''

दीपाली की बात सुनकर साहिदा चुप ही रही। साहिदा हर रोज़ कुछ गुलाब की कलमें लाती। खुद रोपती। लेकिन दूसरे दिन वह कलमें उखड़ी हुई मिलती। वह फिर नई कलमें घर से लाती। कई दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। हर दिन लगाई गई कलमें दूसरी सुबह उखड़ी हुई मिलतीं।

फिर एक दिन यह सब यकायक बंद हो गया। अब रोज़ स्कूल में गुलाब की दो–दो कलमें रोपी जाने लगीं। एक कलम साहिदा लगाती। और दूसरी कलम! दूसरी कलम कौन लगा रहा है! यह रहस्य बना हुआ था। जल्दी ही दूसरी कलम लगाने का रहस्य भी खुल गया। दरअसल हुआ यूँ था कि एक रविवार की बात थी। सुबह से ही बारिश हो रही थी। साहिदा के एक हाथ में छतरी और दूसरे हाथ में गुलाब की कलमें थीं। वह स्कूल पहुंची। बड़ी मुश्किल से वह गुलाब की कलमें रोप पाई।

सुबह से शाम हो गई। बारिश थी कि थमने का नाम ही नहीं ले रही थी। अंधेरा होने को आया तो अनीश ने पुकारा,''विनायक। मैं तो सोच रहा था कि तुम आज नहीं आओगे! लेकिन तुम तो लगन के पक्के निकले। शाबास।'' विनायक डर गया। अनीश को मुस्कराते देख वह हैरान था। धीरे से बोला,''सर, आप मुझे डांटने के बजाय शाबासी दे रहे हैं!''

अनीश ने हौले से विनायक के कांधे पर हाथ रख दिया। फिर बोले,''विनायक। आज की तरह मैं उस रात भी स्कूल में ही रुक गया था, जिस दिन हम सबने मिलकर कलमें रोपी थीं। आखिर कौन हमारे स्कूल के आंगन को खराब करता है। यह बात मुझे परेशान कर रही थी। शाम को तुम्हें स्कूल के अंदर आता देख मैं सब कुछ समझ गया था।''

विनायक के पैर कांपने लगे। वह हिचकते हुए बोला,''तो फिर आपने उसी दिन मुझे क्यों नहीं समझाया?'' अनीश ने जवाब दिया,''अगर उस दिन समझा देता तो तुम्हारी लगन का कैसे पता चलता! इतनी बारिश में भी तुम अपने काम को निपटाने के लिए यहां आए हो। यह क्या कम है!'' विनायक ने पूछा,''इसे लगन कहते हैं? यह तो बुरा काम है।'' अनीश ने जवाब दिया,''हां। यह लगन ही है। यह और बात है कि लगन अच्छे काम की भी हो सकती है और खराब काम की भी। यह तो हम पर निर्भर है कि हमें अपनी लगन को क्या दिशा देनी है। जब तुम्हें यह पता है कि कुछ काम बुरे भी होते हैं तो अब कुछ भी कहने की क्या ज़रूरत है। ज़रूरत है?''

यह सुनकर विनायक चुप हो गया।

अनीश बोले,''यदि उस पहले दिन से ही हम सब साहिदा की मदद करते तो आज शायद बात कुछ और ही होती। आज की इस बारिश में गुलाब की कलमों में कोंपलें आ जातीं। है न?'' विनायक चुप रहा। बस उसने हां में सिर हिलाया। अनीश ने विनायक से कहा,''अंधेरा होने वाला है। अब घर जाओ।'' विनायक ने धीरे से कहा,''नहीं सर।'' अनीश ने पूछा,''नहीं ! घर नहीं जाओगे तो कहां जाओगे?'' ''साहिदा के घर। उसे यह बताने के लिए कि कल से मैं भी गुलाब की कलमें लाऊंगा। उन्हें रोपूंगा भी। सर्दियां बीत जाने के बाद उन्हें खाद–पानी भी दूंगा।''

''अकेले क्यों जाओगे? मैं भी चलता हूँ।'' अनीश ने विनायक की आंखों में झांकते हुए कहा। बस! उसी दिन से स्कूल की खाली पड़ी भूमि में दो–दो कलमें लग रही थीं।

(लेखक राजकीय प्राथमिक विद्यालय पौड़ी, उत्तराखण्ड में अध्यापक के पद पर हैं।)

खिल उठते हैं बच्चे

फोटो– पुरुषोत्तम

पढ़ने का कौशल विकसित करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि बच्चे आपको पढ़ते हुए देखें। इससे उनकी पढ़ने की जिज्ञासा बढ़ती है। बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर आप कहानी, किताब पढ़कर सुनाएं। यह ध्यान रहे कि प्रत्येक बच्चे को किताब के चित्र एवं लिखावट साफ–साफ दिखाई दें।

– धर्मपाल गंगवार

मैं जिस विद्यालय में कार्यरत हूं वहां के समुदाय की अधिकतर आबादी निरक्षर है। घरों में पढ़ने का माहौल बिल्कुल नहीं है। ऐसे में विद्यालय में ही मुझे पढ़ने का माहौल बनाना था। सो मैंने विद्यालय में एक सुसज्जित पुस्तकालय का निर्माण किया। इसमें मैंने अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से ढेर सारी बाल साहित्य की पुस्तकें मंगवाई। प्रारंभ में ये किताबें मैंने स्वयं के खर्चे से मंगवाईं बाद में इस मद में धनराशि भी मिलने लगी।

बरखा सीरीज की किताबें विद्यालय में पहले से ही थीं। अब मेरे पुस्तकालय में अच्छा खासा बाल साहित्य उपलब्ध हो गया था। पुस्तकालय की एक दीवार में खुली रैक बनवाई जिसमें किताबों को वर्गीकृत करके रख दिया। सभी किताबें बच्चों की पहुंच में हैं। खाली दीवार पर मैंने कोरी फ्लेक्सी लगाकर बच्चों के नाम लिखकर स्थान बांट दिए। जिससे बच्चे अपनी पढ़ी हुई किताब का नाम अपने नाम वाले कॉलम में लिख सकें। इसके साथ बच्चों को लिखने के मौके देने के लिए स्केच पेन, पेंसिल, कलर आदि भी मैंने पर्याप्त मात्रा में पुस्तकालय में उपलब्ध कराए हैं।

डॉक्टर कृष्ण कुमार की किताब बच्चे की भाषा और अध्यापक तथा गिजुभाई बधेका की पुस्तकें कठिन है माता पिता बनना, माता–पिता से अपेक्षाएं तथा दिवास्वप्न पढ़कर मैं भली–भांति समझ गया था कि डर का वातावरण सीखने की सबसे बड़ी बाधा है। बच्चों में डर ही है जो उन्हें झूठ बोलने को मजबूर करता है। अनेक गलत काम बच्चे केवल डर के कारण ही करते हैं। सो मैं अपने बच्चों को किसी भी प्रकार का दंड बिल्कुल भी नहीं देता हूं। सभी बच्चे मुझसे हाथ मिलाते हैं और प्रसन्नचित्त रहते हैं। प्रत्येक बच्चा यह मानता है कि गुरुजी मुझे ही सबसे अच्छा मानते हैं। प्यार, भरोसा और धैर्य तो सीखने की धुरी हैं। जिन्हें केवल शिक्षक ही दे सकते हैं। बच्चों के साथ आत्मीयता होनी चाहिए। मैंने यह भी समझ बनाई कि सभी बच्चे सीखने के लिए ही बने हैं और हर बच्चे की

सीखने की गति अलग–अलग होती है।

मैंने यह भी तय किया कि बच्चों को संदर्भ के साथ ही पढ़ाना है। जब तक शब्द और वाक्य संदर्भ से न जुड़े तब तक उनका कोई अर्थ नहीं होता है। मनुष्य का मस्तिष्क केवल अर्थपूर्ण सामग्री को ही ग्रहण करता है। मैंने यह भी समझ बनाई कि बच्चा पढ़कर ही पढ़ना सीखता है। पढ़ना सीखना आसान बनाने के लिए सबसे जरूरी है, पढ़ने को आसान बनाना। जब बच्चा पढ़ने की कोशिश कर रहा हो तो हमें टोकाटाकी बिल्कुल नहीं करनी चाहिए। पढ़ने की कोशिश करते समय बच्चे को शाबाशी अवश्य मिलनी चाहिए।

पढ़ने का कौशल विकसित करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि बच्चे आपको पढ़ते हुए देखें। इससे उनकी पढ़ने की जिज्ञासा बढ़ती है। बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर आप कहानी, किताब पढ़कर सुनाएं। यह ध्यान रहे कि प्रत्येक बच्चे को किताब के चित्र एवं लिखावट साफ–साफ दिखाई दें। अब कहानी पर बातचीत की जा सकती है, चित्र बनवाए जा सकते हैं या कहानी को अपने शब्दों में लिखने या सुनाने को कहा जा सकता है। पढ़ते समय बच्चे चित्र देखकर या यूं ही अनुमान लगाते हैं। अनुमान लगाने का यह कौशल, पढ़ने के कौशल को बढ़ाता है। यदि बच्चा पढ़ते समय किताब में आए किसी शब्द के स्थान पर अपना कोई शब्द इस्तेमाल करता है तो अध्यापक को खुश होना चाहिए।

यह देखने को मिला है कि बच्चे पुस्तकालय में जाने को लालायित रहते हैं। यहां उनके लिए अनेक प्रकार की सचित्र किताबें हैं। किताबें पढ़ने, देखने या पलटने पर किसी प्रकार की पाबंदी नहीं रहती। सो बच्चे किताबों पर टूट पड़ते हैं। मैं सप्ताह में दो बार बरखा सीरीज एवं अन्य बाल साहित्य की पुस्तकें पढ़ाने लगा। कुछ बच्चे मेरे साथ किताबें पढ़ते हैं और कुछ स्वयं पढ़ने की कोशिश करते हैं। पुस्तकालय में अनेक प्रकार के कविता पोस्टर भी हैं सो कुछ बच्चे कविताएं पढ़ते हैं। किताब पढ़ाने के बाद बच्चों के साथ उस पर बातचीत भी होती है। उनसे चित्रों पर भी बातचीत होती है व उन्हें चित्र बनाने के लिए सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। इससे बच्चे बहुत प्रसन्न रहते हैं। उन पर किसी प्रकार का दबाव नहीं रहता है। धीरे–धीरे बच्चों को किताबें पढ़ने अथवा किताबें पढ़ते हुए सुनने में आनंद आने लगा। जब कभी मैं उन्हें पुस्तकालय में नहीं ले जा पाता तो वे कहते कि आज वहां नहीं ले चलोगे। इन बच्चों में दो नाम अमन और मो. अमान मुझे आज भी अच्छी तरह याद हैं। यह कक्षा 2 की बात है। तब मैंने पुस्तकालय के प्रयोग पर एक लेख भी लिखा था जो शैक्षिक प्रवाह में छपा था। कक्षा 2 के अंतिम दिनों तक आयशा, अमन, अमान, सरिता, शिफा, सिमरन तथा रहनुमा बरखा सीरीज व अन्य किताबें अच्छी तरह से पढ़ने लगे थे। साहिल, अंशिका और सिमरन सुंदर चित्र बनाने लगे थे। इस कार्य में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के साथियों का बड़ा सहयोग रहा है। वे साथी विद्यालय आते रहे हैं और उनसे बातचीत होती रही है। इन विद्यालय के लगभग सभी बच्चे भली–भांति जानते हैं। उनके आने का इंतजार मुझे और सभी बच्चों को रहता है।

पुस्तकालय की गतिविधियां

पुस्तकालय में कई तरह की गतिविधियां की जाती हैं। मैं उन्हें नियमित रूप से कहानियां सुनाता रहा हूं और कक्षा में कहानियां बनवाने पर कार्य भी चलता रहा। कहानी बनाने के लिए कई विधियां प्रयोग में लाई गईं। पहली यह कि पहला वाक्य मैं बोलूंगा फिर मैं जिस बच्चे का नाम लूंगा वह उससे जुड़ा हुआ दूसरा वाक्य बोलेगा। जैसे मैंने बोला एक कुत्ता था। अब मैं जिस बच्चे का नाम लूंगा वह बोल सकता है– कुत्ता काला था। अब तीसरे बच्चे का नाम लेने पर वह बोल सकता है–कुत्ता भूखा था। इसी तरह सिलसिला चलता रहता है और मैं हर एक बच्चे द्वारा बोला गया वाक्य ब्लैकबोर्ड पर लिखता रहता हूं। सभी बच्चों की बारी आती है और धीरे–धीरे ब्लैकबोर्ड भर जाता है। अब सामने होती है स्वयं बनाई हुई एक बढ़िया कहानी। खेल–खेल में ही कहानी बन जाती है। अब एक–एक बच्चा खड़े होकर कहानी पढ़ता है दूसरे बच्चे उसे दोहराते हैं। इसके बाद अपनी कॉपी पर लिखते हैं। इस तरह से कहानी बनाने का सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि इसमें हर बच्चा चाहता है कि मेरी भी कोई बात ब्लैकबोर्ड पर लिखी जाय। इससे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है। इस विधि से पढ़ने के कौशल का विकास होता है। जब बच्चे के द्वारा बोला गया वाक्य ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाता है तो वह उसे अवश्य पढ़ लेता है चाहे उसे वर्णमाला न भी आती हो।

मैंने कहानी बनाने का दूसरा तरीका यह अपनाया कि ब्लैकबोर्ड पर कुछ शब्द लिख दिए जैसे– लड़की, चिड़िया, हाथी, जंगल, मोर, तितली, वर्षा तथा नदी आदि। अब पूरी कक्षा को चार समूहों में बांटकर प्रत्येक समूह को अलग–अलग बैठाकर उपयुक्त शब्दों को सम्मिलित करते हुए कहानी बनाने को कहा जाता है। इस विधि से बहुत शानदार कहानियां बनती हैं। कहानी

बना लेने के बाद अब पूरी कक्षा एक साथ बैठती है और हर समूह अपनी–अपनी कहानी पढ़कर सुनता है। इस विधि से कहानी बनाने में आनंद यह आता है कि कोई समूह तो लड़की और चिड़िया की दोस्ती करा देता है और कोई समूह मोर और हाथी की। कोई समूह लड़की का नाम, पता और उम्र बताता है और कोई नहीं बताता। कोई समूह जंगल में वर्षा करा देता है और कोई वर्षा के बिना जानवरों और पक्षियों को व्याकुल कर देता है।

जब एक समूह कहानी का वाचन करता है तो दूसरे समूह ध्यान से सुनते हैं टिप्पणी करते हैं कि इस घटना को इस तरह दिखाया गया होता तो और अच्छी कहानी बनती। इसी तरह प्रत्येक समूह अपनी–अपनी कहानी का वाचन करता है और दूसरे समूह उस पर टिप्पणी करते हैं।

कहानियां लिखने का यह कार्य मैंने कक्षा 3 से ही प्रारंभ कर दिया था। इस समय मैंने बच्चों की भावना पर ध्यान दिया भाषा पर नहीं। उनकी भाषाई या वर्तनी की गलती के लिए टोकाटाकी बिल्कुल नहीं की। इससे बच्चों में आत्मविश्वास जगा कि वे भी कहानी लिख सकते हैं। अब वे पुस्तकालय में कहानी या किताब लिखने वाले का नाम जानने की कोशिश करने लगे।

पांचवीं कक्षा में आते–आते वे अपनी अधिकतर कठिनाइयां मुझसे साझा करने लगे। वे पुस्तकालय में जाने का इंतजार करते, न भेजने पर नाराज तक हो जाते। अब तक अधिकतर बच्चे किताबें पढ़ने लगे। अपनी पढ़ी हुई किताब का नाम फ्लैक्सी पर लिख देते। इससे वे एक–दूसरे से पूछते हैं कि यह किताब कैसी लगी? अच्छी बताने पर स्वयं भी वही किताब ढूंढते और पढ़ते हैं। बच्चों में किताबें पढ़ने की आदत सी बन गई। एक होड़ भी लग गई कि सबसे ज्यादा किताबें किसने पढ़ी हैं।

यूं तो सभी किताबें बच्चे बड़े चाव से पढ़ते हैं लेकिन सबसे अधिक जो किताबें पसंद की गई वे हैं गिजूभाई की कहानियां और कजरी गाय। गिजूभाई की कहानियों की मेरे पुस्तकालय में सात किताबें हैं और उनमें लगभग साठ कहानियां हैं। ये कहानियां उत्कृष्ट बाल साहित्य हैं। मैंने अधिकतर कहानियां बच्चों को पढ़कर सुनाई हैं। पढ़कर कहानी सुनाते वक्त वे बच्चे भी कहानी सुनने के लिए बैठ जाते हैं जो भली–भांति पढ़ सकते हैं। गिजूभाई की जो कहानियां सबसे ज्यादा पसंद की गई वे हैं–बगुला बेईमान, सुनहरे बालों वाली लड़की, नकल बिन अकल, बंदरिया खाए सेवइयां, खड़र–खड़र कुछ खोदत है, आप उन्नीस तो हम बीस आदि। इसी तरह कजरी गाय सीरीज की किताबें खूब पढ़ी व सुनी गईं। बरखा सीरीज को सभी बच्चे पसंद करते हैं। आयशा, शिफा तथा शहनाज जैसे कुछ ऐसे पाठक हैं जो चुपके से पुस्तकालय में निकल जाते हैं और शांतिपूर्वक पढ़ते रहते हैं। यहां मैं अपने कुछ ऐसे पाठकों का जिक्र करना चाहूंगा जो हमेशा ही शांत रहते हैं। ये बच्चे केवल दूसरे बच्चों को या मुझे पढ़ते हुए सुनते रहते थे। इन बच्चों के नाम हैं–अंशिका, सानिया और निहाल। मुझे याद है कि ये बच्चे तीसरी तक पढ़ना नहीं सीख पाए थे। चौथी कक्षा के मध्य वर्ष में मेरी सहयोगी अध्यापिका ने बताया कि अंशिका, सानिया और निहाल अच्छे से किताब पढ़ने लगे हैं। मुझे विश्वास नहीं हुआ क्योंकि मैं अक्सर देखता था कि ये शांत बैठे केवल सुनते रहते थे। कक्षा में भी कभी किताब पढ़ने के लिए खड़े नहीं होते थे। अगले दिन जब मैंने जांच की तो मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। वास्तव में ये बच्चे बरखा सीरीज व अन्य किताबें आसानी से पढ़ रहे थे। ये बच्चे कैसे पढ़ना सीखे मुझे नहीं पता। मेरे प्रोत्साहन देने पर ये बच्चे कक्षा में भी खड़े होकर पाठ पढ़ने लगे। धीरे–धीरे ये बच्चे नियमित पाठक बन गए।

लेखन और अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए मैंने एक और गतिविधि कराई वह है–डायरी लेखन। चौथी कक्षा में मैंने कुछ बच्चों से डायरी लेखन का कार्य कराया था। पांचवीं में मैंने सभी बच्चों को सप्ताह में दो दिन डायरी लिखने को कहा। अधिकतर बच्चों ने सुंदर डायरी लिखी। डायरी लेखन के विषय रोचक थे। अधिकतर बच्चों के विषय अपने आस–पास फैली हुई चीजों पर थे जैसे–स्कूल, बाजार, भोजनमाता, पेड़, घर, गाय, चप्पल, कुत्ता, बकरी, पानी, बादल, ईद, दीपावली, पंद्रह अगस्त, गुरुजी आदि। लेखन का कार्य कराते समय मैंने देखा कि बच्चों की वर्तनी सुधार का सही समय चौथी व पांचवीं कक्षा में होता है। जब बच्चे का लिखा हुआ आप स्वयं पढ़कर सुनाते हैं तो बच्चा अधिकतर स्वयं ही अपनी गलती पकड़ लेता और उसे गलती का अहसास भी होता है। लगातार पाठयक्रम से अलग किताबें पढ़ने, कहानियां सुनने व लिखने, भ्रमण व अवलोकन करने तथा डायरी लेखन जैसी गतिविधियां लगातार संचालित करने से मेरे सभी बच्चों में अंतर्निहित क्षमताओं का निखार हुआ है। सबसे खास बात यह है कि वे अत्यंत प्रसन्न हैं लेकिन यह विद्यालय उन्हें छोड़ना होगा इसको लेकर वह दुःखी भी हो जाते हैं।

(लेखक राजकीय प्राथमिक विद्यालय, हल्दीपचपेड़ा खटीमा, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड में प्रधानाध्यापक हैं।)

कहानियां जो बच्चे के जीवन से जुड़ें

– रेनू उपाध्याय

वर्ष 2021 सितंबर में कक्षा शिक्षण का कार्य प्रारंभ किया। जो बच्चे कोरोना काल में संपर्क में थे उनमें तो कोई खास अंतर नहीं आया था पर किसी कारणवश जिन बच्चों जैसे संदीप, देवाशीष, अभिमन्यु, कंचन, मनीष, भावना, यश, कुमार, अविनाश आदि से संपर्क नहीं हो पाया था कक्षा शिक्षण के दौरान समझा कि यह बच्चे कक्षा दो में सीखी गई चीजों को भी भूल चुके थे। उन्हें फिर से पढ़ना सिखाना चुनौतीपूर्ण काम था समझ नहीं आ रहा था कि किस तरह से बच्चों को पुनः पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया से जोड़ा जाए ऐसे में बरखा सीरीज की किताबों का प्रयोग बहुत अच्छे परिणाम लेकर आया। आज बच्चे कुछ मात्राओं की गलती के साथ पढ़ने का प्रयास कर रहे हैं तो कुछ जैसे संदीप, देवाशीष, भावना आदि लगभग न के बराबर गलतियां कर रहे हैं। मेरे द्वारा निम्न प्रकार बरखा सीरीज पर कक्षाकक्षा में काम किया गया।

बच्चों का चयन

सर्वप्रथम बच्चे कितना याद रख पाए हैं और कितना भूले हैं यह जानने के लिए मैंने कुछ सरल किताबों को उन्हें पढ़ाकर देखा इससे बच्चों को छांटने में सहायता मिली कि कौन बच्चे समझ के साथ पढ़ रहे हैं कौन रुक–रुक कर पढ़ रहे हैं और किसे पढ़ने में परेशानी हो रही है। चयन के आधार पर अपनी कार्य योजना बनाई कि कौन से बच्चे को किस तरह और किस समय लेना है।

योजना पर कार्य

मुझे अपनी योजना इस तरह बनानी थी कि जब मैं पढ़ना सीख रहे बच्चों पर काम करूं तो जो बच्चे समझ के साथ पढ़ते हैं वह खाली न रहें। इसके लिए मैंने पुस्तकालय वाले घंटे पर काम करना प्रारंभ किया सभी बच्चों को एक साथ बैठाकर किसी एक कहानी की किताब, उसके मुखपृष्ठ, चित्र, कहानी आदि पर बच्चों से बातचीत की जाती। कहानी बच्चों को सुनाई जाती थी। उसके बाद जो बच्चे समझ के साथ पढ़ते थे उन्हें कहानी से संबंधित कार्य जैसे सुनी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखना कहानी के पात्रों के साथ नई कहानी का निर्माण आदि लिखने व चित्र निर्माण का काम दिया। इसके बाद चयनित बच्चे अभिमन्यु, देवाशीष, संदीप, भावना, संजना, यश, नितेश अविनाश आदि को बरखा सीरीज की किताबें दीं, स्वयं से पढ़ने की कोशिश करने को कहा। किताब चित्रात्मक व सरल शब्दों में है तो बच्चे शब्दों में अनुमान लगाकर पढ़ने का प्रयास कर रहे थे और जहां पर परेशानी हो रही थी आकर उस पंक्ति को मुझसे पढ़ने को कहते फिर खुद पढ़ते जो बच्चे बिल्कुल नहीं पढ़ पा रहे थे उनके लिए स्वयं एक पैराग्राफ पढ़कर सुनाया फिर उनसे पढ़ने को कहा इस तरह बार–बार अभ्यास से बच्चों में काफी सुधार आया अब मेरी कक्षा में सिर्फ 2 बच्चे यश कुमार और अविनाश ऐसे हैं कि जिनके लिए अलग से कार्य योजना की आवश्यकता है वह अभी अक्षरों की समझ भी नहीं बना पाए हैं।

बरखा सीरीज कैसे पढ़ना सीखने में सहायक है ?

यह किताबें बहुत ही सरल शब्दों में लिखी गई है और साथ ही चित्र भी स्पष्ट हैं जो वाक्यों से पूरी तरह मेल खाते हैं यह चित्र बच्चों को अनुमान लगाकर पढ़ने का अवसर प्रदान करते हैं। कहानी में पात्रों की पुनरावृत्ति, शब्दों की पुनरावृति आदि अक्षरों को समझने में मदद करती है। पात्रों के नाम मुखपृष्ठ अगले पन्ने और कहानी में भी बार–बार आ रहे हैं तो बच्चे सरलता से उसे पहचान पा रहे हैं। इसके अतिरिक्त एक बात जो इस सीरीज में सबसे अच्छी है वह यह कि एक ही पात्र कई कहानियों में है जिससे बच्चे अलग–अलग कहानियों को पढ़ते–पढ़ते उन पात्रों से भी जुड़ाव महसूस करने लगते हैं और तुरंत उस शब्द को पढ़ लेते हैं। जैसे जमाल और मदन। भुट्टा, पत्तल, फूल रोटी, मीठे मीठे गुलगुले, चावल आदि बहुत सी कहानियों पर बार–बार आए हैं ऐसे ही जीत और बबली गिल्ली डंडा झूला तबला जीत की पीपनी आदि मैं मुख्य पात्र हैं इससे जुड़ी हुई घटनाओं को पढ़ते–पढ़ते बच्चे पात्रों को चित्र देखकर ही पहचाने लगते हैं साथ ही कहानियां इस तरह की हैं जो बच्चों के रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी हुई है।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय, टेढ़ाघाट, खटीमा ऊधमसिंह नगर में शिक्षिका हैं।)

मन को संभालता है बाल साहित्य

– खजान सिंह

जीवन की कठिनाइयां, दुश्वारियां यूं ही कम न थीं कि कोरोना महामारी ने बुरी तरह जीवन की लय ही बिगाड़ दी। वर्ष 2020 को विदा करते हुए हमने उम्मीद की थी की 2021 में हम नए सामान्य की ओर बढ़ रहे हैं। घरों में और जहाँ तहां कैद जिंदगियों में बसंत आगमन के साथ नई जुम्बिश दिखने लगी थी। हम वर्चुअल दुनिया से निकलकर वास्तविक दुनिया में कदम बढ़ाने लगे थे। हम ख्वाब देखने लगे थे कि अब हम खुली हवा में सांस ले पायेंगे। तमाम फासलों के साथ भौतिक दूरियाँ नजदीकियां बनेंगी और न जाने क्या–क्या अभिलाषाएं मचल रही थी।

हमारा मूल काम शिक्षा की बेहतरी है उसमें छाये संकट के कारण हुई क्षति का आकलन किया जा चुका था इससे उभरने के लिए मुकम्मल योजना आकार ले चुकी थी हम अपने समूचे लाव लश्कर के साथ तैयार हो गए थे। मगर दुर्भाग्य है कि यह हो न सका। अप्रैल और मई–2021 आने तक हमने जो मंज़र देखा वह कभी भुलाया नहीं जा सकता वह दुःस्वप्न की तरह जीवन भर हमारा पीछा करेगा। 2020 के दर्दनाक दृश्यों, चिंताओं से उभरे भी नहीं थे कि 2021 की पहली तिमाही में यह जहां फिर से लॉकडाउन हो गया था। असहाय आमजन, हांफती व्यवस्था, उखड़ती सांसे, दर्दनांक मौतें देखी, जाएं तो जाएं कहां? करें तो करें क्या? फिर से यह कश्मकश होने लगी। मगर कहते हैं न कि भला काम करने के लिए कभी देर नहीं हुई रहती। बर्तोल्त ब्रेख्त की पंक्तिया हैं कि "क्या अंधेरे समय में भी गीत गाये जायेंगे? हां, गाये जायेंगे तब भी मगर अंधेरे के बारे में" बुरे वक्त में भय और संकंट भी ताकत देता है इस संकट और नई परिस्थितियों में काम करने के लिए तमाम भले लोगों ने फिर से कमर कस ली हैं।

मगर समर अभी शेष है मित्रों लाज़िमी है कि इस वर्ष मूल में हमारी चिंता है कि इस महामारी में जो यह शैक्षिक संकट उत्पन्न हुआ है उसमें बच्चों के सीखने की क्षति को पूरित करना बहुत जरूरी है। यह क्षति अनेक रूपों में दिख रही है हम यह नहीं भूले हैं कि बच्चे भी जीते–जागते इंसान हैं जो ज्ञान, बोध, सृजन और मानवीय संबंधों के जगत में बहुत संवेदनशीलता के साथ

नवीन कुमार, कक्षा–4, राजकीय प्राथमिक विद्यालय डांडा जंगल, विकासनगर, देहरादून

मौजूद रहते हैं। बेहतर भविष्य के लिए उनकी जरूरतों को संबोधित करना इस समय की सबसे बड़ी प्राथमिकता है।

हमने माह नवम्बर–2021 में सैकड़ों प्राथमिक शिक्षक साथियों के साथ बुनियादी भाषा और गणित शिक्षण पर बातचीत की थी उनमें से 80 प्रतिशत स्कूलों के शिक्षकों ने अपने 2 माह के स्कूल शिक्षण अनुभवों के आधार पर बच्चों की स्थिति का एक मोटा आकलन प्रस्तुत किया, शिक्षकों ने बताया कि तीन तरह से बच्चों को देख रहे हैं एक वह समूह है। जिनको सब कुछ सिरे से सिखाया जाना है। दूसरा व समूह है जो भाषा और गणित और अन्य अवधारणाओं को समझने में संघर्ष कर रहे हैं। उनका काफी लर्निंग सर्वे हुआ है। तीसरा बहुत कम संख्या में वह बच्चे हैं जो अपनी कक्षा के अनुरूप स्तर के हैं। शिक्षकों ने एक तथ्य यह भी बताया कि कोविड–19 के लॉकडाउन के बाद जब स्कूल खुले तो महसूस हुआ कि सामाजिक और भावनात्मक मुद्दे कई रूपों में है। शिक्षक साथियों ने यह भी बताया कि स्कूल बदरंग हो गए हैं, रिसोर्स व शिक्षण अधिगम सामग्री बेकार हो गयी हैं स्कूलों का माकूल माहौल भी बनाना है। साथ–साथ तीन तरह से बच्चों को भी सिखाना हैं, तो क्या किया जाए? कैसे प्लान करें कि हम हर जरूरत के बच्चे को सिखा पायें? इस क्विक एक्सरसाइज से यही समझ आ रहा है कि शिक्षकों के पास शिक्षण की पुख्ता योजना होनी बहुत

जरूरी है जिसमें वर्तमान जरूरतों के मुताबिक शिक्षण की रणनीतियां और शिक्षण के प्रभावी अभ्यास हो।

निःसंदेह वर्तमान परिस्थितियों में भाषा शिक्षण के बुनियादी कौशलों को प्राप्त करने के लिए बाल साहित्य सबसे उपयुक्त जरिया लगता है। देखा जाए तो बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में भी बाल साहित्य ही एक उपयुक्त चयन के रूप में नजर आता है। पाठयपुस्तकें अतिरिक्त यही बताती हैं की इस चयन को कक्षा में कैसे बरता जाए? बाल साहित्य में भाषाई कौशलों को विकसित करने की खूब संभावनाएं मौजूद रहती हैं मसलन आरंभिक भाषा शिक्षण व पढ़ने लिखने के विस्तार को देखें जैसे मौखिक भाषा का विकास, ध्वनि और उसके लिए निर्धारित चिह्नों में सम्बन्धों की समझ, लिपि से परिचय, दूसरों की कही/लिखी सरल बात को समझ पाना और अपेक्षित उत्तर दे पाना। शुरुआती पढ़ना/लिखना, सरल वाक्यों में अपनी बात को मौखिक व लिखित रूप में व्यक्त कर पाना और पढ़ने लिखने के विस्तार में, मौखिक अभिव्यक्ति में विस्तृत और सटीक विवरण प्रस्तुत करने की क्षमता, किसी घटना, कहानी या कविता पर अपने विचार बेझिझक व्यक्त कर पाने की क्षमता, कब, कहां, कैसे, क्यों आदि प्रश्न करने और जवाब दे पाने की क्षमता। पढ़े हुए को अपने संदर्भों से जोड़कर अर्थ निकाल पाने की क्षमता, अपने स्तर के किस्से कहानियों को पढ़कर उसके मर्म को समझ पाने की क्षमता, संदर्भ के आधार पर अपरिचित शब्दों के अनुमान लगा पाने की क्षमता, पढ़े हुए या सुने हुए पाठ के आधार पर अपनी समझ को सही वाक्य व आधारभूत व्याकरण और विरामचिह्नों का उपयोग करते हुए मौखिक और लिखित रूप में व्यक्त कर पाने की क्षमता, अनुभव और कल्पना के आधार पर किस्से कहानी या कविता जैसा कुछ गढ़ पाने की क्षमता बड़े ही रोचकता व खूबसूरती के साथ मौजूद रहती हैं।

इसके साथ–साथ बाल साहित्य बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक पक्ष को भी प्रभावी रूप में संवेदित करता है। यह महामारी का दौर है इसमें बच्चों की मनस्थिति को भी अनेक रूपों में प्रभावित किया है। इसमें बाल साहित्य का उपयोग बेहद महत्वपूर्ण है। साथ ही यह भी समझना कि बच्चों के बारे में लिखी गयी सभी किताबें बाल साहित्य नहीं होतीं। संभव है कि बच्चे की मुख्य भूमिका वाली किताबों की विषयवस्तु या उनमें उठाए गए मुद्दे बच्चों के लिए उपयुक्त न हों। अच्छा बाल साहित्य सरल होता है लेकिन उसे लिखना सरल नहीं होता। हम देखें तो बहुत सारा लोकप्रिय बाल साहित्य पर्याप्त जटिल है, लेकिन वो बच्चों की संज्ञानात्मक और भावनात्मक संवेदनशीलता को उद्दीपित करता है। एक अच्छी किताब बच्चों में सशक्त भावनाओं का संचार करती है। ये बच्चों को एक ऐसा झरोखा प्रदान करती हैं जिससे कि बच्चे अपने स्वयं के जीवन और इससे जुड़ी चिंताओं का विश्लेषण कर सकें। अच्छी किताबें बच्चों को दूसरों के जीने के तरीकों को देखने–समझने और साथ ही साथ यह एहसास करने में सक्षम बनाती हैं कि दूसरों की चिंताएं/परेशानियां शायद उनकी अपनी चिंताओं से बहुत अलग नहीं हैं। अच्छी किताबें कल्पना को सिर्फ पंख ही नहीं देतीं वरन आकार भी देती हैं। बाल साहित्य विधाओं की दृष्टि से भी भरा–पूरा हो। जानकारीपरक पुस्तकें, गतिविधि आधारित पुस्तकें, कवितायें, पहेलियां, पत्र डायरियां सभी कुछ हो सकता है, बशर्ते ज्ञान देने व उपदेश देने की नीयत न हो। इसमें फिक्शन के साथ–साथ अनेक प्रकार का मौखिक, डिजिटल साहित्य व अनेक प्रकार के रोचक टेक्स्ट शामिल है इसका फलक काफी विस्तृत है। तालाबंदी के दौरान अनेक लोगों के इसको खोजा बीना है, संकलित किया है और प्रसारित भी किया है। तो अब उचित वक्त है कि इसका प्रयोग किया जा सके।

यूं तो हमारी सभ्यता ने बच्चों को अभी ठीक से समझा ही नहीं है तिस पर यह महामारी की चोट। इस बात की गंभीरता को समझा जा सकता है कि इधर जब कुछ कुछ खुलने की शुरुआत हुई तो हमने बच्चों की मनोस्थिति को टटोलने का प्रयास किया इसमें एक अभिभावक ने बताया कि बच्चे किस तरह के दुःस्वप्न से गुज़र रहे हैं उनके मन में किस तरह के मनोमालिन्य की स्थितियां मौजूद हैं।

एक पांच साल की बच्ची एकांत कोने में बैठी अपनी दादी को याद करते हुए सिसक रही थी। उनकी आंखों से आंसुओं का सैलाब थम ही नहीं रहा था। जब मैडम ने गले लगाया तो वह उनसे जोर से लिपट गयी। वह सिसकते हुए बोली की काली परी आयी थी। उसने बड़ी बड़ी लाल आंखें दिखाईं और कहा कि कोई नहीं बचेगा। सारे खिलौने–छोटू गुड़िया, मंजली, खरगोश सब ले जायेगी। दादी तो गयी पर पापा, मांजी, दीदी सबको ही ले जायेगी। यह कहते–कहते वह फफककर रो पड़ी।

यह एक बुरा सपना था। मगर हम देख पाते हैं कि तमाम बच्चों के बस्ते, खेल खिलौने, सुख–चैन खुशियां, चहक–महक खेल– सृजन के संवाद बहुतेरी आशाएं और आकाक्षाएं, घर की स्थिति गांव मोहल्ले के सम्बन्ध सब बंदी के पहले जैसे भी नहीं है। न जाने इस तरह के भय आशंकाएं कितने रूपों में प्रकट हो रही हैं। यह महसूस हो

कहानी– खुशियों की लड़ाई

खुशी को नानी के घर जाना है। बहुत दिनों से सोच रही है कि इस बार मम्मी से कहेगी किसी को नहीं बताना कि हम कब नानी के घर जा रहे हैं। बल्कि इस बार मम्मी को नहीं ले जाएगी। ना ही ले जाएगी दीदी को। मौसी के बच्चों में से भी किसी से नहीं कहेगी कि वह नानी के घर कब आ जा रही है। पर ऐसा कैसे हो सकता है।

खुशी की दो मौसी हैं बड़ी मौसी छोटी मौसी और दोनों ही नानी के ही शहर में और नानी के घर के पास ही रहती हैं। ऐसा क्यों होता है खुशी अक्सर सोचती है। ये मेरी मौसियां दूसरे शहर में क्यों नहीं रहतीं? माँ की तरह इन्होंने दूसरे शहर में शादी क्यों नहीं की? सबको बताना क्यों जरूरी है कि हम नानी के घर आ रहे हैं? कितने दिन रहेंगे? ये भी बताना पड़ता है सबको। नहीं बताएंगी किसी को कुछ भी, सब अकेले खाएगी। नानी के साथ खूब खेलेगी, पर नानी तो बूढ़ी भी हो गईं हैं और मामी स्कूल जाती हैं तो अकेले–अकेले वो क्या करेगी। फिर यादों के टोकरे में से खुशी ने एक याद उठाई पर वो तो पूरी यादों की लड़ थी। सभी बड़े अपने कामों में लगे रहते हैं तब बड़ा अच्छा लगता है जब सब बहन भाई इकट्ठे होते हैं और खूब खेलते हैं। ऐसा लगता है जैसे हम वहां के प्रधानमंत्री हैं। दीदी हम सब की लीडर बन जाती है। शरारतें करने पर सबके हिस्से की डांट भी दीदी अपने ऊपर ले लेती है। हम बहनों को बहुत मजा आता है जब छोटे भाई पर छुपम–छुपाई खेलते हुए बहुत बार दाम आती है। जब वो सब रजाई ओढ़कर छुप जाते हैं, जब नानी भी छुपने में मदद करती हैं, जब नाना के किताबों वाले कमरे में भी सब बहनें छिप जाती हैं और भाइयों को वहां छुपने से मना करती हैं, मजा आता है उन सब को जब मामी पूरी का आटा गुंधती है और सब बहन भाई चट्ट कर जाते है, बहुत मजा आता है जब सब एक कार में ठुंसकर मामा के साथ घूमने जाते हैं, जब नाना जी सबको मिठाई की दुकान पर ले जाकर कहते हैं कि जिसको जो खाना है खाओ। बच्चों की पसंद के बिस्कुट और नमकीन से भरा टिन याद आ रहा है खुशी को। जब सब याद कर लिया तब खुशी ने सोचा छुट्टी लगने से एक महीने पहले ही सब इंतज़ार शुरू कर देते हैं कि हम कब और कितने दिन के लिए नानी के घर आएंगे? नानी भी बार–बार पूछती हैं और बच्चों की पसंद का सामान सहेजने लगती हैं तब खुशी ने सोचा कि वो सबको बताएगी खूब जोर–जोर से बताएगी– वो आ रही है। अपनी नानी के घर आ रही है।

– ऋचा रथ, बी–6, सेल्स टेक्स कॉलोनी,शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़

रहा है कि कोरोना की डरावनी शक्ल आस–पास के वातावरण में घटित अनिष्ट, भय इत्यादि का तमाम निचोड़ बच्चे भी निकाल लेते हैं और इससे प्रभावित होते हैं। यह सब विचार, भाव दृश्य, छवियां, उनके मन में भी दुबके रहते हैं। यूं भी हमारी संस्कृति ऐसी है कि बच्चों को कई बार भयभीत करती है। तभी शायद गुरूदेव रविन्द्रनाथ ने गीतांजलि की शुरुआत इसी वाक्य से की कि 'निर्भय मन सिर ऊंचा' भयवित, आशंकित मन सामाजिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए घातक है। विद्या यदि मुक्त करती है तो इसमें यह तय है कि सभी तरह के भय और दुर्बलताओं से मुक्ति भी जरूरी है।

इस स्थिति ने निपटने के लिए साहित्य ही वह ताकत रखता है जो हमारे भी और बच्चों के भी भीतरी और बाहरी संसार को अनुकूल परिस्थिति में ढालने के लिए बेहद मददगार होता है। यह एक आजमाया हुआ जरिया है जब भी कोई दुनिया, देश, समाज, संस्कृति संकट में आयी है तब–तब बहुत हद तक साहित्य ने ही उभारा है। हम लोग साहित्य आनंद के लिए पढ़ते–पढ़ाते हैं हमें इस समय भी आनंद की जरूरत हैं। साहित्य के जरिये समझ के अनेक स्वरूप विकसित होते है। साहित्य में ही वह ताकत है कि इसके जरिए अपने अनुभवों के कतरों को जोड़कर समग्रता में देखने की कुव्वत हासिल होती हैं। इसमें ऐसे अनुभव भी शामिल होते हैं जो बच्चे ने अपने पांच ज्ञानेंद्रियों से नहीं प्राप्त किये बल्कि किसी और के अनुभव है। बच्चे अपने परिवेश को अनेक रूपों में जानना समझना सीखते हैं। जन्म से मृत्यु तक के हर तरह के आख्यान और जानकारियां हासिल करते हैं इसलिए यह अभी उचित वक्त है कि बाल साहित्य पढ़ने या पढ़कर सुनाने या मौखिक रूप में बालसाहित्य को बरतने के इस पर बातचीत करने के खूब अवसर बनाए जाएं इसके लिए स्कूल में कोई स्थान और इसके लिए समय निर्धारित कर बाल साहित्य के जरिए बच्चों के साथ खूब बातें की जाएं आप पायेंगे कि इसके बहुत सकारात्मक परिणाम सामने आयेंगे।

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं।)

वीर राजा जो गणित से हार गया

– मंजरी शुक्ला

बहुत समय पहले की बात है बुद्धिनगर नाम के राज्य में एक राजा रहा करता था। राज्य के नाम के अनुसार ही वहां पर रहने वाले सब बड़े बुद्धिमान थे और किसी भी मुसीबत का हल चुटकियों में निकाल लेते थे।

पर बुद्धिनगर का राजा, जिसका नाम तो था वीरसेन, बड़ा डरपोक था। वह अपने नाम के बिलकुल उल्टा था। दूसरों की नज़रों में तो वह बड़ा वीर था पर गणित का नाम आते ही उसके हाथ पैर कांपने लगते थे। वह गणित विषय से बहुत डरता था। इतने बड़े राज्य का राजा होने के बाद भी अगर उसके सामने कोई जोड़ने घटाने की बात करता तो वह घबराकर भाग जाता। उसकी गणित से डरने की कहानी भी बड़ी मज़ेदार है।

जब बचपन में वह गुरुकुल में पढ़ता था तभी उसके साथ एक अनोखी घटना हो गई जिसने उसे गणित के विषय से बहुत दूर कर दिया। एक बार वीरसेन गुरुकुल में सभी विद्यार्थियों के साथ बैठा कोई सवाल हल कर रहा था कि तभी उसके सिर पे एक कटहल आकर गिर पड़ा। "बूम!" जब तक कोई कुछ समझ पाता वीरसेन अपना सिर पकड़कर वहीं ज़मीन पर लोट गया। वो तो कहो कटहल छोटा था वरना बेचारे वीरसेन का पता नहीं क्या हुआ होता। ठीक होने के बाद भी वह कई दिनों तक कई दिनों तक आराम फ़रमाता रहा। पर वह गणित पढ़ने के नाम से ही घबराने लगा था।

किसी तरह ठोंक पीटकर गुरूजी ने उसे वापस गणित पढ़ने के लिए बैठाया। पर जब वह दोबारा गणित पढ़ने बैठा तो किसी शैतान बच्चे ने उसी पेड़ के ऊपर बने मधुमक्खी के छत्ते पर पत्थर मार दिया। बाकी बच्चे तो भाग खड़े हुए पर गोल–मटोल वीरसेन जब तक कुछ समझ पाता उस पर मधुमक्खियों ने आक्रमण कर दिया। गुरूजी ने तुरंत कम्बल मंगवाकर उसके ऊपर कम्बल डाला और उसे वहां से ले गए। पर तब तक तो कई मधुमक्खियां उसे डंक मार चुकी थी।

वीरसेन रोते–रोते बस एक ही बात कह रहा था कि मैं अब कभी गणित नहीं पढ़ूंगा। दो चार दिन में वीरसेन की

माही, कक्षा–4, राजकीय प्राथमिक विद्यालय गुडरिच, विकासनगर

सूजन भी चली गई और वह ठीक भी हो गया। पर कुछ नटखट बच्चों ने उससे कहा कि अगर वह गणित पड़ेगा तो उसके सिर पर दोबारा कटहल गिर जाएगा और मधुमक्खियां भी काट खाएंगी।

गुरु जी को जब यह बात पता चली तो पहले तो उन्होंने उन बच्चों को डांटा और उसके बाद वीरसेन से कहा– "हम उस जगह पर नहीं बैठेंगे जहां पर कटहल का पेड़ हो और मधुमक्खियों का छत्ता हो। हम इस बार कमरे के अंदर ही पढ़ेंगे"। पर वीरसेन इतना डर चुका था कि वह किसी भी कीमत पर गणित पढ़ने को तैयार ही नहीं हुआ। जब भी गुरु जी गणित पढ़ाते तो वह इतनी दूर चला जाता जहां पर उसे कोई ढूंढ ही ना सके। धीरे–धीरे गुरूजी समझ गए कि वीरसेन को गणित पढ़ाना नामुमकिन है, इसलिए उन्होंने वीरसेन को गणित छोड़कर बाकी विषयों पर ही ध्यान देने के लिए कहा।

समय व्यतीत होता गया और जब वीरसेन गुरुकुल से अपनी शिक्षा पूरी करके निकला तो गणित के मामले में वह अपने चेहरे की तरह पूरा गोल था। पूरा राज्य जहां उसके वापस लौटने से खुशियों से झूम रहा था वहीं दूसरी ओर उसके पिता, हर्षसेन चिंता के मारे घुले जा रहे थे। उन्होंने वीरसेन को अकेले में बुलाकर कहा–"तुम्हें ना तो जोड़ना आता है ना घटाना, ना ही भाग देना और ना ही गुणा करना यहां तक कि तुम हमारे राजमहल के

सदस्य तक नहीं गिन सकते हो"। वीरसेन ने कुछ सोचा और बोला– "पर पिताजी, हम हमारे राजमहल के लोग क्यों गिनेंगे, क्या उन्हें कोई चुराकर ले जा रहा है"? ऐसा बुद्धिमानी भरा उत्तर सुनकर राजा चकित रह गए। उनके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल सका और वह अपना सिर पकड़ते हुए वहां से चले गए।

राजगद्दी अपने इकलौते पुत्र को देनी ही थी सो राजा ने जिस दिन वीरसेन का राजतिलक किया उसी दिन महामंत्री को साए की तरह उसके साथ रहने के लिए कह दिया। महामंत्री था तो बहुत बुद्धिमान पर वह लम्बे समय से राजगद्दी हथियाने की फ़िराक में था। उसे जैसे ही पता चला कि वीरसेन को जोड़ना घटाना नहीं आता है तो वह खुशी से नाच उठा। पर उसने यह बात किसी और को नहीं बताई कि कहीं कोई वीरसेन को सचेत ना कर दे। अब तो हर दिन वह कोई ना कोई काम बताकर वीरसेन से पैसे ऐंठने लगा। कभी वह तालाब बनवाने की बात करता तो पचास स्वर्ण मुद्राओं की जगह सौ स्वर्ण मुद्राएं ले जाता तो कभी दान पुण्य के नाम पर दो सौ की जगह चार सौ स्वर्ण मुद्राएं ले जाता। धीरे–धीरे दरबार में कानाफूसी शुरू हो गई और सबको पता चल गया कि वीरसेन को बिलकुल भी जोड़ना घटाना नहीं आता और महामंत्री इस बात का फ़ायदा उठा रहा है। पर इस बात को भला बताए कौन?

व्यापारी जो अब तक खड़ा सब देख रहा था धीरे से बोला– 'महाराज, अगर आप बुरा ना मानें तो एक बात कहूं'। 'बिल्कुल कहिये' वीरसेन से उसे गौर से देखते हुए कहा। व्यापारी बोला– 'सीखने की कोई उम्र नहीं होती महाराज, आप अभी भी गणित सीख सकते हैं'। 'अरे वाह, ये तो मैंने सोचा ही नहीं'। वीरसेन खुश होते हुए बोला और कोषाध्यक्ष से बोला– 'कल सुबह से ही आप मुझे गणित सिखायेंगे'।

सभी महामंत्री से बहुत डरते थे कि कहीं वह उन्हें ही दरबार से ही ना निकलवा दे इसलिए कोई भी वीरसेन को महामंत्री के बारे में बताने से डर रहा था।

एक दिन महामंत्री शस्त्र खरीदने के लिए वीरसेन से स्वर्ण मुद्राएं मांग रहा था कि तभी दरबार में घोड़े बेचने के लिए एक व्यापारी आया। वह व्यापारी इतने सुन्दर कपड़े और कीमती जेवर पहने हुआ था कि वीरसेन के साथ साथ सभी मन ही मन उसकी प्रशंसा करने लगे। उसने वीरसेन के सामने जाकर सिर झुकाकर अभिवादन किया और बेहद नम्रता से बोला–"महाराज, मेरे पास बेहद उम्दा नस्ल के सौ घोड़े हैं। अगर आप उन्हें खरीद लें तो आपकी सेना को बहुत फ़ायदा होगा क्योंकि वे सभी घोड़े इतना तेज दौड़ते हैं कि आपको लगेगा कि वे उड़ रहे हैं"।

वीरसेन ने अपने वजीर से कहा– "आप घोड़ों को एक बार देखकर आइये अगर वे घोड़े उतनी ही अच्छी नस्ल के हैं, जितना यह व्यापारी बता रहा है तो हम उन्हें खरीद लेंगे"।

राजा की बात सुनते ही वजीर अपने साथ कुछ और दरबारियों को लेकर गया और थोड़ी देर बाद आकर बोला–"महाराज, सभी घोड़े बेहद आकर्षक और मजबूत हैं। आप उन्हें हमारे अस्तबल के लिए खरीद सकते हैं"। वीरसेन ने व्यापारी से पूछा–"एक घोड़े की कीमत कितनी है"? महामंत्री के कान ये सुनते ही खड़े हो गए। उसके मन में तुरंत गुणा भाग चलने लगा। वह व्यापारी की ओर ध्यान से देखने लगा।

व्यापारी बोला– "महाराज, वैसे तो एक घोड़े की कीमत सौ स्वर्ण मुद्राएँ है पर आप को जो ठीक लगे वो दे दीजिये"।

वीरसेन खुश होते हुए बोला –"नहीं, नहीं, तुमने बिलकुल उचित कीमत बताई है"।

वीरसेन ने महामंत्री से धीरे से पूछा– "अगर एक घोड़े की कीमत सौ स्वर्ण मुद्रायें है तो सौ घोड़ों की कीमत कितनी होगी"। महामंत्री झूठी हंसी हंसते हुए धीरे से बोला– "बीस हज़ार स्वर्ण मुद्राएं होंगी। मैं अभी जाकर ले आता हूँ"।

वीरसेन ने मुस्कुराते हुए कहा– "अभी महामंत्री जी आपको उन घोड़ों की कीमत लाकर दे रहे हैं"। व्यापारी ने कहा– "महाराज, आप घोड़ों को भी अस्तबल में रखवा दीजिये वे भी भूखे और प्यासे होंगे"। वीरसेन के इशारा करते ही वजीर के साथ ही कुछ सदस्य उन घोड़ों को अस्तबल में भेजने के लिए चल दिए। तभी महामंत्री एक लाल रंग के रेशमी थैले लाया और व्यापारी के हाथ में देता हुआ बोला –"ये आपके घोड़ों की कीमत"। व्यापारी ने थैला लिया और वीरसेन से बोला –"महाराज, अच्छा हुआ आपने सारे घोड़े खरीद लिए। मुझे दस हज़ार स्वर्ण

मुद्राओं की सख्त आवश्यकता थी"। "हाँ, अच्छा है और बाकी दस भी आपके किसी काम आ जाएंगे"। महामंत्री के पास खड़े एक मंत्री ने कहा जिसने बीस हज़ार स्वर्ण मुद्राएं वाली बात सुन ली थी। "नहीं महाराज, एक घोड़े की कीमत सौ स्वर्ण मुद्राएं है तो सौ घोड़ों की कीमत तो दस हज़ार स्वर्ण मुद्राएं हुई, तो भला आप मुझे बीस हज़ार स्वर्ण मुद्राएं क्यों दे रहे हैं"?

वीरसेन ने आश्चर्य से महामंत्री की ओर देखा जिसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। वीरसेन समझ गया कि महामंत्री ने उससे झूठ बोला है। वह गुस्से में सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और बोला– "सच्चाई क्या है महामंत्री जी"? महामंत्री ने अपना सिर शर्म से झुका लिया। सभी दरबारियों ने एक–दूसरे को देखा और सोचा कि यही सही समय है महामंत्री की करतूतों के बारे में बताने के लिए और फिर एक के बाद एक करके सभी ने महामंत्री के झूठों का पुलिंदा खोलकर रख दिया। वीरसेन अपना सिर पकड़कर चुपचाप सिहांसन पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद उसने महामंत्री की ओर देखा जो डर के मारे थरथर कांप रहा था।

वीरसेन संयत स्वर में महामंत्री की तरफ़ देखता हुआ बोला– "आपसे ज्यादा मेरी गलती है क्योंकि मैंने आप पर आंख मूंद कर विश्वास किया। दुर्घटनाएं तो किसी के साथ भी हो सकती है पर मैं उनका मुकाबला करने के बजाय उनसे डर कर भाग गया"। "पर आप आज से महामंत्री नहीं रहेंगे और इस दरबार में कभी नहीं आएंगे"। व्यापारी जो अब तक खड़ा सब देख रहा था धीरे से बोला–"महाराज, अगर आप बुरा ना मानें तो एक बात कहूं"। "बिल्कुल कहिये" वीरसेन से उसे गौर से देखते हुए कहा। व्यापारी बोला– "सीखने की कोई उम्र नहीं होती महाराज, आप अभी भी गणित सीख सकते हैं"। "अरे वाह, ये तो मैंने सोचा ही नहीं"। वीरसेन खुश होते हुए बोला और कोषाध्यक्ष से बोला– "कल सुबह से ही आप मुझे गणित सिखायेंगे"।

"जी महाराज, मैं आपको पढ़ाने कहां पर आ जाऊं"।

"कटहल के बाग़ में, क्योंकि कटहल हमेशा नहीं गिरते" कहते हुए वीरसेन ठहाका मारकर हँस पड़ा।

(इंटरनेट से साभार)

धरती पर आये चंदा मामा

धरती पर आये चंदा मामा
तारों ने बोला जल्दी आना,
धरती पर जाकर भूल न जाना।
सामने देखकर चंदा मामा
सब बच्चों ने किया हंगामा।
सब ने गाया सा–रे–गा–मा
धरती पर आये चंदा मामा।।
सबके लिए खिलौने लाये
साथ में खेला धूम मचाया।
आखिर सबके प्यारे मामा
धरती पर आये चंदा मामा ।।
बच्चे बोले आप तो गोल–मटोल,
पर बड़े हो अनमोल ।
अब तक जाना कहानी में
पर सच में देखा चंदा मामा।
धरती पर आये चंदा मामा।।
जब भी रात काली आती,
दुनिया भर में फैलाता अंधियारा,
तब तुम आकर जग के मामा
फट से कर देते उजियारा।
माँ से सुना था लोरी में
आज सिरहाने बैठे चंदा मामा।
धरती पर आये चंदा मामा ।।

– मधु रावत
रा.आ.प्रा.वि. दुवाकोटी, चम्बा, टिहरी गढ़वाल

ऑनलाइन शिक्षण– कैसे लगे मन

– डॉ. संगीता बिल्लौरे

'यदि कोई कार्य एक चुनौती या शर्त की शक्ल में दिया जाता है तो मानो मस्तिष्क अधिक स्फूर्त हो जाता है और कार्य क्षमता में वृद्धि होती है।' किन्तु इस कोविड महामारी में बच्चों के अध्ययन को लेकर यह कथ्य साकार होना असम्भव सा लग रहा था। ऐसे में गरीब, कमजोर परिवार के बच्चों को एकत्र कर मोहल्ला कक्षा का आयोजन करना एक बड़ी चुनौती थी। स्थान का अभाव व एक साथ एक ही कक्षा के बच्चों को बुलाना नामुमकिन था। पहले तो बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उन बच्चों के पास कोरोना प्रोटोकॉल को फॉलो कर सके ऐसे संसाधन नहीं थे।

सर्वप्रथम किसी एक स्थान का चयन किया जैसे चबूतरा या किसी बच्चे के घर की दालान वहां केवल आठ या दस बच्चे बच्चे ही बैठ सकते थे। उन्हें मास्क बांटे गए सैनिटाइजर रखा गया अलग–अलग वर्ग व भिन्न स्तर के बच्चों को कक्षा में सम्मिलित करना पड़ा और मोहल्ला कक्षा प्रारम्भ की गई।

कार्य में आने वाली चुनौतियां

1. अलग–अलग स्तर व भिन्न कक्षा के बच्चों को पाठ्यपुस्तक से कैसे जोड़ें पहली समस्या तो यही थी।
2. इस वर्ष कक्षा 6 में सामाजिक विज्ञान विषय की एन. सी.ई.आर.टी.की पुस्तकें अलग–अलग भाग में लागू हुईं। बच्चे इस पैटर्न से परिचित नहीं थे।
3. मोहल्ला कक्षा में विलम्ब होना माध्यमिक विभाग में एक शिक्षिका होने के कारण सभी बच्चों की मोहल्ला कक्षा नियमित नहीं हो सकी।
4. मोबाईल/इन्टरनेट बच्चों के पास उललब्ध नहीं थे यदि ऑनलाइन क्लास हुई भी तो समाजीकरण की प्रक्रिया ऑनलाइन नहीं हो सकती। सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ाने के लिए शिक्षक और बच्चों का आपस में संवाद चर्चा आवश्यक है।
5. 'भूखे पेट भजन न होहिं' बच्चों की आर्थिक मजबूरी उन्हें पढ़ाई से दूर कर देती है जैसे कोई बच्चा भैंस चराने जाता है कोई खेत पर काम करने, कोई मजदूरी करने। कोई छोटे भाई–बहन की देखरेख करता है।

थीम का चयन

विभिन्न वर्ग के विभिन्न स्तर के बच्चों में विविधता देखकर एवं इस कोविड के दौरान हमारी कार्य शैली, दिनचर्या, शिक्षण पद्धति को लेकर जो विविधता सामने आयी इसी विभिन्नताओं को बच्चों से साझा करना था। इसलिए मैंने सामाजिक विज्ञान के प्रथम व द्वितीय पाठ के हिस्से को अपनी थीम में चुना।

विविधता की समझ, विविधता एवं भेदभाव अवधारणा को समझना आवश्यक था क्योंकि घरों से शुरू होती विभिन्नताएं, रुचियां, खानपान, रहन–सहन व्यापक समाज में कैसे अपना प्रभाव डालती हैं? बच्चे इस पूरी प्रक्रिया को समझ सकें। उन्हें कहां–कहां और किस रूप में विविधता और भेदभाव देखने को मिलता है या महसूस होता है इसकी अनुभूति कराना थीम का उद्देश्य था।

कौन सी पेडॉगाजी अपनायी

1. सामान्यतः कक्षाओं में हम पाठ्यपुस्तक द्वारा रीडिंग व चर्चा की पद्धति को अपनाते हैं फिर प्रश्नोत्तर के द्वारा पाठ्यवस्तु का समापन करते हैं। लेकिन मोहल्ला कक्षा में मैंने बच्चों को कुछ प्रश्नों के उत्तर अपने परिवार के सदस्यों से पूछकर लिखने को दिये जैसे– प्रत्येक सदस्य की पसन्द नापसन्द जानने, कार्यों की शैली व लिंग के आधार पर उनके कार्यों का चयन इत्यादि। अपनी पसन्द, मां को खाने में, पहनने में क्या अच्छा लगता है? भाई को क्या पसन्द हैं? पिताजी कौन सा कार्य करना पसन्द करते हैं? आदि घर–परिवार व आसपास कोई झगड़ा होता है? झगड़े का कारण आदि।
2. बच्चों को मां की पाठशाला के अन्तर्गत पुस्तकालय से छींका–छींक नामक रोचक मजेदार कहानी छुटनक्कू और बडनक्कू पात्र जिनमें शारीरिक भिन्नता से बात को प्रारम्भ किया गया है। उनकी कहानी से बच्चों को बताया कि सभी मानव जन एक– जैसे नहीं होते, कोई गोरा, कोई काला, कोई

लंबा, कोई नाटा व कोई मोटा तो कोई दुबला होता है। प्रकृति ने सबकी अपनी कोई न कोई विशेषताएं बनायी हैं। इस प्रकार चर्चा कर मोहल्ला क्लास में बच्चों ने विविधता को लेकर कुछ ड्रॉइंग बनायी उन्हें समूह में बांटकर अलग वर्कशीट पर कार्य करने को दिया इस प्रकार सामान्य कक्षा से हटकर शिक्षण–पद्धति अपनायी गई। आमतौर पर बच्चे कक्षा में शिक्षक से इतना खुलकर संवाद नहीं कर पाते हैं क्योंकि शिक्षक कई गैर शैक्षणिक कार्यों में व्यस्त रहते है? किसी एक थीम पर इतनी गहराई से संवाद और चर्चा नहीं कर पाते। बच्चे अपने–अपने अनुभव शिक्षक के साथ साझा कर पा रहे थे। अपने पारिवारिक विवादों व परिवेश को बताने में झिझक नहीं रहे थे।

सेमिनार की प्रस्तुति के समय पर्चा वाचन करने व लिखने में क्या चुनौतियां आई ?

1. मोहल्ला कक्षा में की गई गतिविधियों के अभिलेख संधारित करने में समस्या आयी क्योंकि हर एक मोहल्ला कक्षा में अलग–अलग बच्चे होते थे। हमने जिन बच्चों को लेकर काम किया उनसे लगातार सम्पर्क नहीं हो पाता था।
2. दस्तावेजीकरण करने में टाइपिंग की समस्या तकनीकी ज्ञान का अभाव होने के कारण पी.पी.टी. तैयार करना व स्लाइड बनाने में समस्या उसे सिलसिलेवार प्रस्तुत करने के लिए विडियो, फोटोग्राफ व लिखित आलेख का समायोजन करने में कठिनाई महसूस हुई।
3. यह पर्चा वेबिनार फार्म के स्थान पर सेमिनार के रूप में होता तो ज्यादा अच्छा प्रस्तुतिकरण हो पाता। सेमिनार में पर्चा पढ़ते हुए मुझे बडा गर्व महसूस हुआ। आत्मविश्वास के साथ हम अपने कार्यानुभव साझा कर पाए। सामाजिक विज्ञान विषय की महत्ता केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित नहीं है हमें बच्चों के स्तर तक आकर काम करना पड़ता है इस प्रक्रिया में स्वयं का भी समाजीकरण होता है।

लेखिका शासकीय माध्यमिक शाला नरोन्हा सॉकल, भोपाल, मध्यप्रदेश में शिक्षिका हैं।

शिक्षक सृजन

तुमको पहाड़ आना होगा

दिव्यांशु, प्राथमिक विद्यालय ननूरखेड़ा, रायपुर, देहरादून

प्यारे भइया, प्यारी बहना,
मम्मी–पापा जी से कहना,
इस छुट्टी में जाना है,
देख हिमालय आना है।
जब पहाड़ में आओगे,
हवा तुम्हें सहलायेगी,
स्वागत प्यारे बच्चों कहकर,
मंद–मंद मुस्काएगी।
यहां पहाड़ की कठिन चढ़ाई,
कठिन परीक्षा लेती है,
फिर ढलान धीरे–धीरे,
सारी थकान हर लेती है।
नदिया की कल–कल लहरें,
जीवन संगीत सुनाती हैं,
बढ़ते जाओ, चढ़ते जाओ,
हवा कान में गाती है।
तन–मन को शीतल कर दे,
यादों का बाना होगा,
सुंदर पहाड़ अनुभव करने,
तुमको पहाड़ आना होगा।

– राकेश जुगरान
प्राचार्य, डायट, देहारादून, उत्तराखण्ड

ताकि कल्पना को पंख मिलें...

– मीनाक्षी चौहान

किसी भी भाषा को सुंदर, सरल, सुघड़ बनाने में साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है। कहानी, कविता, गीत आदि के बिना किसी भी भाषा की कल्पना करना बेईमानी ही होगा। बाल साहित्य में रोचक शिक्षाप्रद बाल कहानियां, बालगीत, बाल कविताएं प्रमुख हैं। बाल साहित्य के अंतर्गत वह शिक्षाप्रद साहित्य आता है जिसका लेखन बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर किया गया हो।

पढ़ने का कौशल बच्चे में ऐसे गुण विकसित करता है जो कोई और कौशल नहीं कर सकता। दरअसल, पढ़ने का कौशल सभी आधारभूत कौशलों की जननी है जो मनुष्य के विकास के लिए जरूरी है। बच्चे ने पढ़ने के कौशल को सीख लिया तो उसमें आत्मविश्वास बढ़ेगा। यही बढ़ता आत्मविश्वास बच्चे के व्यक्तित्व में निखार आएगा। बच्चे की पढ़ने की दक्षता उसे स्कूल में अपने घर समाज या किसी और जगह मदद पहुंचाती है। स्कूल में पढ़ने की दक्षता का होना एक बुनियादी जरूरत है इसी के माध्यम से कोई बच्चा विभिन्न विषयों को पढ़ने समझ सकता है जिसमें बाल साहित्य हैं। काफी हद तक मदद करता है।

कहानी, कविता, गीत आदि प्राचीन समय से एक परंपरा के रूप में चली आ रही है जो अपने अंदर बहुत कुछ समाए हुए हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी यह हमारे मूल्यों, परंपराओं, संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में सुंदरता के साथ सहायता प्रदान करती है। इसलिए बच्चों की किताबों में कुछ ऐसे मूल्यों को स्थान दिया जाए जो हमारे संवैधानिक मूल्य जैसे समता, न्याय, आदर्श समाज की संरचना आदि से मेल खाते हैं। साथ ही इन मूल्यों को सीधे–सीधे शिक्षा के रूप में न देकर बहुत ही सरल तरीके से किसी घटना या पात्र के जरिए रखा जाए और उस घटना में वे मूल्य सहज ढंग से उभर कर आए। साहित्य से हमेशा भाषा समृद्ध बनती है और भाषा में शुद्धता आती है। वैसे ही बाल साहित्य बच्चों के सर्वांगीण विकास में बहुत सहयोगी है, यह बच्चों की कल्पना को पंख देता है।

बच्चों में सृजनात्मकता, रचनात्मकता और उनमे नैतिक मूल्यों को विकसित करता है। यह बाल साहित्य ही है जो बच्चों में सकारात्मक ऊर्जा पैदा करता है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में मदद करती है। बाल साहित्य हमारी साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत को बच्चों तक पहुंचाने का कार्य करता है। आज के समय में बच्चों को बाल साहित्य की आवश्यकता बहुत अधिक है क्योंकि परिवार संयुक्त से एकाकी हो गए हैं। बच्चे नाना–नानी दादा–दादी से दूर होते जा रहे है जिस कारण वे बच्चे दादा दादी नाना नानी से कहानी नहीं सुन पाते हैं। बाल साहित्य केवल बच्चों का मनोरंजन ही नहीं करता वरन भाषा विकास में सहायता करता है। विद्यार्थी नए–नए शब्द व वाक्य सीखते हैं। उच्चारण बेहतर होता है व्याकरण अच्छा होता है। शब्द संचय, शब्द भंडार बढ़ता है। बच्चों में अभिव्यक्ति क्षमता, सजगता, आत्मविश्वास, गतिशीलता, सर्जनशीलता, कल्पनाशीलता बढ़ाता है। साथ ही मानवीय गुणों को कहानी के सशक्त पात्रों के माध्यम से आत्मसात करता है।

वास्तव में बच्चे जानकारी से नहीं ,सर्जन से नई कल्पना से आनंदित होते हैं। बाल साहित्य बच्चों को अंधविश्वास से दूर करते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने में योगदान देता है। बाल साहित्य अप्रत्यक्ष रूप से उसे सामाजिक प्राणी के रूप में संस्कारित करने वाला होता है। यह बच्चों को उसके परिवेश से जोड़ता है उसे उसके परिवेश से जुड़ी जैसे घर, गांव, पड़ोस, दोस्त, मस्ती, खेल, रहस्य, रोमांच आदि से जोड़ता है। साहित्य द्वारा बच्चे जिज्ञासु पाठक बनते हैं। बाल साहित्य की प्रत्येक विधा का अपना रस और आनंद है। बच्चों के मन में नई

ऊर्जा और प्रेरणा भरकर उसमें कुछ कर गुजरने का भाव पैदा करना ही बाल साहित्य का उद्देश्य है। प्रारंभिक कक्षाओं में विज्ञान या सामाजिक विज्ञान विषय नहीं पढ़ाया जाता है लेकिन कई कहानियां, कविताएं इत्यादि के माध्यम से बच्चे इन विषयों में पढ़ाई जाने वाली सामग्रियों से कुछ हद तक अवगत हो जाते हैं।

इनको पढ़ते समय बच्चे बहुत तरह की घटनाओं से गुजरते हुए परिस्थितियों के अनुसार उन्हें कुछ सवालों के जवाब मिलते हैं तो कभी–कभी उलझे हुए सवालों के जवाब स्वयं तलाशते हैं। बच्चे सारे घटनाक्रमों से गुजरकर विवेक का प्रयोग करना सीख सकते हैं। जिस कारण बच्चों के अंदर तार्किक शक्ति का विकास होता है। अवलोकन करने की क्षमता विकसित होती है। बाल साहित्य बच्चों और शिक्षकों के मध्य संबंधों को मधुर बनाता है। कक्षा–कक्ष में बाल साहित्य पर कार्य करते समय बच्चों व शिक्षकों को कई मुद्दों पर समृद्ध और सार्थक चर्चा करने का अवसर मिलता है जिस कारण बच्चे सहज हो जाते हैं और ज्यादातर बच्चे इसमें रुचि लेते हैं और शिक्षकों को पढ़ाने वाले पाठ्यक्रम में इससे मदद मिलती है। इस प्रकार की स्वस्थ बातचीत कक्षा में लोकतांत्रिक वातावरण का निर्माण करती है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर एनसीईआरटी ने बाल साहित्य की अहमियत समझते हुए बाल साहित्य को विद्यालय में धरातल पर उतारने की पहल करते हुए बरखा श्रृंखला की शुरुआत की। बरखा श्रृंखला में 40 कहानियां है जो चार स्तर–स्तर 1, स्तर 2, स्तर 3, स्तर 4 और पांच मूल विषयो पर आधारित है। विषय जिसके अंतर्गत–संबंधों, पशु पक्षियों, संगीतमय यंत्रों, खेल और खिलौने, हमारा परिवेश और खानपान में व्याप्त हैं।

यह कहानियां भी बच्चों के संदर्भ और उनके दैनिक अनुभवों को लेकर बुनी गई हैं। रीडिंग कॉर्नर विद्यालय का वह कोना है जिसमें अध्यापक और बच्चे मिलकर बाल साहित्य संबंधित पुस्तक इस तरह रखते हैं कि वह पुस्तके बच्चों की पहुंच में रहे बच्चे अपनी पसंद से पुस्तक चुन सके और पढ़ सके। यह कोना आकर्षक तरह से सजाया गया हो। रीडिग कॉर्नर की देखभाल, स्वच्छता का दायित्व भी बच्चों को ही सौंपना चाहिए जिससे वह रीडिंग कॉर्नर की अहमियत को समझें।

बाल साहित्य से जुड़ा अनुभव–

सर्वप्रथम जब मैं विद्यालय में गई मैंने अपने विद्यालय में कुछ पुस्तकें बाल साहित्य से संबंधित देखीं। चूंकि कहानियां पढ़ने का मुझे बहुत शौक तो था ही मैं कुछ कहानियां भी पढ़ने लगती थी। परंतु मैं उनका प्रयोग सही से नहीं जानती थी मुझे यह नहीं मालूम था कि यह पाठ्यचर्या का ही बहुत बड़ा हिस्सा है जिस कारण में बच्चों के साथ इन पुस्तकों पर कार्य नहीं कर पा रही थी। स्वयं कहानियां पढ़कर बच्चों को मैं सुनाती रहती थी। कुछ समय बाद में भाषा शिक्षण की कार्यशाला से जुड़ी तथा मैंने बाल साहित्य का उपयोग, प्रयोग समझा और आज के समय में हम विद्यालय में बाल साहित्य पर बच्चों के साथ कार्य कर रहे हैं। बच्चे भी इस सब मे रुचि दिखा रहे हैं। यह बहुत ही सराहनीय है कि बाल साहित्य हमारे विद्यालयों की पाठ्यचर्या का अहम हिस्सा बन चुका है तथा आज विद्यालय के समय में इन पुस्तकों के लिए समय (कालांश) निश्चित कर दिया गया है।

आज के परिप्रेक्ष्य में कहा जाए तो यह पाठ्यक्रम को पूर्ण करने में सहायक साधन के तौर पर देखा जा रहा है। जब हम छोटे थे हम भी कहानी, कविता पढ़ने का बहुत शौक रखते थे परंतु तब यह बाल साहित्य सब बच्चों की पहुंच में नहीं था विद्यालय में ऐसी पुस्तकें नहीं मिलती थीं। हमें जहां भी ऐसी पुस्तकें मिलती थी तो उसको पढ़कर ही हम पुस्तक का पीछा छोड़ते थे। परंतु आज के समय में बहुत परिवर्तन आ चुका है। अधिकांशतःसभी विद्यालयों में प्रचुर मात्रा में बाल साहित्य (कहानी कविता बाल गीत) आदि की पुस्तकें पहुंच चुकी हैं।

किताब को कक्षा में बरतना–

मैंने अपने विद्यालय के बच्चों के साथ बरखा श्रृंखला की फूली रोटी पर कार्य किया। जो जमाल और उसकी मम्मी की कहानी है। इसमें चित्रों का भरपूर प्रयोग किया गया है और रसोईघर का चित्रण किया गया है। बच्चों ने कहानी सुनते व पढ़ते समय कहानी की किताब में बहुत रुचि दिखाई। बच्चों ने रसोईघर में रखी वस्तुओं के बारे में जानकारी दी और अपने अनुभव भी बताए। कुछ बच्चों ने कहा कि हमारी रसोई चित्र से अलग तरह की है मगर सामान लगभग ऐसा ही है। किसी बच्चे ने कहा मैंने भी रोटी बनाने की कोशिश की मगर आड़ी–टेढ़ी रोटी बनी परंतु अब मैं भी जमाल की तरह ही कटोरी से रोटी काट कर गोल बना दूंगी । कुछ ने कहा लड़के रोटी नहीं बनाते हैं और भी बहुत से प्रश्न बच्चों ने कहानी से निकाले।

जैसे– खाना घर के किस हिस्से में बनता है? उत्तर– रसोईघर में। रोटी किस से बनती है? रोटी कैसे बनती है? पहले आटा लेते हैं फिर उसमें पानी डालकर गूंथते हैं

फिर लोई गोल–गोल बनाते हैं और बाद में चकला–बेलन से बेलकर तवे पर सेंकते हैं।

तुम्हारे घर पर रोटी किस पर बनती है? चूल्हे पर, गैस चूल्हे पर। रोटी किस आकृति की होती है? गोल। रसोई घर में रखी हुई और कौन कौन सी वस्तु है जो गोल आकार की होती है? आकृतियों के बारे में भी आपसी चर्चा के बाद प्रश्नों का निदान भी किया गया। छोटा सा मोटा सा लोटा पर भी बच्चों के साथ कार्य किया गया। यह पुस्तक भी बच्चों को बहुत पसंद आई। इसमें बच्चों ने बहुत अधिक रुचि ली। इस किताब में तुक वाले शब्दों का प्रयोग कर रचना को सुंदर रूप दिया गया है जिसमें बच्चों ने बहुत अधिक रुचि दिखाई जैसे छोटा–मोटा लोटा, लंबे खंबे,चंदर बंदर अंदर 'मोर चोर डोर, लटका मटका झटका अटका आव ताव' आदि शब्द। इसमें भी रंग–बिरंगे चित्रों का बाहुल्य है जो बहुत ही आकर्षक प्रतीत होता है। इन चित्रों को देखकर बच्चे आसानी से कहानी समझ लेते हैं।

बड़े बच्चों ने इस कहानी पर आधारित चित्रों का चार्ट बनाया। छोटे–छोटे बच्चों ने भी कोशिश की चित्र बनाने की। हम जानते हैं कि बच्चे कल की दुनिया की नींव हैं, हमारा भविष्य हैं। अतः बाल साहित्य द्वारा बच्चे के मन को सुशोभित करते हुए भाषा से उसके सर्वांगीण विकास की एक आधारभूमि तैयार कर सकता है। बाल साहित्य ही है जो खेल–खेल में उसे आसपास की दुनिया से उसे जोड़ सकता है। उसका परिचय आसपास की दुनिया से करा सकता है और उसकी जो जिज्ञासायें हैं उनको शांत कर सकता है। बाल साहित्य ही है जो पाठ्य पुस्तकों से इतर बच्चों को खेल–खेल में बहुत सारी अवधारणाओं के प्रति समझ बढ़ाने में सहायता प्रदान कर सकता है। कहानियां, कविताएं विभिन्न भाषाई कौशलों को विकसित करते हुए उनमें तात्कालिक अनुभव से परे बच्चों की दुनिया को समृद्ध बनाने के लिए विशाल स्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके द्वारा बच्चों की मौखिक भाषा शैली सबर सकती है और बच्चों में संवाद अदायगी का विस्तार हो सकता है।

सन्दर्भ –

1. पाठ्यपुस्तक रिमझिम
2. बरखा सीरिज तथा बाल साहित्य की किताबें
3. ELEM कार्यशाला में हुई चर्चा तथा इस दौरान पढ़े कई लेख
4. कक्षा शिक्षण अनुभव

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय महादेव नगर, काशीपुर, उत्तराखण्ड में अध्यापिका के पद पर हैं)

आया बंदर

दबे पाँव से बंदर आया
दादी का खाना चटकाया।
नटखट पर फिर गुस्सा आया
दादी को बिल्कुल ना भाया।
दबे पाँव से बंदर भागा
दादी ने तब शोर मचाया।
दाँत दिखाकर लगा डराने
दादी ने पत्थर से भगाया।
बगीचे के फल चटकाने
दबे पांव बन्दर आया।
दादाजी तब ऊंघ रहे थे
उनको नहीं पता चल पाया।
जोर-जोर से भौंक-भौंक कर
झबरू कुत्ता दौड़ा आया।
नींद खुल गई दादाजी की
बंदर को तब मार भगाया।
दादी बोली इस बंदर ने
हाय! क्या उत्पात मचाया।
पेड़ के सारे पके फलों को
आधा तोड़ा आधा खाया।

– अनीता चौहान
राजकीय प्राथमिक विद्यालय कोटद्वारा, चम्बा, टिहरी गढ़वाल

किस्से कहानियों का संग

फोटो– पुरुषोत्तम

ऐसे समय में जब स्कूल बंद थे तब ऑनलाईन कक्षाओं में जिन बच्चों के साथ विभिन्न कारणों से कुछ कम काम हो पाया या नहीं हो पाया वहां बाल साहित्य ने सीखने–सिखाने की इस प्रक्रिया ने थोड़ी बहुत भरपाई की।

– अनुपमा तिवाड़ी

हाल ही में कोरोना– 19 के चलते हमारे जीवन में पहली बार ऐसा हुआ कि रेल, हवाई जहाज, कोट्र्स, स्कूल और कॉलेज सब बंद हो गए। ऐसे में बच्चों के साथ ऑनलाइन शिक्षण कार्य किया गया। ऑनलाइन शिक्षण कार्य की जो सीमायें हैं उनसे भी हम सभी भली–भांति परिचित हैं। ऐसे में कई जगहों पर कोविड गाइडलाईन की पालना करते हुए ऐसे प्रयास हुए जिनसे बच्चों का सीखना कुछ हद तक जारी रहा।

मैं अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, राजस्थान में हिंदी भाषा की संदर्भ व्यक्ति के रूप में कार्यरत हूँ। हम ग्रीष्मावकाश के दौरान और नियमित सत्र में शिक्षकों को विभिन्न स्तरों की कुछ–कुछ पुस्तकें देते रहे हैं जिनके सकारात्मक परिणाम भी सामने आते रहे हैं। कोविड–19 के दौरान जब विद्यालय बंद थे तब एक विद्यालय की शिक्षिका ने हमारे द्वारा दी गईं कुछ पुस्तकें बच्चों को घर पर पढ़ने के लिए दीं।

जब स्कूल खुले तब मैं उस स्कूल में गई जिसमें शिक्षिका ने बच्चों को स्कूल बंद होने के दौरान कुछ पुस्तकें घर पर पढ़ने के लिए दी थीं। शिक्षिका मुझे कक्षा सात में लेकर गईं और उन्होंने बच्चों से बात करनी शुरू की कि किस–किसने इस बंद के दौरान घर पर किताबें पढ़ी हैं और उसमें क्या–क्या पढ़ा? एक बार तो बच्चे कुछ चुप से हो गए फिर मैंने कहा कि जो भी पढ़ा, समझ में आया या याद है वो ही थोड़ा बहुत बता दो। एक बच्चे ने कहा मैडम मैंने दो भाइयों की हवाई जहाज बनाने वाली किताब पढ़ी। मैंने कहा राइट ब्रदर्स की? उसने कहा हाँ! फिर आगे उसने हवाई जहाज के बनाने की और उसके उड़ने की प्रक्रिया को अपने शब्दों में बताने का प्रयास किया।

एक–दूसरे बच्चे ने कहा कि उसने 'जलपक्षी' वाली किताब पढ़ी है। मैंने कहा उसमें क्या था? उसने कहा उसमें यह बात थी कि कुछ पक्षी जल में भी रहते हैं फिर

उसने दो–तीन जलपक्षियों के नाम बताए। मैंने कहा जलपक्षियों के बारे में तुम्हें पहले भी पता था क्या ? उसने कहा नहीं इस किताब से पता चला।

एक तीसरे बच्चे ने बताया कि उसने ले जाई गई किताब से देखकर (किताब दिखाते हुए) एक माला बनाई। उसने आगे कहा मेरी मम्मी ने पूछा कि तूने ये माला कहां से बनानी सीखी? उसने कहा इस किताब से देखकर। वह किताब पेपर कटिंग से विभिन्न प्रकार की सजावटी चीजें बनाने को ले कर थी। जिसमें माला जैसी चीजें बनाने के चरण नंबर डाल कर दिए हुए थे। एक अन्य बच्चे ने कहा कि वह जो किताब घर पर ले कर गया था उसे उसने अपनी दादी को भी पढ़कर सुनाया। उसकी दादी पढ़ना नहीं जानती हैं।

यूं तो पुस्तकालय से इस प्रकार का उपयोग हर समय ही किया जा सकता है लेकिन जिस समय स्कूल बंद थे उस समय भी बच्चों का सीखना जारी रहा। पुस्तकें देते समय मैंने शिक्षिका को कहा कि आप इन पुस्तकों को बच्चों को घर के लिए भी दे सकती हैं लेकिन उन्हें लगा कि बच्चे उन्हें हिफाज़त से नहीं रख पाएंगे और पुस्तकें फट जाएंगी। लेकिन जब बच्चे पुस्तकें घर लेकर जा रहे थे तब उन्होंने एक कॉपी में बच्चों से एंट्री करवाई। जिसमें कुछ कॉलम खींचकर क्रमांक, पुस्तक का नाम, पुस्तक का नंबर, पुस्तक ले जाने की तारीख, पुस्तक जमा करवाने की तारीख, पुस्तक प्राप्तकर्ता का नाम व हस्ताक्षर करवाने का काम किया गया। शिक्षिका ने देखा कि पुस्तकों की एंट्री करने और पुस्तकों के रख–रखाव का काम बच्चों ने बड़े ही करीने से किया था।

इन उदाहरणों को देखकर लगता है कि इनमें बच्चों का सीखना कुछ इस प्रकार हुआ –

पहली बात तो यह कि शिक्षिका अपने विद्यार्थियों पर यह विश्वास कर पाईं कि बच्चे जब कोई ज़िम्मेदारी लेते हैं तो वे उसका निर्वहन भी भली प्रकार से करते हैं। पहले उदाहरण में बच्चे ने हवाई जहाज बनाने की प्रक्रिया को समझने और फिर बताने का बेहतर प्रयास किया जिससे उसे उसके निर्माताओं और उसकी कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी मिली। यहां वह भौतिक विज्ञान के कुछ नियमों को समझने का प्रयास भी करता दिखाई दिया क्योंकि वह बता रहा था कि कैसे करने पर हवाई जहाज ऊपर उठाने लगा होगा।

दूसरे उदाहरण में बच्चे को कुछ पक्षी जल में भी रहते हैं। वे क्या खाते हैं? जल में कैसे रहते हैं? आदि कई बातों की जानकारी मिली जो कि उसे पहले नहीं थी। तीसरे उदाहरण में बच्चे ने पहली बार पेपर कटिंग से स्टेप्स फॉलो करते हुए माला बनाई जिसमें उसे स्वयं निर्देशों का पालन करते हुए सीखने का अवसर मिला। ऐसे में जाहिर है कि माला के बना लेने पर उसे एक प्रकार की सफलता या जो वह चाहता था उसे प्राप्त करने का सुखद अहसास हुआ होगा। चौथे उदाहरण में बच्चे की दादी जो पढ़ना नहीं जानती थीं उन्हें भी लिखा हुआ सुनने का अवसर मिला और बच्चे को स्वयं पढ़ने/जानने के साथ अपनी दादी को लिखा हुआ सुनाने का आनंद मिला।

इन उदाहरणों में ऐसा सीखना था जो बच्चों में पढ़ने के प्रति लगाव पैदा कर रहा था, नया जानने, सीखने के प्रति उनमें उत्सुकता भर रहा था जिसकी कोई परीक्षा नहीं होनी थी। बच्चों ने उस दौरान पढ़ ली गई पुस्तकों की अदला–बदली भी की। जिससे वे अपने द्वारा इश्यू करवाई गई पुस्तक के अलावा दूसरी पुस्तकें भी पढ़ सकें। ऐसे समय में जब स्कूल बंद थे तब ऑनलाईन कक्षाओं में जिन बच्चों के साथ विभिन्न कारणों से कुछ कम काम हो पाया या नहीं हो पाया वहां पुस्तकों ने सीखने–सिखाने की इस प्रक्रिया ने थोड़ी बहुत भरपाई की।

उस दौरान हम भी घर से ही शिक्षक साथियों के साथ ऑनलाइन काम कर रहे थे। ऐसे में हमने (परिवार के सदस्यों) ने हमारे घर के पुस्तकालय को छानबीन कर बच्चों की पत्रिकाएं चकमक, प्लूटो, साईकिल, स्वयंप्रकाश जी द्वारा लिखित पुस्तकें, विजयदान देथा की पुस्तकें, सोपान जी की पुस्तक 'एक था मोहन', कमला भसीन की पुस्तक और लोककथाओं से कहानियां और कविताओं के ऑडियो बनाए और बच्चों तक पहुंचाए। जिससे बच्चे दूर बैठकर अपने घरों में साहित्य का आनंद ले पाए। उस दौरान मैंने बच्चों के लिए घर के पुस्तकालय से सर्वाधिक कविताओं और कहानियों के ऑडियो बनाए और उन्हें शिक्षकों के माध्यम से बच्चों तक पहुंचाया।

टोंक जिले के एक अन्य विद्यालय के एक शिक्षक ने समुदाय के एक युवा को कुछ पुस्तकें बच्चों को पढ़ने के लिए दीं। विद्यालय बंद होने पर बच्चे अपने समुदाय के उस युवक से पुस्तकें ले कर पढ़ते रहे। एक अन्य संस्था ने राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके में ऊंटगाड़ी को चलता–फिरता पुस्तकालय बनाकर बच्चों के बीच में बाल साहित्य पहुंचाया जिससे बच्चों का पुस्तकों से एक रिश्ता बना रहे।

(लेखिका अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन टोंक, राजस्थान से जुड़ी हैं)

टुनटुनी चिड़िया

– प्रियंवद

एक थी टुनटुनी चिड़िया। उसके चार बच्चे भी थे। टुनटुनी चिड़िया रोज सुबह–सुबह उठ कर सबसे पहले अपने घोसले की सफाई करती थी। वह अपना घोसला बहुत सुन्दर तरीके से सजाना चाहती थी। वह रोज उड़कर दूर–दूर तक जाती ताकि वह बच्चों के लिए दाना और अपने घोसले को सजाने के लिए कुछ लेकर आ सके। कभी वह नर्म–मुलायम रेशम के धागे लेकर आती तो कभी कागज़ का कोई रंगीन टुकड़ा। लेकिन टुनटुनी चिड़िया के बच्चे दिन भर उधम मचाकर सभी चीज़ें बिखेर देते थे।

एक बार जब टुनटुनी चिड़िया बहुत ऊंचाई पर आकाश में उड़ रही थी तो उसे नीचे ज़मीन पर बहुत सुन्दर रंगीन नज़ारा दिखाई दिया। टुनटुनी चिड़िया झटपट नीचे उतरने लगी। वह बहुत जल्दी ही ज़मीन के करीब आ गयी। तब उसे पता चला कि जिसे वह रंगीन नज़ारा समझ रही थी वह तो फूलों का बगीचा था। जिसमें बहुत सारे सुन्दर–सुन्दर और रंग–बिरंगे फूल खिले हुए थे। टुनटुनी चिड़िया ने सोचा– अरे वाह! यहां तो इतने सारे सुन्दर सुन्दर फूल खिले हैं क्यों न कुछ फूल मैं अपने घोसले के लिए लेती जाऊं? बगीचे के ऊपर मंडराते हुए अभी वह यह बात सोच ही रही थी कि उसकी नज़र बगीचे के बीचों–बीच लगे एक बड़े से बोर्ड पर गयी। बोर्ड पर लिखा था– "फूल तोड़ना सख्त मना है"। यह देखते ही टुनटुनी चिड़िया उदास हो गयी। वह सोचने लगी– यहां तो इतने सारे फूल खिले हुए हैं अगर मैं इनमें से चार–छः फूल तोड़ भी लूंगी तो यहाँ कोई फूलों की कमी थोड़े ही न हो जायेगी। यही सोचकर वह थोड़ा और नीचे आयी। अभी वह पूरी तरह से नीचे आई भी नहीं थी कि भिन–भिन–भिन करते मधुमक्खियों के एक दस्ते ने उसके ऊपर धावा बोल दिया। टुनटुनी चिड़िया इस हमले से घबराकर फिर से ऊपर की ओर उड़ गयी।

काफ़ी ऊपर जाने के बाद उसने पीछे मुड़कर देखा कि अब मधुमक्खियां उसके पीछे नहीं हैं तो उसकी जान में जान आयी। टुनटुनी चिड़िया सोचने लगी कि आख़िर मधुमक्खियों ने मेरे ऊपर हमला क्यों किया? मैंने तो उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ा। बहुत देर तक सोचने के बाद उसने तय किया कि क्यों न चल कर बात की जाय। वह धीरे–धीरे फिर से नीचे आने लगी, मधुमक्खियों के नुकीले डंक से उसे डर भी लग रहा था। फिर भी वह सुन्दर–सुन्दर रंगीन फूलों के बारे में सोच कर नीचे उतर रही थी... टुनटुनी चिड़िया इस बार होशियारी से नीचे उतर रही थी। उसने थोड़ी दूर से ही मधुमक्खियों को देख लिया और गिन भी लिया– 1, 2, 3, 4...12 मधुमक्खियों के इस दस्ते में कुल 12 मधुमक्खियाँ हैं। ओहो! इनकी संख्या 12 है तभी इनका नाम दर्जन दस्ता है– टुनटुनी चिड़िया ने सोचा। एक दर्जन में तो 12 ही होते हैं न। टुनटुनी चिड़िया थोड़ा और नज़दीक आयी। जैसे ही वह फूलों के नज़दीक आयी...भिन भिन भिन... मधुमक्खियों की आवाज़ सुनायी देने लगी। लेकिन टुनटुनी चिड़िया इस बार तैयारी करके आयी थी। उसने अपनी चोंच में सफ़ेद रंग का एक पंख पकड़ रखा था। सफ़ेद रंग शांति और सुलह–समझौते का प्रतीक होता है। टुनटुनी चिड़िया के चोंच में सफ़ेद रंग का पंख देख कर मधुमक्खियों ने भिन भिन भिन करना बंद कर दिया।

अब न टुनटुनी चिड़िया आगे बढ़ रही थी न ही मधुमक्खियां। मधुमक्खियों ने जब यह देखा कि टुनटुनी चिड़िया आगे नहीं आ रही है तो दर्जन दस्ते की सेनापति टुनटुनी चिड़िया के पास आयी और उसने कड़क अंदाज़ में पूछा– क्या बात है? तुम यहां क्यों आई हो? टुनटुनी चिड़िया ने अपनी चोंच से सफ़ेद रंग का पंख निकाला और कहा कि मुझे अपने घोसले के लिए कुछ ज़रूरी सामान चाहिए जो इस बगीचे में मौजूद है।

सेनापति ने पूछा– क्या चाहिए?

मुझे बहुत सारे फूल चाहिए, टुनटुनी चिड़िया ने चहकते हुए कहा। सेनापति ने गुस्से में कहा– तुम्हे पता है कि इन्हीं फूलों से हमारा खाना मिलता है, इन्हीं फूलों के कारण हम शहद बनाती हैं, इन्हीं फूलों से हमारा जीवन चलता है और तुम इन्हें ही ले जाना चाहती हो?

अरे सेनापति जी, मुझे भी इन फूलों की बहुत ज़रूरत है..

टुनटुनी चिड़िया ने कहा। अच्छा! तुम्हें इनकी क्या ज़रूरत है? सेनापति मधुमक्खी ने सख्ती से पूछा।

टुनटुनी चिड़िया ने कहा– आपको पता ही होगा कि हम सभी चिड़िया पेड़ पर घोसला बना कर रहती हैं। मैंने भी एक–एक तिनका जोड़कर आम के एक पेड़ पर अपना घोसला बनाया है। मैं तो दिन भर दाने की तलाश में भटकती रहती हूं लेकिन घोसले में मेरे बच्चे अकेले ही रहते हैं और दिनभर धमा चौकड़ी मचाते हैं। शाम को जब मैं दाना लेकर घोसले में पहुंचती हूं तो किसी न किसी बच्चे को तिनका चुभा रहता है, कई बार तो उससे खून भी निकल रहा होता है। किसी तरह दाना खिला कर मैं उनकी मरहम–पट्टी करती हूं लेकिन अगले दिन फिर वही...किसी न किसी को तिनका चुभा ही रहता है, कहीं न कहीं चोट लगी ही रहती है।

अभी टुनटुनी चिड़िया बोल ही रही थी कि सेनापति मधुमक्खी ने मुंह बनाते हुए कहा– तो इसमें मैं क्या कर सकती हूँ ? तुम अपने बच्चों को समझाती क्यों नहीं?

अरे सेनापति जी, आप तो इतनी बड़ी अधिकारी हैं आप तो बच्चों का स्वभाव जानती ही हैं। डांटने पर वह थोड़ी देर चुप रहते हैं लेकिन थोड़ी ही देर में उनका चीं चीं चीं.. .फिर से शुरू हो जाता है और फिर मुझे तो दिन भर दाने की तलाश में बाहर रहना पड़ता है, बच्चे घर में अकेले रहते हैं तो आप सोच ही सकती हैं...

वह सब तो ठीक है लेकिन इसमें मैं क्या कर सकती हूँ? सेनापति की आवाज़ थोड़ी नरम पड़ गयी थी।

सेनापति की आवाज़ को नरम पड़ता हुआ देख कर टुनटुनी चिड़िया ने तपाक से कहा– बस मुझे फूल दे दीजिये। क्या इन फूलों से तुम्हारे बच्चे धमा चौकड़ी मचाना बंद कर देंगे? सेनापति ने पूछा।

अरे नहीं, मैं तो इन फूलों को अपने घोंसले के अन्दर अच्छी तरह से बिछा दूंगी जिससे उनको न तो तिनका चुभेगा न ही चोट लगेगी और मेरा घोंसला भी सुन्दर हो जाएगा– टुनटुनी चिड़िया ने कहा। लेकिन हमारे बगीचे से फूल तोड़ना सख्त मना है– वह बोर्ड तो तुमने देखा ही होगा, सेनापति ने कहा। टुनटुनी चिड़िया सोच में पड़ गयी... उसे कुछ सूझ नहीं रहा था...तभी सेनापति ने पूछा– अच्छा बताओ तुम्हें कितने फूल चाहिए? टुनटुनी चिड़िया ने बिना देर किये ही कहा– सौ...मुझे अलग–अलग रंगों के सौ फूल चाहिए।

सौ? ये सौ कितना होता है? सेनापति ने पूछा।

टुनटुनी चिड़िया फिर से सोच में पड़ गयी कि अब सेनापति को सौ के बारे में कैसे समझाए...उसने कहा– चलिए मैं बगीचे में फूलों को गिन कर बताती हूँ।

सेनापति ने कहा– ठीक है चलो लेकिन ध्यान रहे एक भी फूल तोड़ना नहीं है।

तो मुझे फूल कैसे मिलेगा? टुनटुनी चिड़िया ने पूछा।

तुम्हें तो फूल ही चाहिए न? बस तुम मेरे साथ चलो– सेनापति ने कहा। सेनापति और टुनटुनी चिड़िया बगीचे की ओर चल पड़े। उनके पीछे–पीछे भिन भिन भिन... करता दर्जन दस्ता भी आ रहा था। अब दर्जन दस्ते में ग्यारह सिपाही मधुमक्खियां ही थीं क्योंकि सेनापति तो टुनटुनी चिड़िया के साथ आगे–आगे चल रही थी। टुनटुनी चिड़िया सोच रही थी कि जब फूल तोड़ना ही नहीं है तो मुझे फूल मिलेंगे कैसे?

जब वे बगीचे में पहुंचे तब भी टुनटुनी चिड़िया सोच में पड़ी हुई थी और परेशान भी लग रही थी...सेनापति समझ गयी कि टुनटुनी चिड़िया किस बात से परेशान है। उसने कहा कि देखो हमारे बगीचे का नियम है कि कोई भी इसके फूल को तोड़ कर नहीं ले जा सकता लेकिन...जो फूल अपने आप टूट कर गिरे हुए हैं तुम उन्हें अपने साथ ले जा सकती हो।अयह सुनते ही टुनटुनी चिड़िया खुशी के मारे उछल पड़ी। तो सेनापति ने कहा– देखो यह सब मैं सिर्फ़ तुम्हारे छोटे–छोटे बच्चों के लिए कर रही हूं...अब बताओ सौ मतलब कितना होता है?

टुनटुनी चिड़िया ने वहां बिखरे हुए बहुत सारे फूल इकठ्ठा किये, फिर उसने दस–दस फूलों के दस अलग–अलग ढेर बनाये और सेनापति से पूछा कि बताओ एक ढेर में कुल कितने फूल हैं? सेनापति ने गिना– 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10 और कहा कि एक ढेर में 10 फूल हैं। अरे वाह! टुनटुनी चिड़िया ने कहा और फिर से पूछा कि अच्छा अब यह बताओ कि यदि हम दो ढ़ेरों को एक साथ मिला दें तो कुल कितने फूल हो जायेंगे? सेनापति ने फिर से गिनना शुरू किया 1,2,3...अभी सेनापति ने गिनना शुरू ही किया था कि टुनटुनी चिड़िया ने उसे रोक दिया और कहा कि एक ढेर में तो तुम पहले ही 10 फूल गिन चुकी हो तो अब दूसरे ढेर से एक–एक फूल मिलाते जाओ और गिनते जाओ। सेनापति ने ऐसा ही किया और कहा– यह तो 20 हो गये। इसी तरह से जब सेनापति ने सभी 10 ढ़ेरों को गिन लिया तो उसे पता चला कि 10–10 के 10 ढ़ेरों को यदि मिला दिया जाय तो 100 हो जाता है। जब 100 फूल पूरे हो गए तो टुनटुनी चिड़िया उन फूलों को साथ लेकर उड़ गयी और दर्जन दस्ते को धन्यवाद भी कहा। अब दर्जन दस्ते में फिर से 12 मधुमक्खियाँ हो गयी थीं...क्यों?

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ऊधमसिंह, उत्तराखण्ड नगर से जुड़े हैं)

हिन्दी हैं हम

बाल साहित्य की भूमिका, भाषा सिखाने के लिए ही नहीं बल्कि भाषा को और समृद्ध करने के साथ–साथ दुनिया को और बेहतर तरीके से समझने की भी रही है। एन.सी.एफ 2005 में पुस्तकालय की भूमिका को भाषा सिखाने और सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में स्वीकारा गया है।

– स्वाती कश्यप

साहिर छठी क्लास में चला गया है। जिस विषय में उसे सबसे कम नंबर मिले हैं वह है हिन्दी। वह पहले ही घोषणा कर चुका है कि हिन्दी में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है। कई बार हमसे पूछ चुका है कि आखिर और कितने दिनों तक उसे शुद्ध हिन्दी पढ़ना और लिखना है!

शुरुआत ऐसी न थी। उसने मात्र दो महीने में हिन्दी पढ़ना और लिखना सीखा था। कहानियों की किताबें लेकर खेलता और फिर पढ़ने की कोशिश करता। हमारे पास भी किताब लेकर आता और कहता 'सुनाओ।

जब वह लगभग तीन साढ़े तीन साल का था तब उसने एक तुकबंदी बनाई थी

'माचिस जली ठक

चूल्हा जला भक'

पांच साल की उमर में उसने एक कविता बनाई थी। कविता से कुछ पंक्तियां हैं–

'पेड़ अच्छे होते हैं

सबको कुछ –कुछ देते हैं

अच्छे पेड़ प्यारे पेड़

लोगों से प्यार करते हैं

प्यार लेकर लोगों से पेड़ प्यार करते हैं'

जैसे–जैसे उसका स्कूल से वास्ता बढ़ा उसका 'हिन्दी' भाषा से प्रेम कम होने लगा। तत्सम–तद्भव, देशज–विदेशज, शुद्धता–अशुद्धता के बोझ तले उसकी अपनी भाषा दबने लगी। कई कारणों से हमने उसका स्कूल कई बार बदला। ज्यादातर स्कूलों में 'हिन्दी' और 'हिन्दी' मैम के साथ साहिर की संघर्ष की स्थिति बनी रही। तीन साल पहले जिस स्कूल में था वहां की हिन्दी मैडम ने 'वृक्ष' पर एक लेख लिखने को दिया था। साहिर ने दिल लगाकर लिखा। उसमें उसने कई तरह की बातें लिखीं, जैसे, पेड़ पर चिड़िया का घर होता है, पेड़ सबको

चित्रांकन– अनुप्रिया

ठंडी हवा देते हैं। पेड़ में हरे–हरे पत्ते होते हैं। ऐसे ही कुछ 8–10 वाक्य रहे होंगे। उसका हर वाक्य 'पेड़' से शुरू होता था। शिक्षिका महोदया ने सभी पेड़ को एक बड़े से लाल घेरे में डाल दिया और बगल में लिख दिया 'वृक्ष।

उसी दौरान पुस्तकालय पर भी एक लेख लिखने को दिया गया था। साहिर ने कुछ ऐसा लिखा था।' हमारे स्कूल में एक पुस्तकालय था। उसमें बहुत सी किताबें थीं। हम वहां जो चाहें सो किताब पढ़ सकते थे। अब कुछ महीनों से पुस्तकालय की क्लास नहीं होती। वहां कंप्यूटर रूम बन गया है। काश! वह पुस्तकालय फिर से आ जाए!'

शिक्षिका ने उसे काटकर एक शानदार लेख लिखवाया

जो कुछ ऐसा था– हमारे विद्यालय में एक शानदार पुस्तकालय है। यह शानदार पुस्तकों से भरा है। पुस्तकें ज्ञान का रास्ता दिखाती हैं। यह हमें हार्दिक प्रसन्नता देता है... वगैरह वगैरह!

हम साहिर की कॉपी लेकर प्रिंसिपल से मिलने गए। प्रिंसिपल ने हमारी बात अच्छे से सुनी और फिर एक जबरदस्त नियम बनाया– प्रिंसिपल के कमरे तक पहुँचने के लिए कोई बड़ी वजह या जटिल मामला चाहिए अन्यथा अभिभावक स्कूल गेट के बाहर खड़े रहें।

साहिर का मन हिन्दी पढ़ने से उचटता जा रहा था। हिन्दी की कॉपी शिकायतों से भरी रहती– 'गृह कार्य पूरा करें। कृपया अपनी लिखावट सुधारें। कार्य अधूरा है. ध्यान से लिखें।' बाकी विषयों में उतनी शिकायतें नहीं होतीं।

घर पर हमने कुछ कोशिश की कि उसका मन इस भाषा से डरे नहीं। नहीं! वह डरता कहां था! जो भाषा वह किताब में पढ़ रहा था उसका उसके जीवन में कोई इस्तेमाल नहीं था। जो वह लिखता शिक्षिका महोदया की नजर में उसका कोई स्थान न था। किसी भी तरह से खुद को व्यक्त करने का मौका नहीं था– न बोलकर, न लिखकर। ऊपर से 'व्याकरण' की जटिलताएं।

घर पर वह कहानियों की किताबें पढ़ता, हिन्दी में भी और अंग्रेजी में भी। शब्दों के साथ वह खेलता। कभी–कभी मैं उसे कुछ शब्द देती और वह झटपट एक छोटी–मोटी कविता बना देता। फिर वह मुझे भी कुछ शब्द देता और मुझे भी कविता बनाने की कोशिश करनी पड़ती हालांकि कविता बनाना मेरे किसी हाथ का खेल नहीं।

साहिर जब तीसरी क्लास में था तब ऐसे ही खेलते हुए हमने कुछ कविताएं बनाई थीं।

चुलबुला

बच्चा था एक चुलबुला
नाम था उसका बुलबुला
थे उसके एक भइया
नाम था उनका भुरभुरा
छोटा बुलबुला गिर पड़ा
भइया भुरभुरा हँस पड़ा

पापा जी

एक हमारे दादा जी हैं
एक हमारे नानाजी
चाचा मामा बहुत बहुत हैं
लेकिन रहते दूर बहुत हैं
पापा जी हैं पास हमारे
करते नाटक वे कई सारे

होली

लेकर आई होली
कई बच्चों की टोली
एक लड़की बोली
फेंको रंगों की गोली
साथ में गुब्बारों की झोली!

हाय–हाय

जब कोई पूछे, 'क्या हाल'
मम्मा बोले, 'हाय मेरे बाल,
झड़ते जाते वे हर साल'
हाल पूछना बन जाता काल!
साहिर बोले, 'बालों का जाल' !

मात

मम्मा बाबा और साहिर रहते साथ
घूमने जाते ले हाथों में हाथ
करते रहते खूब बात ही बात
अगर कोई अड़ाता उनकी बातों में लात
दे देते वे हर लात को मात !

घर पर और स्कूल में दो अलग–अलग तरह की कोशिशें चल रही थीं। पांचवी क्लास में संयोग ऐसा हुआ कि क्लास टीचर हिन्दी की टीचर थीं। उन्हें भी साहिर से बहुत शिकायतें रहीं।' बहुत स्लो है। लिखता ही नहीं है। लिखावट बहुत खराब है। इसकी कॉपी उठाकर देख लीजिए कुछ करता ही नहीं है। ये सभी बातें वे कई अभिभावकों के सामने तब बोल रही थीं जब उनका और हमारा पहला आमना–सामना था। हम तो अभी कुर्सी पर आधे ही बैठे थे। साहिर का चेहरा उतर गया था।

स्कूल के आखिरी दिन कुछ बच्चे हिन्दी मैम के चरण स्पर्श कर रहे थे। मैम भी भावुक हो रही थीं और उन बच्चों को आशीर्वाद दे रही थीं। साहिर और मैं भी वहीं पर थे। साहिर अपना फोल्डर उठा चुका था और न जाने किस उम्मीद में वहीं पर खड़ा था। हमें एक और मैडम से मिलना था सो हम दूसरी क्लास में जाने के लिए मुड़

गए। शर्मिला मैम चौथी क्लास में साहिर और बाकी बच्चों को सोशल साइंस पढ़ाती थीं। पांचवी में उन्होंने अंग्रेजी पढ़ाई थी।

शर्मिला मैम अपनी क्लास के बच्चों में मसरूफ थीं। हम दरवाजे के बाहर से कनखियों से उन्हें देख रहे थे। मैम की नजर पड़ी और मुस्कुराकर उन्होंने पुकारा, 'साहिर, हम भागते हुए उनके पास पहुंचे। शर्मिला मैम भी जान रही थीं कि आज हमें उस स्कूल से विदा लेना था। वे बोलीं, सभी अभिभावकों के बीच में बोलीं, 'हमको तुम पर बहुत भरोसा है साहिर। तुम जरूर बहुत अच्छा करोगे। फिर एक बच्चे के पिता की ओर मुड़कर बोलीं, इसके जवाब एकदम अलग से होते हैं। ये कुछ अलग करेगा। मैं मैम का चेहरा देख रही थी। कितनी खुशी थी उनके चेहरे पर।

मेरी आंखें भर आईं। मैंने साहिर को देखा। उसकी आंखें भी नम थीं। हम शर्मिला मैम को इतना ही कह पाए, 'आपको फोन करेंगे। फिर सीढ़ियों से दौड़ते हुए नीचे की तरफ भागे। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था मानो हम दौड़ नहीं, उड़ रहे हों। शर्मिला मैम ने हमें पंख दे दिए थे हमेशा के लिए!

सोच रही हूं, एक ही स्कूल की दो टीचर के अलग तरह के कमेंट आए। उनका असर कितना अलग है! साहिर के लिए आखिर हिन्दी इतनी पराई कैसे हो गई? जिसे बोलता हुआ वह बड़ा हो रहा है, समय–समय पर जिसमें उसने शब्दों की कलाकारी दिखाई वही उसके लिए अब बोझिल कैसे हो गई?

जरा सोचिए कि स्कूलों में, कॉलेजों में, सरकारी दफ्तरों में, न्यायालयों में, जहां भी 'अतिवादी' हिन्दी है वह बदलाव के नूर से रौशन हो गई है। उस 'हिन्दी' में ये सारे काम काज हो रहे हैं जो हमारी बोलचाल की भाषा है, जो बगैर 'कोश' समझी जाती है और जो लोगों के दिलों तक बड़ी आसानी से पहुंच जाती है।

मैं स्कूलों में बच्चियों और बच्चों के मुस्कुराते चेहरों को देख पा रही हूं। उनके खिलखिलाते शब्दों को सुन पा रही हूं। आप भी इन 'शब्दकारों' के गीत सुन पा रहे हैं न! जब यह लिख रही हूं तब मेरे कानों में वे सारे शब्द गूंज रहे हैं जो साहिर खनकाता रहता है!

(लेखिका शैक्षिक संस्थाओं के साथ जुड़कर स्वतंत्र लेखन व गतिविधियां करती है वह पटना, बिहार की रहने वाली हैं)

शिक्षक सृजन

पूनम पासवान, कक्षा–5, राजकीय प्राथमिक विद्यालय पंडितवाड़ी, सहसपुर, देहरादून

मथनी ओर भगोना

हमने सुना एक शब्द अजीब
जब दादी ने माँ से बोला
जल्दी दे दो मथनी और भगोना
दही है मुझे बिलोना।
बच्चा पार्टी भी बोली–
दादी अर्थ तो समझाओ
इस बिलोने से हमें भी मिलाओ।
दादी ने किया एक्शन
सामने रख दिये कई बरतन
एक मथनी और एक भगोना।
हथेलियों के बीच मथनी नाच–नाच
दही से मक्खन अलग कर रही थी।
पर मम्मी कहाँ बिलोती है
वो तो मिक्सी चलाती हैं
घर्र घर्र घर्र घर।

चक्की रानी

मैंने मोहल्ले की एक दुकान में देखा
शोर मचाता बिना दाँत दिखाता राक्षस
गोल–चौकोर सा लिए मुँह
दाँत छुपाए अंदर
बड़ी सी नाक लिए
मटक कर नाच दिखाता है।
दुकान वाले भैया ने डाले गेहूं के दाने
जल्दी– जल्दी लगा उसे चबाने
तब मेरी समझ में आया
जो भी उसने मुंह में डाला
चकनाचूर उसने कर डाला।

– ऋचा रथ

बी–6 सेल्स टेक्स कॉलोनी, शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़

आजाद चिड़िया

– वंदना टमटा

एक बार की बात है जब मैं अपने आँगन में टहल रही थी तभी मुझे एक घायल चिड़िया का बच्चा दिखाई दिया जो मेरे आँगन में आ गया था। तो तब मैं उसके पास गयी। शायद वह चिड़िया का बच्चा उड़ना चाहता था लेकिन उड़ नहीं पा रहा था। मुझे लगा कि वह कुछ परेशान है और मैंने उसे अपने हाथों से पकड़ लिया। वह आसानी से मेरे हाथों में आ गया और मैंने उसको सहलाया तो वह कुछ सहज हो गया ।

जब मेरे परिवार ने उसे देखा तो वह उसे देखकर बहुत खुश हुए कि चलो इसको हम पाल लेते हैं और इसका कुछ इलाज करके ठीक–ठाक कर देते हैं और फिर अपने पास ही रख लेते हैं। मैंने उसकी ओर ठीक से देखा तब मुझे समझ आया कि इसके गले में कुछ फंसा है। तो मैंने धीरे से चिड़िया के गले से एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा निकाला। फिर अपने हाथों से पानी की बूंदें उसके गले में डालीं और उसे पानी पिलाया।

उसी समय मेरे बच्चे भी वहां आ गए थे तो बच्चों ने कहा कि चलो हम सब इसे पाल लेते हैं। फिर हम सबको उस घायल अवस्था में चिड़िया को छोड़ना उचित भी नहीं लगा। हमें लगा कि ऐसे चिड़िया को छोड़ना नहीं चाहिए, कहीं वह किसी जानवर का शिकार न बन जाए। इसीलिए जब तक वह ठीक नहीं होती है, तब तक हम उसे पाल लेते हैं।

हम एक पुराने जूते का डिब्बा ले आये और हमने उसमें कुछ छेद किये। उसमें हमने कपड़ा बिछा दिया ताकि वह चिड़िया उसमें आसानी से रह सके। एक कटोरी में मेरी बेटी उसके लिए थोड़े दाने ले आयी और मेरा बेटा एक कटोरी में थोड़ा पानी ले आया। हमने सोचा कि अब हम इसको अपने पास ही रख लेते हैं ।

काफी देर तक वह चिड़िया का बच्चा उड़ा नहीं। हमें लगा कि शायद अब यह हमारे साथ रहना चाहता है, इसको हमारे साथ अच्छा लग गया है। हमने भी उसे पालने का मन बना ही लिया था।

दाना–पानी मिलने के बाद थोड़ी देर में ही वह हमारी छत पर चलने लगा। वह चलने लगा तो हम भी उसके पीछे–

पीछे चलने लगे, चलते रहे, चलते रहे तो देखा कि कभी वह दाने चुगता था, फिर आगे जाता फिर पीछे जाता, कभी इधर उड़ता, कभी उधर उड़ता। तो हमें लगा कि अब तो यह हमारे साथ घुल मिल गया है। यूं ही फिर हमने देखा कि वह धीरे–धीरे चलते–चलते हमारे छत के अंतिम छोर पर पहुंच गया है।

हम सब वही खड़े थे। हमें लगा कि अब तो यह शायद कहीं नहीं जायेगा, अब तो शायद इसे हमारे साथ अच्छा लगने लगा है। तो हम भी बेफिक्र होकर उसे देखने लगे थे। तो अचानक हम क्या देखते हैं कि यह तो चिड़िया का बच्चा तो उड़ गया और उड़कर वह दूसरे घर की छत पर पहुंच गया। फिर वहां से भी धीरे–धीरे, उड़ते–उड़ते वह आंखों से ओझल हो गया। उस समय हमें ऐसा लगा जैसे चिड़िया ने हमें ठग लिया है और हम ठगे गए हैं। हमारी चिड़िया पालने के अरमानों में पानी फिर गया।

इस बात को सोचकर हम सब हंसने लगे और हम अपने घर के अंदर आ गये। इस अनुभव से मुझे लगा कि वास्तव में चिड़िया को पिंजरे में रहना पसंद नहीं होता है, बल्कि उसे मस्त होकर खुले आसमान में उड़ना पसंद होता है।

(लेखिका उच्च प्राथमिक विद्यालय मूनाकोट, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका के पद पर हैं)

फोटो– पुरुषोत्तम

लिखी जा रही है 'मम्मी जब बच्ची थीं'

व्यक्तित्व का विकास आजीवन चलता रहता है और साहित्य से जुड़ाव हमें सहज एवं संवेदनशील बनाता है। लॉकडाउन के दौरान मेरी बेटी ने ढेर सारा बाल साहित्य पढ़ा और इस तरह उसका पढ़ने-लिखने से नाता टूटा नहीं। ऑनलाइन की ऊब से भी बाल साहित्य ने उसे काफी हद तक बचाये रखा।

– डॉ. रुचि श्री

जब से ऑनलाइन कक्षाओं का दौर शुरू हुआ तो 'डिजिटल डिवाइड' का मुद्दा काफी चर्चा में रहा। मसलन, जिन घरों में स्मार्टफोन नहीं, वे बच्चे कक्षा कैसे करें? या फिर अगर एक ही स्मार्टफोन हो और बच्चे दो हों तो एक और फोन खरीदने की बाध्यता हो जाती है। इन दो सालों में बच्चे मुश्किल से तीन महीने शारीरिक रूप से स्कूल गए और अब फिर से ऑनलाइन कक्षाओं का दौर जारी है। यह लेख मेरे व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है जिसमें एक प्राध्यापिका और माँ की भूमिका में युवा वर्ग और एक छोटी बच्ची के नजरिये से 'लर्निंग लॉस' को समझने और उसे कम करने में साहित्य की भूमिका पर नजर डालने का प्रयास है।

2020 में जब कोरोना का पहला दौर शुरू हुआ तब मेरी बेटी मानवी पांच साल की थी और स्कूल जाने पर पाबन्दी होने से मैंने उसे व्यस्त रहने के क्रम में उसका ध्यान बाल साहित्य में लगाने का प्रयास किया। उसे बहुत सारी किताबें, पत्रिकाएं पढ़ने को दीं। इकतारा प्रकाशन की साइकिल और प्लूटो जैसी पत्रिकाएं बड़े लोगों के लिए भी उतनी ही ज्ञानवर्धक हैं जितनी बच्चों के लिए। इनके माध्यम से विश्व साहित्य से परिचय का अच्छा मौका मिलता है। इसी तरह प्रयाग शुक्ल जी की कविताएं एवं सोपान जोशी की गाँधी पर दो किताबें एक था मोहन और बापू की पाती को पढ़ना रुचिकर था।

मुझे लगता है कि व्यक्तित्व का विकास आजीवन चलता रहता है और साहित्य से जुड़ाव हमें सहज एवं संवेदनशील बनाता है। स्नातकोत्तर (राजनीति विज्ञान)

के छात्र–छात्राओं को पढ़ाने के क्रम में महसूस हुआ कि उनमें से बहुत कम ही अपने विषय से इतर कुछ पढ़ते हैं। ऐसे में अंतरविषयी ज्ञान को बढ़ावा देने के क्रम में मैंने उन्हें एक 'रीडिंग क्लब' बनाने का सुझाव दिया। हर महीने एक पुस्तक का पाठ और उस पर चर्चा की कोशिश रहती है। समय–समय पर हम लोग कक्षा में सामूहिक पाठ भी करते हैं। अनुपम मिश्र के लेखों का संकलन 'साफ माथे का समाज' साथ पढ़कर बच्चे काफी लाभान्वित हुए। ऑनलाइन क्लास के दौरान भी हम लोग इस क्रम को जारी रख पाते हैं।

हाल में पढ़ी तीन किताबें जिन्होंने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया, वे हैं चिंगीज आइत्मातोव की 'पहला अध्यापक', ज्यां गिओने की 'जिसने उम्मीद के बीज बोये' और अलेक्सांद्र रस्किन की 'पापा जब बच्चे थे'. पहला अध्यापक 'दुइशेन' नामक उपन्यास (सोवियत साहित्य) का भीष्म साहनी द्वारा अनुवाद है। यह कहानी एक व्यक्ति की हिम्मत की है जो स्वयं बहुत पढ़ा–लिखा नहीं था पर चाहता था कि ज्यादा से ज्यादा बच्चे पढ़ सकें। उसने न सिर्फ नाममात्र की सुविधा वाला एक स्कूल खोला बल्कि घर–घर जाकर लोगों से अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए आग्रह भी किया। आल्तीनाई नामक अनाथ लड़की को भी पढ़ने का मौका मिल सका और पढ़ने की अदम्य इच्छा के बल पर वह छात्रवृत्तियों के सहारे कस्बे से बाहर गयी। आगे चलकर वह विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र की प्राध्यापिका बनी।

'जिसने उम्मीद के बीज बोये' महज 24 पन्नों वाली एक छोटी सी पर मन में घर करने वाली किताब है। यह एक अनपढ़ गड़रिये की कहानी है जो अपनी लगन से एक निर्जन क्षेत्र को क्रमशः बीज बोकर कुछ सालों में एक पथरीली पहाड़ी को हरा–भरा कर देता है। इसमें पाठ है–लगन और एकाग्रता का, सामूहिकता का, इंसानियत और दरियादिली का, सात्विक जीवन के महत्त्व का। यह किताब मशहूर ग्रीन क्लासिक है और मानवी के साथ इसे पढ़ने पर हम दोनों माँ–बेटी का पर्यावरण प्रेम तो बढ़ा ही, इसे पढ़कर मेरे छात्रों को भी बहुत अच्छा लगा। मेरी कोशिश रहती है कि जब भी कोई अच्छी किताब पढ़ूं तो कुछ और लोगों को भी उसे पढ़ने के लिए कहूं।

रस्किन की किताब 'व्हेन डैडी वाज अ लिट्ल बॉय' पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस द्वारा 'पापा जब बच्चे थे' नाम से अनुवादित पुस्तक है। इसमें छोटी–छोटी कहानियों से जीवन अनुभव के तौर पर सहज ढंग से कई महत्वपूर्ण सीखें दी गयी हैं। कुछ प्रसंग स्कूल के हैं तो कुछ खेल के मैदान से गलतियों से सीख लेने के। अपनी ताकत आजमाने की, नई भाषा सीखने की, चित्रकारी, लिखना, इत्यादि। भाषा सीखने में किस तरह लिखना, पढ़ना और बोलना तीनों ही साथ चलना जरूरी है। ऐसे में मजेदार कहानियां पढ़ना इस क्रम को रोचक बनाता है।

रीडिंग क्लब के साथ अध्यापन में दूसरा जारी प्रयोग है विद्यार्थियों को अंग्रेजी सिखाने का। वे हर दिन पांच नए शब्द का अर्थ सीखते हैं, वाक्य में उनके प्रयोग के साथ। साथ ही, अपनी दिनचर्या या फिर अपनी पसंद के किसी विषय पर सात से दस वाक्य लिखने की आदत बनाने जैसी कोशिश से उन लोगों को काफी लाभ मिला है। इधर घर पर अब मानवी सात साल की हो गयी हैं और हाल फिलहाल फूल और तितली जैसे विषयों पर छोटी कविताएं लिखने लगी हैं। काफी समय से रात को सोने से पहले वे मेरे बचपन की बातें कहानी के तौर पर सुनती रही हैं और हाल में 'पापा जब बच्चे थे' पढ़ने का असर कहिये, अब 'मम्मी जब बच्ची थी' लिखने की तैयारी कर रही हैं। कुल मिलाकर, साहित्य पढ़ना और अपने साथ अधिक से अधिक पढ़ने वालों को जोड़ना प्रेरणादायी है।

(लेखिका तिलका माझी भागलपुर विश्वविद्यालय, बिहार में राजनीति शास्त्र विभाग में प्राध्यापिका हैं।)

शिक्षक सृजन– कविता

फूटे हैं आमों में बौर
फूटे हैं आमों में बौर,
कोयल का ये बनता ठौर।
झूमे देखो डाली–डाली,
गाये कोयल हो मतवाली।
गुन गुन भौंरे गीत सुनाते,
धीरे–धीरे रस पी जाते।
सबके मन को हैं ये भाते,
फलों से पेड़ जब लद जाते।
आम फलों का राजा है,
बनता इससे माजा है।
फ्रूटी हमको भाती है,
जब भी गर्मी आती है।

–इंदु कोठारी
राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, बौराड़ी, चम्बा, टिहरी गढ़वाल

लर्निंग गैप को भरने के रचनात्मक प्रयास

– बिपिन जोशी

विद्यालय-	राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय मटीना ब्लॉक गरुड़, जिला बागेश्वर, उत्तराखण्ड
प्रधानाध्यापक-	दुर्गा लाल वर्मा
सहायक अध्यापक-	ख्याली दत्त जोशी, संतोष कुमार
नामांकन-	19
भोजनमाता-	पुष्पा फुलारा
ग्राम प्रधान-	रविन्द्र बिष्ट
एस.एम.सी. अध्यक्ष-	गीता शर्मा

यह देखना कितना सुखद है कि कोई शिक्षक स्वयं पहल लेकर शिक्षा के रचनात्मक अभियान को आगे बढ़ाता हो। वर्तमान दौर में बच्चों का सीखना प्रभावित हुआ है ऐसे में एक सवाल उभरता है क्या करें कि बच्चों का लर्निंग गैप पाटा जाय। वक्त की जरूरत है कि शैक्षणिक प्रयास फलदायी हो, और बच्चों का लर्निंग गैप कम हो। उनमें अवलोकन, विश्लेषण और प्रश्न करने की मूलभूत दक्षताओं का विकास हो। हमारे शैक्षणिक जगत के सारे प्रयास इसी ओर इशारा करते हैं। इस आलेख में जानते हैं राष्ट्रपति पुरुस्कार प्राप्त प्रधानाध्यापक दुर्गा लाल वर्मा जी के रचनात्मक प्रयासों के बारे में। दुर्गा लाल जी उत्तराखण्ड, जनपद बागेश्वर, विकास खण्ड गरुड़ के राजकीय जूनियर हाईस्कूल मटेना में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

बीते दो वर्षो में कोविड 19 महामारी ने सभी क्षेत्रों को झकझोरा है। व्यापार हो या पर्यटन व अन्य रोजगार हर जगह कोविड का बुरा प्रभाव देखने को मिला है। शिक्षा के क्षेत्र में भी कोविड महामारी व लॉकडाउन का खासा असर रहा। डेढ़ महीने की स्कूल बंदी ने प्राथमिक व अपर प्राथमिक शिक्षा में गंभीर रूप से शैक्षणिक क्षति को बढ़ावा दिया है या दूसरे शब्दों में कहें तो विद्यार्थियों के बीच लर्निंग गैप को बढ़ाया है। कुछ संस्थानों ने शोध के बाद इसे लर्निंग लॉस का नाम भी दिया है। हालात बड़े नाजुक हैं। उत्तराखण्ड सहित देश के अन्य राज्यों में प्राथमिक शिक्षा में हुए लर्निंग लॉस को देखें तो सभी कक्षाओं में बच्चों के सीखने के स्तर प्रभावित हुए हैं। शब्द पढ़ना, अपनी समझ से वाक्य निर्माण करना, धारा प्रवाह पठन, चित्रों को देखकर उसके बारे में लिखना हो या सामान्य गणित या अंग्रेजी भाषा। सभी विषयों में बच्चों को खासा दिक्कतों का सामना करना पड़ा है। ऑनलाइन पढ़ाई बहुत कारगर साबित नहीं हुई है। ऐसे में बहुत से शिक्षकों ने बच्चों के लर्निंग गैप को पाटने के लिए स्वयं के स्तर से ऑफलाइन प्रयास भी किये हैं। उनके प्रयास अभी जारी हैं। ऐसे ही शिक्षक हैं दुर्गा लाल वर्मा। आप गरुड़ के टानीखेत क्षेत्र में रहते हैं। अपर प्राथमिक विद्यालय मटेना गरुड़ में कई सालों से शिक्षण कार्य कर रहे हैं।

आपको राष्ट्रपति, शैलेश मटियानी, राज्यपाल पुरुस्कार, तरूश्री पुरुस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। शिक्षा के साथ आपने पर्यावरण संरक्षण का वृहद अभियान भी पौधा मेरे नाम का तथा चेली वाटिका नाम से संचालित किया है। दुर्गा लाल जी बताते हैं कि इस पूरे कार्य में इनकी पत्नी निरंजना वर्मा जो कि स्वयं एक शिक्षिका है ने काफी सहयोग किया है वे भी उनको प्रेरित करती हैं दोनों का शिक्षा से जुड़े रहने का लाभ भी वैचारिक रूप से एक दूसरे को मिलता है।

मोहल्ला पाठशाला की शुरुआत

विभागीय एसओपी के अनुसार बच्चों को 3 घंटे से अधिक समय तक स्कूल में नहीं रख सकते हैं। अब शैक्षणिक सत्र भी पूरा होने वाला है ऐसे में कम समय में बच्चों को पाठ्यक्रम भी पूरा कराना है और उनका लर्निंग लॉस भी पाटना है। यानी पिछले महिनों का लर्निंग गैप कैसे पूरा होगा ? यह एक चुनौती भी है इस चुनौती से निपटने के लिए बच्चों के साथ रचनात्मक तरीकों से अध्ययन कार्य करना होगा। दुर्गा लाल वर्मा जी बहुत सहजता से कहते हैं कि विविध प्रकार की वर्कशीट और गतिविधियों के जरिये स्कूल के अतिरिक्त उनके अभिभावकों की अनुमति के बाद वे बच्चों को पढ़ा रहे हैं। सीखने समझने में मदद कर रहे हैं। इस अभियान को वे मोहल्ला पाठशाला का नाम दिया गया है। यानी एक मोहल्ले के बच्चे को एक जगह एकत्र करके रोजाना दो घंटे पढ़ाना होता है। इसी तरह फिर अगले मोहल्ले में अगले दिन कक्षा लगती है जिसमें अन्य स्कूलों के बच्चे भी जुड़ सकते हैं, कक्षा का लाभ ले सकते हैं।

मोहल्ला पाठशाला में गणित, भाषा

हिंदी, अंग्रेजी, विज्ञान की कक्षाएं नियमित रूप से संचालित हो रही हैं। अवकाश वाले दिन भी उक्त कक्षाएं संचालित की जाती हैं। बच्चों का सीख स्तर आगे ले जाने के लिए शिक्षकों का बच्चों को अतिरिक्त समय देना उनकी वैयक्तिक एफर्ट और समर्पण का मुद्दा है। इस तरह के प्रयासों में अपना व्यक्तिगत समय लगाना होता है, स्कूल में समय देने के बाद तथा तमाम तरह के विभागीय दस्तावेजीकरण के कार्यों को संपादित करने के बाद मोहल्ला पाठशाला जैसी रचनात्मक गतिविधियों के लिए समय निकालना, योजना बनाना, बच्चों को रुचिपूर्ण शिक्षण से जोड़ पाना स्वयं में एक चुनौती है।

विभागीय अधिकारी

'दूरस्थ क्षेत्र के वंचित बच्चों के लिए दुर्गा लाल वर्मा जी का प्रयास सराहनीय है। बच्चों को नवाचारी गतिविधियों से शिक्षा देने का कार्य एक अच्छा उदाहरण है। कोविड काल में घर–घर जाकर शिक्षण का अभिनव प्रयोग दुर्गा लाल जी ने किया है, जो सभी के लिए प्रेरणादायी है।'

–बीईओ, उम्मेद सिंह रावत जी

'दुर्गा लाल जी एक नवाचारी शिक्षक हैं। पर्यावरण और शिक्षा में उनके नवाचारी प्रयोग सराहनीय है। पौधा मेरे आंगन का हो या चेली वाटिका आपने नवाचारों से छात्रों तथा समुदाय को जोड़ा है बच्चों में इसका असर भी दिखता है।'

– बीआरपी, भुवन भट्ट जी

'दुर्गा लाल जी के नवाचारी प्रयास सकारात्मक हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी पहल समुदाय में एक प्रकार की जागरूकता कायम करेगी। सार्वजनिक शिक्षा के प्रति लोगों में भरोसा कायम करने के लिए ऐसे प्रयासों की आज समाज को जरूरत है।'

– डायट प्राचार्य, डॉ. शैलेन्द्र धपोला जी

आज कोविड महामारी से जूझते हुए इस तरह के सृजनात्मक प्रयास बेहद जरूरी हैं। किताबों से बच्चों का रिश्ता कैसे बना रहे। सीखना उनकी दिनचर्या का हिस्सा कैसे बना रहे और पढ़ने–लिखने के अभ्यास से वे पुनः कैसे जुड़े? इस बात को समझते हुए वर्मा जी ने मजेदार गतिविधियां बनाई हैं। जिनमें खेल खेल में गणित सीखना, मजेदार पहेली कॉर्नर, मोबाइल पुस्तकालय, टीएलएम निर्माण, कठपुतली कला से कहानी शिक्षण जैसे मनोरंजक तरीके शामिल हैं। बच्चे रुचि लेते हुए सीखते हैं तथा उनकी सृजनात्मकता का विकास भी होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन गतिविधियों में सभी बच्चों को समान रूप से भागीदारी के अवसर भी मिलते हैं।

दुर्गा लाल वर्मा, प्रधानाध्यापक बताते हैं कि कोविड काल से पहले वे रविवार को स्वैच्छिक रूप से मस्ती की पाठशाला नाम की गतिविधि भी संचालित करते थे। विगत दस सालों से वे मस्ती की पाठशाला संचालित कर रहे हैं। गांव के बच्चे इस गतिविधि का हिस्सा हैं। खेल–खेल में पढ़ाई कैसे हो, इस पर फोकस किया गया। कक्षा–कक्ष में जाते ही सीधे ही नहीं पढ़ाते बल्कि उनके साथ कुछ सहज माहौल बनाया जाता था। एनसीएफ

2005 को आधार बनाकर शोधपरक गतिविधि कराई जाती है। जैसे विद्यालय के आसपास बांज खूब मात्रा में है तो बच्चों को बांज से संबंधित शोध कार्य करायें। कैसे बांज पानी को सहेजने में और जमीन में नमी बनाये रखने में सहायक होता है।

बांज की पत्तियों का चारे के रूप में क्या उपयोग है और बांज कैसे किसान के लिए एक मित्र के रूप में जाना जाता है। इस तरह की जानकारियां बच्चे स्वयं करके एकत्र करते हैं। जैसे – बच्चों को वाष्पोत्सर्जन का प्रयोग बताना है तो बांज के टहनी में कुछ पत्तों को पॉलीथीन से बांध दिया कुछ समय स्वयं देखते हैं कि पॉलीथीन में भाप जमा हो गई है। उनका सवाल होता है कि ये भाप आई कहां से ? इस पर बातचीत के दौरान वे समझ जाते हैं कि पेड़ भी सांस लेते हैं, जिससे भाप एकत्र हुई। अन्य विद्यालयों के बच्चे भी प्रत्येक रविवार को दो घंटे के इस सत्र में खूब आनंद लेते थे। कोविड काल के दौरान मस्ती की पाठशाला बाधित हुई है उम्मीद है जल्दी दोबारा शुरू होगी। शिक्षक कहते हैं – बच्चा घर से विद्यालय की ओर जाता है तो आने जाने के अल्प समय में भी वह प्रकृति व आसपास के वातावरण से बहुत कुछ सीखते हुए आता है। उसके भाव विचारों व स्वतंत्र अभिव्यक्ति को विद्यालय में व कक्षा–कक्ष में सम्मानजनक स्थान देना जरूरी है ।

पढ़ाने जैसे बोझिल शब्द से बच्चों में अक्सर अरुचि देखने को मिलती है। अगर एक कुशल शिक्षक इसे अपने कौशल से यह कहकर कि आज हम कुछ सीखते–सिखाते हैं से सम्बोधित करें तो बच्चों में एक रोमांच उत्पन्न होता है। उनके लिए सीखना, अनुभव प्राप्त करना, अपने सीखे हुए को साथियों में साझा करना आनंददायक प्रक्रिया होती है। विगत डेढ़ सालों में कोविड काल के दौरान बच्चों के सीखने की प्रक्रिया बहुत प्रभावित हुई है। मई 2021 में जारी एसओपी के अनुसार विद्यालय में सोमवार से शुक्रवार तक 3 घण्टे का शिक्षण कार्य किया जा रहा है। शनिवार को विद्यालय सैनेटाइज किया जाता है तथा रविवार अवकाश होने से विद्यालयी प्रक्रियाओं के लिए समय बहुत सीमित हो जाता है। ऐसे में मोहल्ला पाठशाला शुरू करने का विचार मन में आया। साथी शिक्षकों ने प्रोत्साहन बढ़ाया और समुदाय के ग्रामीणों ने भी सहयोग किया और 5 सितंबर 2021 से मोहल्ला–मोहल्ला जाकर दो घण्टे की रचनात्मक कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। इस शैक्षिक नवाचार का सीधा लाभ बच्चों को मिल रहा है।

गतिविधियां

- कक्षा–शिक्षण के साथ ही परिवेशीय शिक्षा को जोड़कर रुचिकर शिक्षण का माहौल बनाना।
- अभिभावक, छात्र व शिक्षक को समाज से जोड़कर शैक्षिक उन्नति में सहभागी बनाना।
- विद्यार्थियों को स्वयं करके सीखने के मौके देना, भय मुक्त शिक्षा का प्रसार करना तथा सरकारी विद्यालयों के प्रति सकारात्मक सोच का प्रसार करना।
- इसके साथ ही विद्यालय में निम्नलिखित गतिविधियों से शिक्षण कार्य किया जाता है –
- शनिवार को बोझमुक्त व गतिविधि आधारित शिक्षण, जिसमें पुरानी घड़ियों सहायता से कोणों की जानकारी देना।
- स्वरचित कविताओं के माध्यम से पपेट संचालन, विभिन्न मुद्दों पर पपेट शो से रुचिकर शिक्षण।
- मैथ्स मस्ती, गणित का जादू, मैथ्स बैंक इन गतिविधियों में बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना। सवाल जवाब की प्रक्रिया में सभी बच्चों का शामिल करना। कैलेण्डर से गणितीय संक्रियाओं की समझ, जोड़ की संक्रियाओं को ट्रिक से समझाना।
- प्रिन्ट रिच वातावरण को समृद्व करना। दीवारों पर गणितीय जानकारी, मैथ्स मैजिक, स्वरचित कविता कॉर्नर।
- शादी कार्ड का गणितीय प्रयोग– गणित के टीएलएम बनाना।
- चेली वाटिका में विभिन्न टायरों को रंग कर उनमें पौधे लगाये गये हैं पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ बच्चों को वृत, त्रिज्या, परिधि, क्षेत्रफल, परिमाप की अवधारणाओं से परिचित कराया जाता है। गणित के सत्र में बच्चों को स्वयं करके सीखने की अवधारणा से भी परिचित कराया जाता है।

बच्चों का लर्निंग लॉस निश्चित समय में पूरा हो पायेगा। मोहल्ला पाठशाला की कक्षाएं रोचक हों, खेल–खेल में सीखने और नवाचारों से भरपूर हो इस बात का खास ध्यान रखा जाता है। मोहल्ला पाठशाला का उद्देश्य बच्चों को स्वच्छंद वातावरण में नये अनुभवों से रू–ब–रू कराना है।

कहते हैं यदि मन में कुछ अलग करने की चाह हो तो रचनात्मक विचार मूर्त रूप लेते हैं इसकी बानगी चेली वाटिका के रूप में दिखती है– बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ थीम को रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत करने की अनूठी मुहिम चेली वाटिका के रूप में यहां दिखती है। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की यह पहल है। टायरों को रंग कर उनमें विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधे रोपे गये हैं। इस कार्य में सीमैप संस्था ने भी सहयोग किया। – अश्वगंधा, जिरेमिनयम, एलोवेरा, पत्थर चट्टा, तुलसी, लेमनग्रास, आंवला, आदि पौधे रोपे गये हैं। गांव वालों को वृक्षों के महत्व से रू–ब–रू कराना भी एक उद्देश्य है शिक्षक बताते हैं कि वृक्षों को रोपना एक बात है और उनकी देखभाल करना भी जरूरी है। इसके लिए उन्होंने स्वयं के प्रयासों व विद्यालयी फण्ड एवं तरूश्री पुरुस्कार में प्राप्त धन राशि से वाटिका के चारों और पांच नाली जमीन की तार बाड़ की है ताकि जंगली जानवरों से वृक्षों की सुरक्षा हो सके। प्रत्येक बच्चे के नाम का एक पौधा यहां रोपा गया है।

गांव में कोई शादी या शुभ कार्य होता है तो परिवार के लोग विद्यालय की वाटिका में एक पौधा लगाते हैं। किसी घर में कोई बेटी पैदा होती है तो उसके अभिभावकों द्वारा विद्यालय की वाटिका में बच्ची के नाम से पौधा रोपड़ किया जाता है उस दिन एक आयोजन भी विद्यालय में रखा जाता है। इस अभियान को पौधा मेरे आंगन का नाम भी दिया गया है। दुर्गा लाल जी के इन प्रयासों के लिए उनको तरु श्री पुरुस्कार, शैलेश मटियानी पुरुस्कार से भी नवाजा गया है।

जांच पड़ताल– इस गतिविधि में बच्चों को बताया जाता है प्लास्टिक के रैपर में पैक्ड खाने की चीजों के बारे में। अक्सर हम दुकान से सामान लेते वक्त रैपर में लिखी जानकारियों को नहीं पढ़ते। उत्पाद कब बना है? उसकी एक्सपाइरी डेट कब की है? गांव घरों में अक्सर पुरानी चीजों को बेच दिया जाता है, लोग इस बारे में कम जागरूक हैं। बच्चों को बताया जाता है कि किसी भी खाद्य वस्तु या दवाई को लेते वक्त देखना चाहिए उत्पाद व एक्सपाइरी डेट को पढ़ना चाहिए। इसे

समझाने के लिए रास्तों में पड़े प्लास्टिक रैपर को लेकर या किसी पुराने पैकट को पढ़कर डेमो किया जाता है। ताकि बच्चों को समझ में आये और वे खरीदने से पहले ठीक से जांच लें।

(बिपिन जोशी की दुर्गा लाल वर्मा जी से बातचीत के आधार पर)

प्रवाह हेतु आमंत्रण

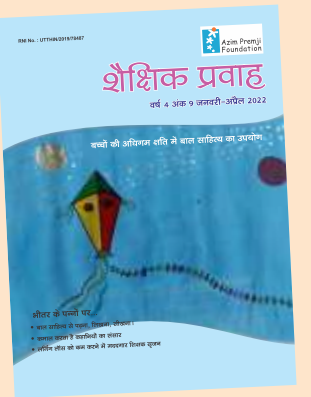

आप जानते ही हैं कि प्रवाह में शिक्षक साथियों के अनुभव एवं उनकी रचनाएं भी प्रकाशित की जाती हैं। शिक्षक साथी अपने लेख अथवा बच्चों की रचनाओं को प्रकाशन हेतु भेजना चाहें तो निम्न पतों पर प्रेषित करें।

- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, 360 (ख), आमवाला तरला, देहरादून, उत्तराखण्ड–248001**
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, कुड़ियाल भवन, भटवाड़ी रोड, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड–249193**
  फोन/फैक्स : 01374–222505
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, वार्ड नं.3, नियर गुरुद्वारा, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर,उत्तराखण्ड**
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, लोअर मॉल रोड, कर्नाटक खोला, नियर डायट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड–263601**

ई–मेलः pravah@azimpremjifoundation.org

लाइब्रेरी की नई पुस्तकें: एक परिचय (March 2022)

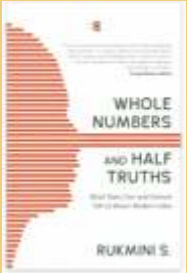

How do you see India? Fuelled by a surge of migration to cities, the country's growth appears to be defined by urbanization and by its growing, prosperous middle class. It is also defined by progressive and liberal young Indians, who vote beyond the constraints of identity, and paradoxically, by an unchecked population explosion and rising crimes against women.

घुघूति बासूति उत्तराखंड के पारम्परिक बालगीतों की पहली किताब है। जो पर्वतीय गांवों में बच्चों को सुनाए जाने वाले गीतों का संग्रह है। इस संग्रह में लोरी, पर्वगीत, क्रीड़ागीत, शिक्षा संबंधी बाल गीत व पहेलियों को शामिल किया गया है। इस पुस्तक गढ़वाली, कुमाउनी व अन्य लोकभाषाओं के बाल गीत शामिल हैं।

लोकप्रिय साहित्यकार मनोहर चमोली 'मनु' की पुस्तक 'बाल मन की कहानियाँ' आपके हाथों में है। इस किताब में बच्चों की दुनिया है। उनकी आवाज़ें हैं। कहानियों में अनुमान, कल्पना, मस्ती, आनन्द और रोमांच है। बचपन की सतरंगी यादें हैं। कहानियाँ सीख,सन्देश और उपदेश नहीं देती। हाँ! कहानियों में ऐसी महक ज़रूर है जिनसे दिल-दिमाग़ खुशी से झूमने लगता है। पाठक को यही चाहिए। कहानियों का पहला काम यही होना चाहिए।

The story of Earth is the story of life. It is also a story of loss, one worsened by climate change. But while the climate crisis can be a story of devastation, the work being done to mitigate it, to adapt to it, brings hope. And reminds us, our future is in our hands. The verses in this book tell these stories, in the voices of the orangutan, the Hasdeo Arand forest, the Gangetic dolphin and the Pondicherry shark.

Some leaves are tiny, others are not. Some taste sweet, others bitter. There are so may different kinds of leaves around us. Leaf through the leaves of this book about leaves. This book is written by Harini Nagendra and Seema Mundoli & illustrated by Barkha Lohia .

मेरी दुनिया के तमाम बच्चे

– अदनान कफील दरवेश

मेरी दुनिया के तमाम बच्चे
वो जमा होंगे एक दिन और
खेलेंगे एक साथ मिलकर
वो साफ-सुथरी दीवारों पर
पेंसिल की नोक रगड़ेंगे
वो कुत्तों से बतियायेंगे
और बकरियों से
और हरे टिड्डों से
और चीटियों से भी
वो दौड़ेंगे बेतहाशा
हवा और धूप की मुसलसल निगरानी में
और धरती धीरे-धीरे
और फैलती चली जाएगी
उनके पैरों के पास
देखना!
वो तुम्हारी टैंकों में बालू भर देंगे एक दिन
और तुम्हारी बंदूकों को
मिट्टी में गहरा दबा देंगे
वो सड़कों पर गड्ढे खोदेंगे और पानी भर देंगे
और पानियों में छपा-छप लोटेंगे
वो प्यार करेंगे एक दिन उन सबसे
जिनसे तुमने उन्हें नफरत करना सिखाया है
वो तुम्हारी दीवारों में
छेद कर देंगे एक दिन
और आर-पार देखने की कोशिश करेंगे
वो सहसा चीखेंगे!
और कहेंगे-
"देखो! उस पार भी मौसम
तो हमारे यहां जैसा ही है"
वो हवा और धूप को अपने गालों के गिर्द
महसूस करना चाहेंगे
और तुम उस दिन उन्हें नहीं रोक पाओगे!
एक दिन तुम्हारे महफूज घरों से बच्चे
बाहर निकल आयेंगे
और पेड़ों पर घोंसले बनायेंगे
उन्हें गिलहरियां काफी पसंद हैं
वो उनके साथ ही बड़ा होना चाहेंगे
तुम देखोगे जब वो हर चीज
उलट-पुलट देंगे
उसे और सुंदर बनाने के लिए
एक दिन मेरी दुनिया के तमाम बच्चे
चींटियों, कीटों
नदियों, पहाड़ों, समुद्रों
और तमाम वनस्पतियों के साथ
मिलकर धावा बोलेंगे
और तुम्हारी बनाई हर एक चीज को
खिलौना बना देंगे ।

(कविताकोश से साभार)

चिड़ियों ने बाज़ार लगाया,
एक कुंज को ख़ूब सजाया

तितली लाई सुंदर पत्ते,
मकड़ी लाई कपड़े-लत्ते

बुलबुल लाई फूल रँगीले,
रंग-बिरंगे पीले-नीले...

- अज्ञात
(कविताकोश से साभार)

Towards a just, equitable, humane and sustainable society

आवरण चित्र : विनोद उप्रेती